स्वतंत्रता का अर्थशास्त्र

बातें जो आपके प्रोफेसर आपको नहीं बताएंगे

टॉम जी. पॉमर द्वारा संपादित

द्वितीय संस्करण

सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ फ्रेडरिक बास्तियात

प्रस्तावनाः एफ. ए. हायक

स्वतंत्रता का अर्थशास्त्र

बातें जो आपके प्रोफेसर आपको नहीं बताएंगे

टॉम जी. पॉमर द्वारा संपादित

द्वितीय संस्करण

सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ फ्रेडरिक बास्तियात

प्रस्तावनाः एफ. ए. हायक

स्टूडेंट्स फॉर लिबर्टी द्वारा वर्ष 2009 में प्रथम प्रकाशित
जेमसन बुक्स, इंक।

एटलस नेटवर्क द्वारा वर्ष 2021 में द्वितीय प्रकाशन

2022 में सेंटर फॉर सिविल सोसाइटी द्वारा हिंदी में पुनः प्रकाशित

सर्वाधिकार सुरक्षित.
संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित
फाउंडेशन फॉर इकोनॉमिक एजुकेशन की अनुमति से पुन:प्रकाशित
www.FEE.org

क्लार्क रूपर द्वारा संपादित
हिंदी कॉपी संपादनः अनुष्का दास शर्मा एवं हर्ष सिंह
कॉपी संपादनः हन्नाह मीड, चार्ल्स किंग और दारा एकानगर
सेमॉर केयन द्वारा बास्तियात का अनुवाद
पुस्तक और आवरण पृष्ठ का डिजाइनः कोलीन क्युमिंग्स

आईएसबीएनः 978-1-7377230-5-9
ईबुक आईएसबीएनः 978-1-7377230-6-6
काँग्रेस कंट्रोल पुस्तकालय संख्याः 2021917896

एटलस नेटवर्क
टू लाइब्रेरी सेंटर
4075 विल्सन बुलेवर्ड
सुईट 310
अर्लिंगटन, वीए 22203
www.atlasnetwork.org

विषय सूची

प्रस्तावना 1
स्टूडेंट्स फॉर लिबर्टी

प्राक्कथन 6
एफ. ए. हायक

क्या दिखता है और क्या नहीं दिखता है 13
फ्रेडरिक बास्तियात

एक याचिका 123
फ्रेडरिक बास्तियात

एक नकारात्मक रेलमार्ग 134
फ्रेडरिक बास्तियात

व्यापार संतुलन 137
फ्रेडरिक बास्तियात

बाजार से जुड़ी बीस भ्रांतियां 145
टॉम जी.पॉमर

एटलस नेटवर्क के बारे में 215

स्टूडेंट्स फॉर लिबर्टी के बारे में 216

सेंटर फॉर सिविल सोसाइटी के बारे में 216

स्वतंत्रता का अर्थशास्त्र

बातें जो आपके प्रोफेसर आपको नहीं बताएंगे

टॉम जी. पॉमर द्वारा संपादित

द्वितीय संस्करण

सेलेक्टेड वर्क्स ऑफ फ्रेडरिक बास्तियात

प्रस्तावनाः एफ. ए. हायक

प्रस्तावना

स्टूडेंट्स फॉर लिबर्टी

इस पुस्तक का प्रकाशन एटलस इकोनॉमिक रिसर्च फाउंडेशन और स्टूडेंट्स फॉर लिबर्टी (एसएफएल) के संयुक्त तत्वावधान में किया गया है। एटलस नेटवर्क की ही भांति, एसएफएल की भी यही मान्यता है कि विचार सीमाओं के बंधन से परे होते हैं। हमारे साथी दुनिया भर में स्वतंत्र और न्यायपूर्ण समाज को बढ़ावा देने के लिए काम करते हैं। हम युवा आदर्शवादी हैं जो जानते हैं कि स्वतंत्रता न केवल सुंदर और प्रेरक है, बल्कि व्यवहार में भी यह काम करती है। हम, युवा, स्वतंत्रता, न्याय, समृद्धि और शांति के महान मुद्दों के बारे में खुद को और अपने साथी छात्रों को शिक्षित करने का कार्य कर रहे हैं। हम विचारकों, उद्यमियों, कार्यकर्ताओं और विद्वानों की पीढ़ियों द्वारा निर्मित आधार पर संरचना का निर्माण करते हैं।

यह विविधतापूर्ण आंदोलन है। हमारे सदस्य अलग अलग भाषाएं बोलते हैं, अलग अलग धर्मों को मानते हैं, और अलग अलग देशों में रहते हैं, लेकिन हमें कुछ उभयनिष्ठ सिद्धांत एकजुट रखते हैं जैसे कि सभी को अपने भरण पोषण की व्यवस्था करने की आर्थिक आजादी हो, सभी को जीवन जीने का तरीका चुनने की सामाजिक स्वतंत्रता हो, और सभी के लिए बौद्धिक और शैक्षणिक स्वतंत्रता हो। हमारा मानना है कि स्वतंत्रता टुकड़ों में नहीं मिलती है, बल्कि यह एक

एकल और अविभाज्य अवधारणा है जिसकी हर समय रक्षा की जानी चाहिए।

द इकोनॉमिक्स ऑफ फ्रीडम (स्वतंत्रता का अर्थशास्त्र) क्यों? क्योंकि वर्तमान में हमारी स्वतंत्रता के निरंतर क्षरण को सही ठहराने के लिए भ्रामक आर्थिक विचारों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके अनेकों उदाहरण हैं जैसे कि "प्रोत्साहन पैकेज" जो कि कर्ज के ऊपर और कर्ज का ढेर लगाते हैं; "नौकरियों के सृजन" के नाम पर सैन्य खर्च में वृद्धि; शक्तिशाली उद्योगों को लाभ पहुंचाने के लिए धन का मूर्खतापूर्ण विनाश ("पुरानी खटारा गाड़ियों को बदल कर नया दिलाने के लिए धन प्रदान करना"); व्यापार अवरोध (कोटा और टैरिफ) जो बहुतों की कीमत पर कुछ को लाभान्वित करते हैं और अंतर्राष्ट्रीय शांति को कमजोर करते हैं; छद्म "विनियमन" जो चीजों को "नियमित" नहीं बनाते हैं, बल्कि अर्थव्यवस्थाओं को बाधित और अव्यवस्थित करते हैं; और जब्ती, राष्ट्रीयकरण, और लूट। राजनैतिक वर्गों के बीच ये सभी लोकप्रिय होते हैं।

हमारी पीढ़ी इस तरह की भ्रांतियों का सामना करने वाली पहली पीढ़ी नहीं है। कई पीढ़ियों पहले फ्रेडरिक बास्तियात ने इन्हीं आर्थिक भ्रांतियों को नष्ट किया था। बास्तियात उन्नीसवीं सदी के एक फ्रांसीसी राजनीतिक अर्थशास्त्री थे, जिन्होंने अपने छोटे जीवन काल के अंतिम वर्षों को यह साबित करने के लिए समर्पित कर दिया कि अपनी प्रकृति से सरकार के पास न तो हमारी स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने का नैतिक अधिकार है और न ही अपने हस्तक्षेप के माध्यम से समृद्धि पैदा करने की व्यावहारिक क्षमता है।

द इकोनॉमिक्स ऑफ फ्रीडम (स्वतंत्रता का अर्थशास्त्र) में बास्तियात के कुछ सबसे महत्वपूर्ण निबंधों को प्रस्तुत किया गया है। इन निबंधों के माध्यम से एक के बाद एक भ्रांतियों को व्यवस्थित रूप से खारिज करने वाले एक तेज दिमाग और हिंसा व अत्याचार से झिझकने वाले नैतिक विवेक का खुलासा होता है। "क्या दिखता है और क्या नहीं दिखता है" को पढ़ने और समझने के लिए दुनिया को एक नई रोशनी में विचार करना होगा। यह अर्थशास्त्र में लिखे गए अब तक के सबसे महत्वपूर्ण निबंधों में से एक है। बास्तियात के लेखन के अलावा, इस पुस्तक में दो अन्य निबंध शामिल हैं जो बास्तियात के विचारों के महत्व को दर्शाते हैं और फिर उन्हें अद्यतन करते हुए और अधिक समकालीन मुद्दों पर लागू करते हैं।

बास्तियात के निबंधों की प्रस्तावना 1974 के आर्थिक विज्ञान के नोबेल पुरस्कार विजेता एफ.ए. हायक द्वारा लिखी गई थी। समाजवाद क्यों विफल होता है और बाजार बिखरे हुए ज्ञान का उपयोग कैसे करते हैं इसकी व्याख्या कर लोकप्रियता हासिल करने वाले हायक केवल आर्थिक विचारों के ही अग्रदूत नहीं थे (उनके निबंधों को “द यूज़ ऑफ नॉलेज इन सोसायटी” पर देखा जा सकता है जो www.econlib.org पर ऑनलाइन उपलब्ध हैं। उनके नोबेल व्याख्यान भी NobelPrize.org पर उपलब्ध हैं) बल्कि स्वतंत्रता के भी प्रबल समर्थक थे। 1944 में इंग्लैंड में प्रकाशित ***द रोड टू सर्फ़डम,*** राजनीतिक विचारों की वैसी ही एक उत्कृष्ट कृति बन गई है, जैसी कि ***द कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ़ लिबर्टी एंड लॉ, लेजिस्लेशन एंड लिबर्टी*** है।

डॉ. टॉम जी. पॉमर द्वारा लिखित समापन निबंध, "बाजार से जुड़ी बीस भ्रांतियां" को पहली बार 2007 में केन्या के नैरोबी में मोंट पेलेरिन सोसाइटी की एक बैठक के दौरान प्रस्तुत किया गया था। इस अंतर्राष्ट्रीय सोसायटी की स्थापना हायक के द्वारा 1947 में की गई थी। डॉ. पॉमर केटो इंस्टीट्यूट के सीनियर फेलो और थिंक टैंकों के एक विश्वव्यापी नेटवर्क, एटलस इकोनॉमिक रिसर्च फाउंडेशन के वाइज़ प्रेसिडेंट हैं। पॉमर उन भ्रांतियों को निरूपित करते हैं, उन पर विचार करते हैं और तर्कों के आधार पर उनका खंडन करते हैं जो बुद्धिमानी के परे जाते हैं, इसमें बाजारों की प्रवृतियों की अशुद्ध व्याख्या करने वाले कुछ "अति उत्साही बचाव" भी शामिल हैं।

यह संभवतः आश्चर्यजनक नहीं है कि शैक्षिक समुदाय ऐसे लोगों से भरा हुआ है जिन्हें लगता है कि वे इतने चतुर हैं कि दूसरों के जीवन से संबंधित फैसले ले सकते हैं। जबकि वो हैं नहीं। इसलिए इस पुस्तक का उपशीर्षक है "बातें जो आपके प्रोफेसर आपको नहीं बताएंगे।" यद्यपि आपके शिक्षक स्वतंत्रता को महत्व देते हैं, फिर भी वे अक्सर सरकारी हस्तक्षेप के व्यापक दुष्परिणामों की अनदेखी कर देते हैं, विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में। चूंकि वे अपनी बौद्धिकता का अधिमूल्यांकन किए हुए होते हैं इसलिए वे दूसरों की स्वैच्छिक बातचीत में किए जाने वाले हस्तक्षेप के "अनचाहे परिणामों" की उपेक्षा करते हैं। न तो वे यह समझते हैं कि वे जिन सिद्धांतों का प्रतिपादन करते हैं, वे अक्सर उन विशेष हितों द्वारा नियोजित होते हैं, जो विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों की तुलना में सत्ता में हेरफेर और दुरुपयोग करने में बेहतर होते हैं। यही कारण है कि हमने स्टूडेंट्स

फॉर लिबर्टी में इस मुद्दे को उठाया है, क्योंकि अगर हम स्वतंत्रता के सभी रूपों की वकालत नहीं करेंगे, तो कौन करेगा?

हमारा मानना है कि एक स्वतंत्र समाज सभी की आजादी के सम्मान की मांग करता है जिससे कि वे अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकें और विचारों, वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार स्वैच्छिक तरीके से सहमत शर्तों के साथ कर सकें। जब सभी को समान स्वतंत्रता का आनंद प्राप्त होता है और हमारी अंतःक्रिया स्वैच्छिक होती है, तो उसका परिणाम अराजकता की बजाए व्यवस्था; अभाव की बजाए प्रचूरता; संघर्ष की बजाए सहयोग के रूप में प्राप्त होता है।

हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक किसी जिज्ञासु और खुले दिमाग वाले छात्र के हाथों में पहुंची है। यदि आपको इस पुस्तक के विचार रुचिकर लगे तो आप www.studentsforliberty.org पर जाकर स्वतंत्रता के लिए छात्रों की गतिविधियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और एक स्वतंत्र शैक्षिक समुदाय और एक मुक्त समाज की लड़ाई में शामिल हो सकते हैं।

प्राक्कथन

एफ. ए. हायक

ऐसे लोग जो आर्थिक सिद्धांतकार के रूप में फ्रैडरिक बास्तियात की प्रतिष्ठा पर सवाल उठा सकते हैं, वे भी स्वीकार करेंगे कि बास्तियात प्रतिभा के प्रचारक थे। जोसेफ शुम्पीटर उन्हें "अब तक का सबसे शानदार आर्थिक पत्रकार" कहते हैं। वर्तमान अंक जिसमें कि आम जनता के लिए उनके द्वारा लिखे गए कुछ सबसे सफल लेख शामिल हैं, से परिचित कराने के उद्देश्य से हम इसे यहीं पर छोड़ सकते हैं। एक बार को शुम्पीटर के इस कठोर मूल्यांकन को कोई स्वीकार कर भी ले कि 'बास्तियात एक सिद्धांतवादी नहीं थे' फिर भी इससे उनके कद और महानता में कोई खास कमी नहीं आती है। यह सच है कि एक लेखक के रूप में अपने बेहद छोटे करियर के अंतिम पड़ाव पर जब उन्होंने अपनी सामान्य अवधारणाओं को सैद्धांतिक औचित्य प्रदान करने का प्रयास किया, तो वे पेशेवरों को संतुष्ट करने में कामयाब नहीं रहे। यह वास्तव में एक चमत्कार जैसा ही होगा कि कोई व्यक्ति, जिसने सार्वजनिक मुद्दों पर केवल पांच वर्षों तक ही नियमित लेखन किया हो, और एक नश्वर बीमारी जो कि उसे तेजी से अपना ग्रास बना रही हो,

कुछ महीनों के प्रयास में ही स्थापित सिद्धांतों के इतर अपने विचारों की रक्षा कर ले और इसमें पूरी तरह से सफल भी हो जाए। इसके बावजूद यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि क्या यह केवल उनचास वर्ष की अल्प आयु में हुई मौत ही नहीं थी जिसने उन्हें रोका। उनके ऐसे विवादास्पद लेख जो उनके द्वारा छोड़े गए कुछ सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेखों में शुमार हैं, निश्चित रूप से यह साबित करते हैं कि उनके पास महत्वपूर्ण मुद्दों को समझने की अंतर्दृष्टि और उनके मूल में जाने की प्रतिभा थी जिसने उन्हें विज्ञान को अपना योगदान प्रदान करने की पर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराई थी।

इस बात की व्याख्या लोकप्रिय शीर्षक से युक्त प्रस्तुत अंक के पहले ही निबंध से अधिक बेहतर ढंग से कोई और नहीं कर सकता। "राजनैतिक अर्थव्यवस्था में क्या दिखता है और क्या नहीं दिखता है!" एक तर्कसंगत आर्थिक नीति और इसमे आर्थिक आजादी के स्पष्ट दलीलों को मैं अपनी तरफ से शामिल करना चाहूंगा, को उनके अतिरिक्त किसी और के द्वारा एक वाक्यांश में इससे अधिक स्पष्ट रूप से व्याख्या नहीं की गई है। महज चंद शब्दों में सिमटे इस विचार के कारण ही मैंने अपने आरंभिक वाक्य में "अपूर्व बुद्धिमता वाला व्यक्ति" शब्द का प्रयोग किया था। वास्तव में यह एक ऐसा पाठ है जिसके चारों ओर उदारवादी आर्थिक नीति की एक पूरी प्रणाली की व्याख्या

की जा सकती है। यद्यपि यह शीर्षक इस अंक के केवल पहले निबंध के लिए संस्थापित है, फिर भी यह यहां शामिल सभी निबंधों के लिए अग्र विचार प्रदान करने का काम करता है। अपने समय की वर्तमान भ्रांतियों का खंडन करते हुए बास्तियात बार बार इसके अर्थ की व्याख्या करते हैं। मैं बाद में यह संकेत दूंगा कि, यद्यपि वह जिन विचारों से जूझ रहे थे, आजकल आमतौर पर उन्हें ही अधिक परिष्कृत स्वरूप में ही उन्नत किया जाता है और उनका मूल स्वरूप बास्तियात के काल से बहुत अधिक परिवर्तित नहीं हुआ है। लेकिन पहले मैं उनके मूल विचारों के सामान्य महत्वों के बारे में कुछ शब्द कहना चाहता हूं।

यह केवल इतना है कि यदि हम आर्थिक नीति के उपायों का आंकलन केवल उनके तत्काल और वस्तुतः पहले से दिखाई देने वाले प्रभावों के आधार पर करते हैं तो हम न केवल एक व्यवहारिक क्रम को हासिल करने में असफल रहेंगे बल्कि आजादी को निश्चित तौर पर समाप्त करने की ओर भी अग्रसर होंगे और इस प्रकार अपने उपायों के माध्यम से हम जितना उत्पादन करेंगे उससे अधिक अच्छा होने से रोकेंगे। स्वतंत्रता इसलिए भी महत्वपूर्ण है ताकि सभी अलग अलग व्यक्तियों के द्वारा उन विशेष परिस्थितियों का पूरा उपयोग किया जा सके जिनके बारे में सिर्फ वे ही जानते हैं। इस प्रकार, यदि अपने

साथियों को मनवांछित तरीके से सेवा प्रदान करने की उनकी स्वतंत्रता को हम सीमित करते हैं तो हमें यह कभी पता नहीं लगेगा कि इससे किस प्रकार की लाभदायक गतिविधियों पर रोक लगेगा। इन सीमितताओं में समस्त प्रकार की हस्तक्षेप वाली गतिविधियां शामिल होती है। निसंदेह ऐसी गतिविधियों का उद्देश्य हमेशा निश्चित लक्ष्यों को हासिल करना होता है। प्रत्याशित रूप से दिखाई देने वाली सरकार की इन गतिविधियों के प्रत्यक्ष परिणामों के विपरीत हम प्रत्येक व्यक्तिगत मामले में केवल इस संभावना को संतुलित करने में सक्षम होंगे कि कुछ व्यक्तियों द्वारा कुछ अज्ञात लेकिन लाभकारी कार्यों को रोका जाएगा। परिणाम स्वरूप, यदि ऐसे निर्णय अलग-अलग मामलों में किए जाते हैं और एक सामान्य सिद्धांत के रूप में स्वतंत्रता के प्रति लगाव द्वारा शासित नहीं होते हैं, तो लगभग हर मामले में स्वतंत्रता का नुकसान होना तय है। बास्तियात की यह राय बिल्कुल सही है कि चयन की आजादी के साथ नैतिक सिद्धांत के जैसा व्यवहार करना चाहिए, और समीचीनता के विचारों के नाम पर कभी भी इसे त्यागना नहीं चाहिए। क्योंकि संभवतः स्वतंत्रता का ऐसा कोई पहलू नहीं है जिसे समाप्त नहीं किया जाएगा यदि इसका सम्मान केवल तभी किया जाए जब इसके उन्मूलन से होने वाली ठोस क्षति को इंगित किया जा सके।

बस्तियात ने अपने तर्कों को कुछ भ्रांतियों की बार-बार होने वाली पुनरावृतियों के खिलाफ निर्देशित किया क्योंकि वे उस दौर में लागू होते थे। कुछ लोग उन्हें आज भी उतने ही भोलेपन से नियोजित करते हैं जितना उस समय करना संभव था। लेकिन पाठक खुद को इस धोखे में न रखें कि वे भ्रांतियां अब समकालीन आर्थिक चर्चा में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाती हैं। वास्तविकता यह है कि आज के समय में उन्हें अधिक परिष्कृत रूप में व्यक्त किया जाता है और इसलिए उनका पता लगाना अधिक कठिन होता है। पाठक जिन्होंने इन प्रतिष्ठित भ्रांतियों को उनकी सरल अभिव्यक्तियों में पहचानना सीख लिया, वे वैज्ञानिक रूप से अधिक तार्किक प्रतीत होने वाले उन्हीं निष्कर्षों के प्राप्त होने पर भी भ्रांतियों से बच सकेंगे। हाल के अधिकांश अर्थशास्त्रों की यह खासियत है कि वे हमेशा नए तर्कों से उन्हीं पूर्वाग्रहों को सही करने की कोशिश करते हैं जो अत्यधिक आकर्षक हैं क्योंकि उन्हें मानने वाले सिद्धांत बहुत सुखद या सुविधाजनक हैं जैसे खर्च करना अच्छी बात है, और बचत खराब है; अपशिष्ट लाभ पहुंचाती है और मितव्ययीता जनता को नुकसान पहुँचाती है; लोगों की बजाए सरकार के हाथ में पैसा अधिक हितकारी रहेगा; यह देखना सरकार का कर्तव्य है कि सभी को वह मिल सके जिसके वे हकदार हैं; आदि आदि।

हमारे समय में इनमें से किसी भी विचार ने अपनी थोड़ी भी शक्ति नहीं खोई है। फर्क सिर्फ इतना है कि उनका मुकाबला करने में बस्तियात पूरी तरह से पेशेवर अर्थशास्त्रियों के पक्ष में और स्वहित आधारित पार्टियों द्वारा शोषित लोकप्रिय मान्यताओं के खिलाफ थे। इसी तरह के प्रस्तावों को आज भी अर्थशास्त्रियों के एक प्रभावशाली स्कूल द्वारा काफी हद तक अबोध आम आदमी के बीच अत्यंत प्रभावशाली तरीके से प्रचारित किया जाता है। इसमें संदेह है कि क्या उन भ्रांतियों में से एक वह है जिसके बारे में उम्मीद है कि बास्तियात ने एक बार उसे खारिज कर दिया था और उसके पुनरुत्थान का अनुभव नहीं किया गया है। मैं केवल एक उदाहरण दूंगा। जिक्र करना होगा बस्तियात की सबसे प्रसिद्ध आर्थिक किस्सागोई "सूर्य की प्रतिस्पर्धा के खिलाफ मोमबत्ती बनाने वालों की याचिका" की, जिसमें यह मांग की जाती है कि मोमबत्ती बनाने वालों की समृद्धि और उसके कारण होने वाले सभी के फायदों को देखते हुए घरों में खिड़कियां होने पर रोक लगा देनी चाहिए। अर्थशास्त्र के इतिहास वाले विषय पर आधारित एक जाने माने फ्रांसीसी पाठ्यपुस्तक ने अपने नवीनतम संस्करण में निम्नलिखित फुटनोट प्रदान किया हैः 'यह ध्यान देने योग्य है कि कीन्स के अनुसार - बेरोजगारी की धारणा और गुणक के सिद्धांत के आधार पर - मोमबत्ती बनाने वालों का यह तर्क पूर्णतया और अक्षरशः मान्य है।'

सुधि पाठकों का ध्यान इस तरफ भी जाएगा कि एक तरफ तो बास्तियात उन सभी आर्थिक दांवपेंचों के संबंध में तमाम प्रकार के अचूक उपायों का जिक्र करते हैं जिनसे हम सभी परिचित हैं लेकिन हमारे समय के मुख्य खतरों के बारे में उन्होंने कुछ भी नहीं लिखा है। यद्यपि साख का इस्तेमाल करने से संबंधित तमाम प्रकार के अजीबो - गरीब प्रस्तावों से बास्तियात को जूझना पड़ता था जो कि उनके समय में प्रचलन में थें, फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि सरकारी घाटे के कारण सीधे सीधे महंगाई में वृद्धि उनके काल में बड़ा खतरा नहीं थी। उनके लिए खर्च में वृद्धि का मतलब तत्काल और आवश्यक रूप से कराधान में वृद्धि का होना था। इसका कारण यह है कि, चूंकि ऐसे लोगों के बीच जिनके मस्तिष्क में भारी महंगाई से गुजरने की स्मृतियां शेष थी, उनके लिए मुद्रा के मूल्य में निरंतर कमी ऐसा मुद्दा ही नहीं था जिसे लोग बास्तियात के काल में उठाते। इसलिए, यदि किसी पाठक की प्रवृति उन साधारण भ्रांतियों की तुलना में श्रेष्ठतर महसूस करने की है जिसका बास्तियात अक्सर खंडन करना आवश्यक समझते थे, तो उन्हें यह याद रखना चाहिए कि कुछ अन्य मामलों में सौ साल से भी पहले के उनके हमवतन हमारी पीढ़ी की तुलना में काफी समझदार थे। - एफ. ए. हायक

क्या दिखता है और क्या नहीं दिखता है

- फ्रेडरिक बास्तियात

आर्थिक क्षेत्र में किसी गतिविधि, किसी आदत, किसी व्यवस्था अथवा किसी कानून का केवल एक प्रभाव नहीं पड़ता है, बल्कि उनसे प्रभावों की एक श्रृंखला उत्पन्न होती है। इन प्रभावों में, सबसे पहला प्रभाव तत्काल प्रभाव है जो अपने कारण के साथ-साथ प्रकट होता है। ***यह दिखाई पड़ता है।*** अन्य प्रभाव बाद में ही सामने आते हैं; ***वे दिखाई नहीं पड़ते हैं।*** यदि उनका पूर्वानुमान लगा लिया जाए तो यह सौभाग्य की बात होगी।

एक अकुशल अर्थशास्त्री और कुशल अर्थशास्त्री के बीच मात्र एक फर्क होता है और वह फर्क यह है कि अकुशल अर्थशास्त्री स्वयं को केवल दिखाई देने वाले प्रभावों तक ही सीमित रखता है। जबकि एक कुशल अर्थशास्त्री दिखाई देने वाले प्रभावों के साथ साथ दिखाई नहीं देने वाले प्रभावों के पूर्वानुमानों को भी संज्ञान में रखता है।

वैसे यह फर्क है जबरदस्त, क्योंकि तकरीबन हमेशा ही ऐसा होता है कि जब तात्कालिक परिणाम अनुकूल होते हैं, तो बाद के परिणाम त्रासदी वाले होते हैं, और जब तात्कालिक परिणाम त्रासदी से युक्त होते हैं तो बाद वाले परिणाम अनुकूल होते हैं। एक अकुशल अर्थशास्त्री तात्कालिक लाभ हासिल करने की ओर देखता है, बाद में भले ही भयानक नुकसान का जोखिम हो, जबकि एक कुशल अर्थशास्त्री दीर्घकालीन लाभ हासिल करने का प्रयास करता है, भले ही उसमें तात्कालिक छोटे नुकसान का जोखिम हो।

यही बात, निश्चित रूप से, स्वास्थ्य और नैतिकता के मामलों पर भी लागू होती है। अक्सर, आदत का पहला फल जितना मीठा होता है, उसके बाद के फल उतने ही कड़वे होते हैं: जैसे कि व्याभिचारिता, आलस्य, फिज़ूलखर्ची आदि। जब कोई व्यक्ति सिर्फ उस प्रभाव से प्रभावित हो जाता है जो केवल ***दिखाई पड़ता है*** और उस प्रभाव से अनजान रहता है जो ***दिखाई नहीं पड़ता है***, तो वह न केवल नैसर्गिक झुकाव के कारण, बल्कि जानबूझकर किए जाने वाले निंदनीय आदतों में लिप्त हो जाता है।

इससे मनुष्य के उस क्रमिक विकास की व्याख्या होती है जो आवश्यक रूप से कष्टदायी है। अज्ञानता उसे उसके पालने में ही घेर लेती हैं और इसीलिए उसकी गतिविधियां उसके द्वारा

शैशवावस्था में किए गए अनुभवों और उनके पहले परिणामों के अनुसार ही नियंत्रित हो जाती हैं। जबतक वह दूसरों के अनुभवों से सीख लेना सीखता है तबतक लंबा अरसा गुजर चुका होता है। उसे ये सीख अनुभव और दूरदर्शिता नामक दो अलग अलग शिक्षकों के द्वारा प्राप्त होता है। अनुभव के सीखाने का तरीका प्रभावी तो होता है लेकिन निर्मम भी होता है। यह हमें किसी गतिविधि के सभी प्रभावों को महसूस कराकर अवगत कराता है, फलतः उसे सीखने में हम कभी असफल नहीं होते हैं। जैसे एक बार जलने का खुद का अनुभव हो जाने के बाद हम ये कभी नहीं भूल सकते कि आग जलाती है। जहां तक सम्भव हो मैं ऐसे अशिष्ट शिक्षक को दूसरे शिक्षक के साथ बदलने को प्राथमिकता दूंगा जो कि अधिक विनम्र है। और वह शिक्षक दूरदर्शिता है। इस कारण से मैं उन तमाम आर्थिक घटनाओं की जांच करूंगा जिनके ***दिखाई पड़ने वाले*** परिणाम और ***दिखाई न पड़ने वाले*** परिणाम परस्पर विरोधाभासी होते हैं।

1. टूटी खिड़की

क्या आप कभी जेम्स गुडफेलो जैसे कड़क व्यक्ति को उस समय गुस्सा करते हुए देखा है, जब उसके बिगड़ैल बेटे से शीशे की एक खिड़की टूट गई थी। यदि आप उस तमाशे के दौरान

उपस्थित रहे हों तो आपने यह भी अवश्य देखा होगा कि कुछ तमाशबीन, भले ही उनकी संख्या तीस के आस पास हो, सभी उस बदकिस्मत मालिक को यही कहते हुए सांत्वना देते दिखाई पड़ते हैं कि "यह एक ऐसा नुकसान है जो दूसरे का फायदा कराता है। ऐसी दुर्घटनाओं से ही उद्योग धंधे चलते रहते हैं। सभी को रोजी रोटी कमानी होती है। यदि कोई कभी भी किसी खिड़की को न तोड़े तो खिड़की का शीशा जड़ने वाले उन कारीगरों का क्या होगा?"

एक अत्यंत साधारण से मसले में इस प्रकार से दुख जताने का जो सूत्र है उसमें एक संपूर्ण सिद्धांत समाहित है और हमारे लिए यही अच्छा होगा कि इसे रंगे हाथों बेनकाब किया जाए। क्योंकि बदकिस्मती से यह ठीक हमारे अधिकांश आर्थिक व्यवहारों के जैसा ही है।

मान लीजिए कि टूटे शीशे की मरम्मत के कार्य में छह फ्रैंक्स की लागत आएगी। यदि आपको लगता है कि इस घटना से उस उद्योग को छह फ्रैंक की राशि के बराबर का प्रोत्साहन प्राप्त होता है तो मैं मान लेता हूं। मैं इसका किसी प्रकार से विरोध नहीं करूंगा क्योंकि आपका कारण सही है। खिड़की की मरम्मत करने वाला आएगा, अपना काम करेगा, छह फ्रैंक प्राप्त करेगा, स्वयं को मुबारकबाद देगा और मन ही मन उस

लापरवाह बच्चे को आशीर्वाद देगा। ये वही प्रभाव है जो ***दिखाई पड़ता है***।

लेकिन अगर, इसके माध्यम से आप यह निष्कर्ष निकालते हैं और जैसा कि अक्सर होता भी है, कि खिड़कियों को तोड़ना अच्छा है, यह धन को प्रसारित करने में मदद करता है, इससे आम तौर पर उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है, तो मैं चिल्लाने के लिए बाध्य हूं: ऐसा बिल्कुल नही होता है! आपका सिद्धांत वहीं तक सीमित है जो ***दिखाई पड़ता है***। यह उसका हिसाब नहीं रखता है जो ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

यह ***दिखाई नहीं पड़ता है*** कि व्यक्ति के पास दूसरे काम पर खर्च करने के लिए पैसे नहीं बचे क्योंकि उसे अपने छह फ्रैंक खिड़की की मरम्मत करानें में खर्च करने पड़े। उदाहरण के लिए, यह ***दिखाई नहीं पड़ता है*** कि यदि उसे खिड़की के शीशे को बदलने की जरूरत नहीं पड़ती तो शायद वह अपने फटे जूते को बदलता या अपनी लाइब्रेरी के लिए एक नई किताब खरीदता। संक्षेप में कहें तो, वह उन छह फ्रैंक को उस अन्य काम को करने में लगाता जो वह अब नहीं कर पाएगा।

आइए अब हम जरा उस उद्योग के संदर्भ में विचार करें। खिड़की का शीशा टूट जाने के बाद शीशा उद्योग को छह फ्रैंक का प्रोत्साहन प्राप्त होता है और यही ***दिखाई पड़ता है***।

यदि खिड़की का शीशा टूटा नहीं होता, तो जूता उद्योग (या कुछ अन्य) को छह फ्रैंक का प्रोत्साहन मिलता; यह ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

अगर हम ***दिखाई न पड़ने*** वाले इसके नकारात्मक पहलू और साथ ही साथ ***दिखाई पड़ने*** वाले सकारात्मक पहलू पर विचार करें तो हमें पता चलेगा कि कुल मिलाकर न तो शीशे के उद्योग को कोई लाभ होता है और न ही ***राष्ट्रीय रोजगार*** में किसी प्रकार की वृद्धि होती है, चाहे खिड़की का शीशा टूटे या न टूटे।

आईए अब हम जेम्स गुडफेलो की स्थिति पर विचार करते हैं।

पहली परिकल्पना, टूटी खिड़की की मरम्मत के लिए छह फ्रैंक खर्च करने के बाद उसे पहले की भांति एक खिड़की का आनंद प्राप्त होता, न कम न ज्यादा।

दूसरी परिकल्पना, यदि खिड़की टूटने की घटना नहीं हुई होती तो उसने छह फ्रैंक नए जूते खरीदने में खर्च किए होते और उसे नए जूते और खिड़की दोनों का आनंद प्राप्त होता।

अब, यदि जेम्स गुडफेलो समाज का हिस्सा है, तो यह निष्कर्ष निकालता है कि समाज, अपने श्रम और उसके आनंद को देखते हुए, टूटी हुई खिड़की का मूल्य खो चुका है।

इसका सामान्यीकरण करने पर यह अनपेक्षित निष्कर्ष निकलता है कि 'वस्तुओं के अनावश्यक रूप से नष्ट होने पर समाज उसका मूल्य खो देता है।' और यह कहावत तो संरक्षणवाद के समर्थकों के बीच खलबली मचा देगी कि 'तोड़ने, फोड़ने, नष्ट करने आदि से राष्ट्र के रोजगार में वृद्धि नहीं होती है।' और संक्षेप में कहें तो 'विनाश लाभदायक नहीं होता है।'

इस विषय पर प्रमुख उद्यमी या माननीय एम. डे सेंट - चमन्स के शिष्य जिन्होंने इतनी सटीकता के साथ गणना की है कि पेरिस के जलने से उद्योगों को क्या लाभ होगा, क्योंकि घरों को फिर से बनाना होगा?

मुझे उनके द्वारा की गई शानदार गणनाओं को अस्त व्यस्त करने पर खेद है, खासकर तब से, जब से उनकी भावना हमारे कानून में समाहित हो गई है। लेकिन मैं उनसे गणना को फिर से शुरू करने के लिए विनती करता हूं, जिसमें जो ***दिखाई पड़ता है*** के साथ साथ जो ***दिखाई नहीं पड़ता है*** उसे भी साथ के ही बही में दर्ज किया जाए।

पाठक भी स्वयं इस बात का अवलोकन कर सकते हैं कि मेरे द्वारा उपर जो एक छोटा सा ड्रामा प्रस्तुत किया गया है उसमें केवल दो नहीं बल्कि तीन पक्ष हैं। पहला पक्ष जेम्स गुडफेलो

वाला है जो खिड़की टूटने से हुई बर्बादी के कारण दो वस्तुओं की बजाए केवल एक का आनंद ले पा रहा है। यह पक्ष उपभोक्ताओं का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरा पक्ष ग्लेज़ियर यानी खिड़की के शीशे की मरम्मत करने वाले का है। यह उत्पादकों का पक्ष प्रस्तुत करता है जिसके उद्योग को दुर्घटना के कारण प्रोत्साहन प्राप्त होता है। तीसरा पक्ष उस मोची (या किसी अन्य निर्माता) का है जिसका उद्योग उसी घटना के कारण समानान्तर रूप से हतोत्साहित होता है। यह जो तीसरा पक्ष है उसकी हमेशा अनदेखी होती है जबकि यही वो है जो समस्या का सबसे महत्वपूर्ण अवयव है जो ***दिखाई नहीं पड़ता है***। यही वो है जो हमें समझाता है कि विनाश में लाभ देखना कितना बेतुका है। यही वो है जो हमें जल्दी ही यह सिखाएगा कि व्यापार प्रतिबंध में लाभ देखना भी उतना ही बेतुका है, क्योंकि व्यापार प्रतिबंध भी आंशिक विनाश से न तो कम है और न ही ज्यादा। इस प्रकार, यदि आप प्रतिबंधात्मक उपायों के पक्ष में दिए गए सभी तर्कों की तह तक जाते हैं, तो आप उसे भी सामान्य रूढ़िवादी उक्ति की ही व्याख्या पाएंगे: "***यदि कोई कभी खिड़कियां नहीं तोड़ेगा तो, खिड़की की मरम्मत करने वाले उस कारिगर का क्या होगा?***"

2. विसैन्यीकरण

राष्ट्र भी एक व्यक्ति की ही तरह है। व्यक्ति अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए वस्तु की कीमत और उसकी उपयोगिता की तुलना करता है। एक राष्ट्र के लिए उसकी सुरक्षा सबसे बड़ा वरदान है। यदि इस वरदान को हासिल करना है तो लाखों लोगों का सैन्यीकरण करना ही होगा और उस पर सैंकड़ों करोड़ फ्रैंक खर्च करने ही होंगे। इस पर मुझे कुछ नहीं कहना है। यह एक प्रकार की खुशी है जिसे त्याग की कीमत पर हासिल किया जाता है।

इस मुद्दे पर मुझे जो कहना है, इसमें किसी प्रकार की गलतफहमी नहीं होनी चाहिए।

एक विधायक एक लाख सैनिकों को सेना से मुक्त करने का प्रस्ताव पेश करता है जिससे करदाताओं के दस करोड़ फ्रैंक के कर की बचत होगी।

मान लीजिए कि इस प्रस्ताव का जवाब देते समय हम अपने आप को यदि यहीं तक सीमित कर लें कि 'ये एक लाख सैनिक और ये दस करोड़ फ्रैंक हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक है। यह एक त्याग है लेकिन यदि यह त्याग नहीं किया जाता है तो फ्रांस आंतरिक उपद्रवी दलों या बाहरी घुसपैठियों के द्वारा टुकड़ों में तोड़ दिया जाएगा।' दिया गया तर्क सही भी हो

सकता है और गलत भी हो सकता है, मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन सैद्धांतिक तौर पर इसमें कोई आर्थिक मतांतर भी नहीं है। मतांतर तब शुरू होता है जब त्याग को एक लाभ के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि यह किसी का लाभार्जन करता है।

अब, यदि मैं गलत नहीं हूं तो जैसे ही इस प्रस्ताव का लेखक मंच से उतरेगा, एक वक्ता दौड़कर जाएगा और कहेगा कि 'एक लाख सैनिकों को मुक्त कर दो! तुम्हारे दिमाग में चल क्या रहा है? सोचो कि उनका क्या होगा? वे क्या करेंगे? उनकी आजीविका कैसे चलेगी? क्या तुम्हें पता भी है कि हर तरफ बेरोजगारी ही बेरोजगारी है? क्या तुम जानते हो कि सभी व्यवसायों में आवश्यकता से अधिक लोग भरे पड़े हैं? क्या तुम उन्हें बाजार में फेंक देना चाहते हो ताकि वहां प्रतिस्पर्धा बढ़ जाए और मजदूरी की दर में कमी हो जाए? ऐसे मौके पर जब कि लोगों के लिए आजीविका कमाना भी मुश्किल हो रहा हो, यह सौभाग्य की बात नहीं है क्या कि सरकार एक लाख लोगों को रोटी उपलब्ध करा रही है? यह भी सोचो कि सेना शराब, कपड़े और शस्त्रों का उपभोग करती है जिससे कि कारखानों को व्यापार मिलता है और शहरों की सुरक्षा होती है। यह बेशुमार आपूर्तिकर्ताओं के लिए किसी ईश्वरीय वरदान से कम

नहीं है। इस विशाल औद्योगिक गतिविधि को समाप्त करने के विचार से क्या तुम्हें घबराहट नहीं होती है?'

हम देखते हैं कि यह भाषण एक लाख सैनिकों के भरण पोषण को जारी रखने के समर्थन में है, लेकिन इस कारण से नहीं कि राष्ट्र को सैनिकों की सेवाओं की आवश्यकता है, बल्कि इस कारण से कि इसके आर्थिक निहितार्थ हैं। यही कारण है कि मैं ऐसे विचारों का खंडन करता हूं।

एक लाख सैनिक, जिनके लिए करदाता दस करोड़ फ्रैंक का खर्च उठाते हैं, स्वयं पलते हैं और अपने आपूर्तिकर्ताओं को भी दस करोड़ फ्रैंक की कीमत के बराबर का अच्छा जीवन प्रदान करते हैं। यही ***दिखाई पड़ता है***।

लेकिन दस करोड़ फ्रैंक, जो कि करदाताओं की जेब से आते हैं, उन्हीं करदाताओं और उनके आपूर्तिकर्ताओं को दस करोड़ फ्रैंक की कीमत के बराबर की आजीविका प्राप्त करने से रोकते हैं। यह ***दिखाई नहीं पड़ता है***। गणना कीजिए, आंकड़े निकालिए और मुझे बताइए कि क्या इससे जनता को कोई फायदा हुआ।

मैं बताता हूं कि नुकसान कहां हुआ। अपनी व्याख्या को सरल बनाने के लिए एक लाख सैनिक और दस करोड़ फ्रैंक के स्थान पर मैं एक व्यक्ति और एक हजार फ्रैंक का प्रयोग करूंगा।

मान लीजिए हम ए नाम के किसी गांव में रहते हैं। कुछ नियोक्ता गांव में भ्रमण करते हैं और एक व्यक्ति का चयन करते हैं। फिर कर संग्राहक उस गांव में भ्रमण करते हैं और एक हजार फ्रैंक का संग्रहण करते हैं। इसके पश्चात उस व्यक्ति को एकत्रित धनराशि के साथ मेत्ज़ शहर भेज दिया जाता है। व्यक्ति को बिना कोई काम किए उस शहर में रहने और आजीविका चलाने के लिए एक हजार फ्रैंक प्रदान कर दिया जाता है। यदि आप केवल मेत्ज़ को देखते हैं तो हां, आप सौ फीसदी सही हैं। यह प्रक्रिया काफी लाभप्रद है। लेकिन यदि आप अपनी नजर गांव ए पर डालेंगे, और यदि आप अंधे नहीं हैं तो आप देखेंगे कि इस गांव ने अपने एक मजदूर को और उस एक हजार फ्रैंक को खो दिया जिससे कि उसे पारिश्रमिक दिया जा सकता था। और साथ ही उस वृति को भी खो दिया जो उस एक हजार फ्रैंक को खर्च करने से आस पास उत्पन्न होता।

प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि होने वाले नुकसान की प्रतिपूर्ति हो गई हो। क्योंकि जो काम गांव में होना था वह अब मेत्ज़ में होगा, और यह मामला बस इतना सा ही है। लेकिन ऐसा नहीं है, हम बताते हैं कि नुकसान कहां है। गांव में एक व्यक्ति गड्ढा खोंदता हैं और मजदूरी करता है और वह कामगार कहलाता है। जबकि मेत्ज़ में वह 'दाहिने से बाएं'और 'बाएं से दाहिने' करता है और वह सैनिक कहलाता है। दोनों मामलों में

धन का नियोजन और उसका परिसंचरण समान होता है लेकिन एक मामले में तीन सौ दिनों का उत्पादक श्रम शामिल होता है जबकि दूसरे मामले में तीन सौ दिनों का अनुत्पादक श्रम होता है जो अवश्य ही इस धारणा पर आधारित होता है कि सेना का एक हिस्सा सार्वजनिक सुरक्षा के लिए अपरिहार्य नहीं है।

अब विसैन्यीकरण की बारी आती है। आप मुझे एक लाख अधिशेष श्रमिकों, गहन प्रतिस्पर्धा और मजदूरी की दरों पर पड़ने वाले इसके दबावों का ध्यान दिलाते हैं। दरअसल, आप वहीं तक देख पाते हैं।

यहां उसकी बात जो आप देख नहीं पाते हैं। आप यह नहीं देख पाते हैं कि एक लाख श्रमिकों को उनके घर वापस भेजने का मतलब दस करोड़ फ्रैंक को समाप्त करना नहीं है, बल्कि उस पैसे को करदाताओं को वापस करना है। आप यह नहीं देखते हैं कि एक लाख श्रमिकों को इस तरह से बाजार में छोड़ते ही उनके श्रम के भुगतान करने के लिए दस करोड़ फ्रैंक की धनराशि भी बाजार में उतर जाती है। परिणामस्वरूप, वह उपाय जो श्रमिकों की ***आपूर्ति*** को बढ़ाता है, वही मांग में भी ***वृद्धि*** करता है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मजदूरी कम होने वाला आपका सिद्धांत भ्रामक है। आप पहले भी यह नहीं देखते हैं और बाद में भी इसे नहीं देख पाते हैं कि विसैन्यीकरण के कारण दस करोड़ फ्रैंक एक लाख लोगों के बीच प्रसारित

होने लगता है। पहले जहां यह राशि एक लाख लोगों कुछ ना करने के लिए दी जाती थी वहीं अब यह राशि काम करने के ऐवज में प्रदान की जाती है। अंततः आप यह भी नहीं देखते हैं कि करदाता अपना पैसा चाहे एक सैनिक को कुछ ना करने के लिए दे या किसी श्रमिक को किसी कार्य के बदले में दे, धन के प्रसार में किसी प्रकार का बदलाव नहीं होता है। हां, पहली अवस्था में करदाता को जहां चुकाए जाने वाले पैसे के बदले में कुछ भी प्राप्त नहीं होता था, वहीं दूसरी अवस्था में उसे बदले में कोई सेवा हासिल होती है। परिणामः राष्ट्र को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता है।

जिस कुतर्क को मैं यहां आड़े हाथों ले रहा हूं, वह विस्तारित अनुप्रयोग वाले परीक्षण का सामना नहीं कर सकता है, जो कि सभी सैद्धांतिक सिद्धांतों की कसौटी है। वैसे भी, सेना के आकार को बढ़ाने से राष्ट्रीय लाभ होता है वाले तर्क को अगर मान लिया जाए , तो देश की पूरी पुरुष आबादी को ही सेना में भर्ती क्यों नहीं कर लेते?

3. कर

क्या आपने कभी किसी को ये कहते हुए सुना है कि 'कर में निवेश करना श्रेष्ठतम निवेश है और वे ओस की उस बूंद की तरह है जो प्राण रक्षक है। देखिए उससे कितने परिवारों का भला होता है और उससे उद्योगों पर पड़ने वाले अप्रत्यक्ष प्रभावों की कल्पना कीजिए, वे अनंत हैं और उतने ही व्यापक हैं, जितना की स्वयं जीवन।'

इस विचारधारा का विरोध करने के लिए, मैं अपने द्वारा किए गए पिछले खंडन को दोहराने के लिए बाध्य हूं। राजनीतिक अर्थव्यवस्था यह अच्छी तरह से जानती है कि उसके तर्क किसी के लिए भी इतने आनंदायी नहीं होते हैं कि वे उनके बारे में ये कहे कि **रिपीटिटा प्लेसेंट** अर्थात ऐसा बार बार करने में आनंद आता है। तो, बसाइल की ही भांति, राजनीतिक अर्थशास्त्र ने उस कहावत को अपने उपयोग के हिसाब से 'व्यवस्थित' कर लिया है और अपने मुख से कहते हुए अत्यंत आश्वस्त है कि रिपीटिटा डोसेंट अर्थात ऐसा बार बार करने से हमें सीख मिलती है।

सरकारी अधिकारियों के द्वारा वेतन प्राप्त कर आनंद उठाया जाना ***दिखाई पड़ता है***। उससे उनके आपूर्तिकर्ताओं को जो

लाभ प्राप्त होता है वह भी ***दिखाई पड़ता है***। यह सब ठीक आपकी नाक के नीचे होता है।

लेकिन जिस नुकसान से करदाता खुद को मुक्त करने की कोशिश करता है वह ***दिखाई नहीं पड़ता है***। और इससे उन व्यापारियों को होने वाली परेशानी तो ***और भी दिखाई नहीं पड़ती है*** जो करदाताओं के लिए आपूर्ति करते हैं। जबकि बौद्धिक रूप से दिखाई पड़ने के लिए यह स्पष्ट रूप से पर्याप्त है।

जब एक सरकारी अधिकारी स्वयं पर सौ सोउस (छोटी फ्रेंच मुद्रा) अधिक खर्च करता है, तो इसका मतलब है कि एक करदाता को स्वयं के ऊपर सौ सोउस कम खर्च करने को मजबूर होना पड़ता है। लेकिन सरकारी अधिकारी द्वारा किया गया खर्च ***दिखाई पड़ता है***, क्योंकि यह हुआ होता है। जबकि करदाता का ***दिखाई नहीं पड़ता है*** क्योंकि दुखद है! कि उसे ऐसा करने से रोका गया होता है।

आप देश की तुलना एक सूखे भूमि के टुकड़े से करते हैं और कर की तुलना जीवनदायिनी वर्षा से करते हैं। ऐसा ही होगा। लेकिन आपको अपने आप से यह भी पूछना चाहिए कि यह बारिश कहाँ से आती है, और क्या यह ठीक उस कर की तरह नही है जो मिट्टी से नमी खींच लेता है और उसे सुखा देता है।

आपको आगे खुद से पूछना चाहिए कि क्या बारिश के द्वारा मिट्टी उस कीमती पानी से अधिक प्राप्त करती है जितना कि वाष्पीकरण द्वारा उससे सोख लिया जाता है?

एक बात जो बिल्कुल निश्चित है वो यह है कि जब जेम्स गुडफेलो गिनकर सौ सोउस कर संग्राहक को देता है तो बदले में उसे कुछ प्राप्त नहीं होता है। लेकिन जब एक सरकारी अधिकारी इन सौ सोउस को खर्च करते हुए जेम्स गुडफेलो को लौटाता है तो गुडफेलो को बदले में उसके मूल्य के बराबर गेंहू प्रदान करना पड़ता है अथवा श्रम करना पड़ता है। इस प्रकार, अंतिम निष्कर्ष यह निकलता है कि जेम्स गुडफेलो को पांच फ्रैंक का नुकसान होता है।

यह बिल्कुल सच है कि अक्सर, सरकारी अधिकारी जेम्स गुडफेलो के समकक्ष सेवा प्रदान करते हैं। ऐसी स्थिति में दोनों पक्षों को कोई नुकसान नहीं होता है बल्कि केवल एक विनिमय होता है। इसलिए, मेरा तर्क किसी भी तरह से उपयोगी कार्यों से संबंधित नहीं है। मैं यह कहता हूं कि यदि आप एक सरकारी कार्यालय बनाना चाहते हैं, तो इसकी उपयोगिता साबित करें। प्रदर्शित करें कि जेम्स गुडफेलो के लिए यह उसके द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के अनुसार उसकी लागत के बराबर है। लेकिन इस अंतर्निहित उपयोगिता के अलावा, नए ब्यूरो को खोलने के पक्ष में एक तर्क के रूप में इस बात का हवाला न दें

कि इससे नौकरशाह, उसके परिवार और उसके लिए जरूरी सामानों की आपूर्ति करने वालों का हित होता है; यह दलील न दें कि इससे रोजगार को बढ़ावा मिलता है।

जब जेम्स गुडफेलो किसी सरकारी अधिकारी से विरले ही मिलने वाली किसी ऐसी उपयोगी सेवा के बदले में सौ सोउस प्रदान करता है, तो वह ठीक वैसा ही होता है जैसे कि वह किसी जूते बनाने वाले मोची को एक जोड़ी जूते के लिए सो सोउस प्रदान करे। यह सीधे सीधे लेन-देन (गिव एंड टेक) का मामला है और दोनों के अंक सम (इवेन) हैं। लेकिन जब गुडफेलो को बिना कोई सेवा प्राप्त किए या यहां तक कि हुई किसी असुविधा के लिए भी अपने सौ सोउस किसी सरकारी अधिकारी को देना पड़ता है तो यह ऐसा है जैसे कि अपने पैसे को किसी चोर के सुपुर्द करना। ऐसा कहने का कोई मतलब नहीं बनता है कि सरकारी अधिकारी उन सौ सोउस को इस तरीके से खर्च करेंगे कि हमारे किसी ***राष्ट्रीय उद्योग*** को बहुत बड़ा फायदा हो जाएगा। इस प्रकार, यदि जेम्स गुडफेलो की मुलाकात उस गैर कानूनी व्यक्ति (चोर) या वैध परजीवी (सरकारी अधिकारी) से नहीं हुई होती तो वह उन पैसों का कहीं बेहतर इस्तेमाल कर सकता था जितना कि कोई चोर इस्तेमाल करता।

तो आइए हम अपने आप को सिर्फ जो दिखाई पड़ता है उसी आधार पर फैसला लेने के लिए अभ्यस्त न करें बल्कि जो नहीं दिखाई पड़ता है उसका भी संज्ञान लें।

पिछले साल मैं वित्त समिति में था, क्योंकि संविधान सभा में विपक्ष के सदस्यों को व्यवस्थित रूप से सभी समितियों से बाहर नहीं किया गया था। इसमें संविधान निर्माताओं ने समझदारी से काम लिया। हमने एम. थियर्स को यह कहते सुना है: "मैंने अपना जीवन लेजिटिमिस्ट पार्टी और क्लैरिकल पार्टी के लोगों से लड़ते हुए बिताया है। एक उभयनिष्ठ खतरे के दौरान जब मुझे उन लोगों को जानने का मौका मिला और हमने खुलकर एक दूसरे से बात की तब मुझे पता चला कि वे बुरे व्यक्ति नहीं हैं जैसी कि मैंने कल्पना की थी।"

जी हां, उन दलों के बीच दुश्मनी बढ़ती जाती है और नफरत गहरी होती जाती है जो आपस में मेल मिलाप नहीं करते हैं और यदि बहुसंख्यक दल, अल्पसंख्यक दल के कुछ सदस्यों को समितियों की मंडली में शामिल कर लेते हैं तो शायद दोनों पक्षों को यह समझ में आ जाएगा कि उनके विचार एक दूसरे के उतने भी विपरीत नहीं हैं और इससे भी बढ़कर यह कि उनके इरादे उतने विकृत नहीं हैं, जैसी कि उन्होंने कल्पना की थी।

खैर जो भी हो, तो पिछले साल मैं वित्त समिति में था। हर बार जब हमारे एक सहयोगी गणतंत्र के राष्ट्रपति, कैबिनेट मंत्रियों और राजदूतों के वेतन को सामान्य रूप से तय करने की बात कहते, तो उन्हें बताया जाता था कि:

"सेवाओं की गुणवत्ता के लिए, हमें कुछ निश्चित कार्यालयों को प्रतिष्ठा और गरिमा की आभा से घेर कर रखना चाहिए। योग्य लोगों को उनकी ओर आकर्षित करने का यही एक तरीका है। असंख्य दुर्भाग्यपूर्ण लोग गणतंत्र के राष्ट्रपति की ओर रुख करते हैं, और यह एक दर्दनाक स्थिति होगी यदि उन्हें हमेशा उनकी मदद से इनकार करने के लिए मजबूर किया जाता है। मंत्रिस्तरीय और राजनयिक सैलून में एक निश्चित मात्रा में ठाट बाट और दिखावा संवैधानिक सरकारों और मशीनरी का हिस्सा है, आदि आदि।"

इस तरह के तर्कों का विरोध किया जा सकता है या नहीं, लेकिन वे निश्चित रूप से गंभीर जांच के पात्र हैं। वे जनहित पर आधारित होते हैं, जिनका सही या गलत अनुमान लगाया जाता है; और, व्यक्तिगत रूप से, मैं उनके लिए हमारे कई कैटोस (अत्यधिक जानकार लोगों) की तुलना में बेहतर मामला बना सकता हूं, जो कंजूसी और ईर्ष्या की संकीर्ण भावना से प्रेरित है।

लेकिन मेरी अर्थशास्त्री अंतरात्मा को सबसे ज्यादा झटका तब लगता है, और हमारे देश की बौद्धिक प्रतिष्ठा के लिए मुझे तब शर्म का एहसास होता है जब वे ऐसे तर्कों को प्रस्तुत करते करते (जैसा कि वे हमेशा करते हैं) बेतुके प्रतिबंधों तक पहुंच जाते हैं (जिसे हमेशा अनुकूल रूप में पाते हैं):

“इसके अतिरिक्त, सरकारी उच्च अधिकारियों को प्रदत्त ऐश-ओ-आराम से कला, उद्योग और रोजगार को प्रोत्साहन मिलता है। सरकार के मुखिया और उनके मंत्रीगण जब भी सामूहिक भोजों और समारोहों का आयोजन करते हैं तो इससे राजकीय निकायों के सभी संभागों में जान फूंकी जाती है। उनके वेतन में कटौती करने से पेरिस के साथ ही साथ देश के सभी उद्योग चौपट हो जाएंगे। ”

हे भद्रजनों, ईश्वर के लिए, कृपया कम से कम अंकगणित का सम्मान करें, और केवल इस डर के कारण कि आपको समर्थन प्राप्त नहीं होगा, फ्रांस की नेशनल असेंबली में आकर ये न कहें कि, एक योग का परिणाम अलग अलग प्राप्त होगा जो इस बात पर निर्भर करेगा कि योग ऊपर से नीचे की ओर किया गया है या नीचे से ऊपर की ओर।

अच्छा, तो मान लीजिए कि मैंने किसी बेलदार (गड्ढा खोदने वाला मजदूर) से अपने खेत में गड्ढा खुदवाने और उस काम के

बदले में उसे सौ सोउस देने का समझौता किया। मैं इस समझौते को पूरा करने ही वाला था कि कर संग्राहक आकर मुझसे सौ सोउस ले लेता है और उन्हें आंतरिक मामलों के मंत्री को सौंप देता है। मेरा अनुबंध तो टूट गया, लेकिन मंत्री के घर रात के खाने में एक और व्यंजन जुड़ जाएगा। अब, आप किस आधार पर यह दावा करने का साहस करते हैं कि यह आधिकारिक व्यय राष्ट्रीय उद्योग के लिए सहायक होगा? क्या आपको नहीं लगता कि यह केवल उपभोग और श्रम का एक साधारण सा ***हस्तांतरण*** है? एक कैबिनेट मंत्री के खाने की भव्य मेज को और भव्यता प्रदान कर दी गई है, यह सच है; लेकिन एक किसान के खेत से पानी के निकासी की व्यवस्था न होने के कारण वह दलदल में तब्दील हुआ पड़ा है, और यह भी उतना ही सच है। पेरिस के एक कैटरर ने सौ सोउस प्राप्त किए हैं, मैं आपके फैसले को स्वीकार करता हूं; लेकिन आप भी यह स्वीकार करें कि एक स्थानीय गड्ढे खोदने वाले को पांच फ्रैंक का नुकसान हो गया है। कुल मिलाकर सिर्फ यही कहा जा सकता है कि आधिकारिक व्यंजन और संतुष्ट कैटरर तो ***दिखाई पड़ते हैं***, लेकिन दलदल बने पड़े खेत और उसकी खुदाई करने वाले बेकार बैठे हैं जो ***दिखाई नहीं पड़ता है।***

हे भगवान! राजनीतिक अर्थव्यवस्था में यह साबित करना कितना मुश्किल है कि दो और दो चार होते हैं; और यदि आप

ऐसा करने में किसी प्रकार सफल हो भी जाते हैं, तो लोग रोते हैं कि "यह इतना स्पष्ट है कि उबाऊ है।" उसके बाद वे इस प्रकार व्यवहार करते हैं जैसे कि आपने कभी कुछ साबित ही नहीं किया।

4. थिएटर (रंगशाला) और फाइन आर्ट्स (ललित कला)

क्या सरकार द्वारा कलाओं को सब्सिडी प्रदान की जानी चाहिए ?

सब्सिडी वाली प्रणाली के पक्ष में, यह तर्क दिया जा सकता है कि कला राष्ट्र की आत्मा को विस्तृत, उन्नत और काव्यात्मक बनाती है; उसे भौतिक व्यस्तताओं से दूर करती हैं, उसमें सुंदरता की भावना भरती है, और इस प्रकार, इसके तौर-तरीकों, इसके रीति-रिवाजों, इसकी नैतिकता और यहां तक कि इसके उद्योग पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि फ्रांस में थिएटर- इटालियन एंड द कंज़र्वेटरी के बिना संगीत कहां होगा; थिएटर- फ्रैंकाइस (फ्रेंच) के बिना नाट्य कला कहां होगा; हमारे संग्रहों और संग्रहालयों के बिना चित्रकला और मूर्तिकला कहां होंगे। कोई और आगे जा सकता है और पूछ सकता है कि ललित कलाओं के केंद्रीकरण और उसे सब्सिडी प्रदान किए बिना, क्या इस

उत्कृष्ट रसज्ञान का विकास हुआ होता जो कि फ्रांसीसी प्रतिभा का श्रेष्ठ उदाहरण हैं और यहां से पूरी दुनिया को भेजा जाता है। इस तरह के परिणाम देने के बावजूद इस उदार मूल्यांकन का परित्याग करना क्या नासमझी की पराकाष्ठा नहीं होगी जिससे कि यहां के नागरिकों को पूरे यूरोप की नजर में श्रेष्ठता और महिमा हासिल है?

इन कारणों सहित कई अन्य कारणों के चलते, जिनकी शक्ति का मैं विरोध नहीं करता, कोई भी अकाट्य तर्कों के साथ विरोध कर सकता है। सबसे पहली बात तो ये कि, वितरणात्मक न्याय पर कोई भी यह प्रश्न पूछ सकता है कि क्या विधायक के अधिकार उसे इस बात की अनुमति प्रदान करने की हद तक जाते हैं कि वह कलाकारों के मुनाफे में वृद्धि करने के लिए किसी कारीगर की मजदूरी पर हाथ मार सके? एम. डी लामार्टिन कहते हैं कि "यदि आप किसी से सब्सिडी छीन लेते हैं, तो आप इस रास्ते पर कहाँ जाकर रुकेंगे, और क्या तार्किकता के आधार पर विश्वविद्यालय के संकायों, अपने संग्रहालयों, अपने संस्थानों, अपने पुस्तकालयों को खत्म करने की मांग नहीं होगी?" इसका जवाब यह दिया जा सकता है कि यदि आप उन सभी चीजों को सब्सिडी प्रदान करना चाहते हैं जो कि अच्छे और लाभदायक हैं, तो फिर आप कहां जाकर रुकेंगे, और क्या तार्किकता के आधार पर कृषि, उद्योग,

व्यापार, लोक कल्याण और शिक्षा जैसी सभी नागरिक सेवाओं की सूची तैयार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी? इसके अलावा, क्या सब्सिडी प्रदान किए जाने पर कला का विकास निश्चित तौर पर होता है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका जवाब अब तक ढूंढा नहीं जा सका है, हालांकि हम अपनी आंखों से देखते हैं कि वही थिएटर समृद्ध हैं जो अपने स्वयं के लाभ पर संचालित हैं। और अंत में, उच्च क्षतिपूर्ति की ओर बढ़ते हुए हम देख सकते हैं कि जरूरतें और इच्छाएं एक दूसरे को जन्म देती हैं और चूंकि राष्ट्रीय संपत्ति से उनके ऋणों की मुक्ति को अनुमति मिलती रहती है इसलिए वे अनुपातिक तौर पर अधिक से अधिक विशिष्ट स्थान प्राप्त करने की ओर आगे बढ़ती रहती हैं। इसलिए सरकार को इस प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि वर्तमान में राष्ट्र के पास जितनी भी राशि हो, वह आवश्यक उद्योगों को नुकसान पहुंचाए बिना कराधान द्वारा विलासिता वाले उद्योगों को प्रोत्साहित नहीं कर सकती है। और ऐसा करके वह सभ्यता की प्राकृतिक प्रगति को उलट देती है। कोई भी इस बात को बता सकता है कि चाहतों, रुचियों, श्रम और जनसंख्या का यह कृत्रिम विस्थापन राष्ट्रों को एक अनिश्चित और खतरनाक स्थिति में पहुंचा देता है, जिससे वे आधार विहिन हो कर रह जाते हैं।

यही वो कुछ कारण हैं जो सरकारी हस्तक्षेपों के विरोधियों द्वारा उस व्यवस्था के संदर्भ में आरोपित किए जाते हैं, जिसके तहत नागरिक ये मानते हैं कि उन्हें आपनी जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करना चाहिए और उसी के हिसाब से अपनी गतिविधियों को निर्देशित करना चाहिए। मैं यह स्वीकार करता हूं कि मैं उन लोगों में से हूं जिनका ये मानना है कि चयन, आवेग आदि को नीचे यानी नागरिकों की ओर से आना चाहिए न कि ऊपर यानी विधायकों की तरफ से। और इसके विरोधी सिद्धांत मुझे स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा को विनाश की ओर ले जाते हुए प्रतीत होते है।

लेकिन, क्या आप जानते हैं कि, अन्याय के हद तक झूठ वाले अनुमान के आधार पर, अर्थशास्त्रियों पर अब क्या आरोप लगाए जाते हैं? चूंकि हम चाहते हैं कि ऐसी गतिविधियां स्वैच्छिक हों और उनका समुचित पुरस्कार स्वयं प्राप्त किया जाए इसलिए जब हम सब्सिडी का विरोध करते हैं, तो हम पर सभी प्रकार की गतिविधियों का दुश्मन होने और उसी चीज का विरोध करने का आरोप लगाया जाता है जिसे सब्सिडी देने के लिए प्रस्तावित किया गया था। इस प्रकार, यदि हम मांग करते हैं कि राज्य को कर के द्वारा प्राप्त धन से धार्मिक गतिविधियों को सहायता प्रदान नहीं करनी चाहिए, तो हम नास्तिक हैं। यदि हम कहें कि राज्य कर द्वारा प्राप्त धन से शिक्षा में हस्तक्षेप न

करे, तो हम ज्ञानोदय से घृणा करने वाले हो जाते हैं। यदि हम कहते हैं कि राज्य को कर द्वारा प्राप्त धन की सहायता से भूमि या उद्योग की किसी शाखा का कृत्रिम मूल्य तय नहीं करना चाहिए, तो हमें संपत्ति और श्रम का दुश्मन बताया जाता है। अगर हमारा यह मानना है कि राज्य को कलाकारों को सब्सिडी नहीं देनी चाहिए, तो हम बर्बर हैं जो कला को बेकार मानते हैं।

मैं सिर्फ अनुमानों पर आधारित इन विचारों का अपनी पूरी शक्ति से विरोध करता हूं। धर्म, शिक्षा, संपत्ति, श्रम और कला को समाप्त किए जाने वाले बेतुके विचारों से कोई वास्ता न रखते हुए जब हम राज्य से सभी प्रकार की मानवीय गतिविधियों के मुक्त विकास को संरक्षित करने की मांग करते हैं, वह भी बिना दूसरों के खर्चों पर वेतन प्रदान करते हुए, तो हमारा ये मानना होता है कि समाज की ये सभी महत्वपूर्ण शक्तियां स्वतंत्रत होकर सामंजस्यपूर्ण तरीके से विकसित हों और उनमें से किसी को भी, जैसा कि हमें आज दिखाई पड़ता है, परेशानी, दुर्व्यवहार, अत्याचार और अव्यवस्था का सबब नहीं बनना चाहिए।

हमारे विरोधियों का मानना है कि एक ऐसी गतिविधि जिसे न तो सब्सिडी दी जाती है और न ही विनियमित किया जाता है, वह समाप्त हो जाती है। जबकि हमारा मानना इसके उलट है। उनकी आस्था कानून बनाने वालों में है, इंसानियत में नहीं।

जबकि हमारी आस्था इंसानियत में है न कि कानून बनाने वालों में।

इस प्रकार, एम. डी लामार्टिन ने कहा कि "इस सिद्धांत के आधार पर तो , हमें उन सार्वजनिक प्रदर्शनों को ***समाप्त*** कर देना चाहिए जो इस देश में धन और सम्मान लाते हैं।"

एम. डी लामार्टिन को मेरा जवाब यह हैः आपके दृष्टिकोण में ***सब्सिडी नहीं देने*** का मतलब ***समाप्त*** कर देना है, क्योंकि आपका सिद्धांत इस आधार पर आगे बढ़ता है कि सरकार जिन चीजों को चाहती है, उन चीजों को छोड़कर किसी भी अन्य चीज का अस्तित्व बाकी नहीं रह सकता। आपका निष्कर्ष यह कहता है कि कुछ भी अस्तित्व में नहीं रह सकता यदि करों के द्वारा उन्हें जीवित नहीं रखा जाए। लेकिन मैं आपके द्वारा दिए गए उदाहरण का समर्थन नहीं करता हूं, और मैं आपको ध्यान दिला दूं कि सभी प्रदर्शनों में सबसे महान और सबसे आदर्श प्रदर्शन वह है जो कि सबसे अधिक उदार और सार्वभौमिक अवधारणा पर आधारित है। यहां तक कि मैं इसके लिए 'मानवतावादी' शब्द का प्रयोग कर सकता हूं जो कि अतिशयोक्ति नहीं है। इस प्रदर्शन की तैयारी लंदन में चल रही है और इसमें सरकार ना तो किसी प्रकार का हस्तक्षेप करती है और ना ही कर के द्वारा किसी प्रकार का सहयोग करती है।

फाइन आर्ट्सओं के मुद्दे पर वापस लौटते हुए यह बात मैं फिर से दोहरा रहा हूं कि कोई भी सब्सिडी की प्रणाली के समर्थन में और इसके खिलाफ मजबूत तर्क आरोपित कर सकता है। पाठक इस बात को समझता है कि इस निबंध के विशेष उद्देश्य के अनुरूप, मुझे उन कारणों को स्थापित करने या दोनों में से किसी एक को चुनने की कोई आवश्यकता नहीं है।

लेकिन एम. डी लामार्टिन ने एक बहस की शुरुआत की है जिसे मैं चुप रह कर यूं ही जाने नहीं दे सकता, क्योंकि यह इस आर्थिक अध्ययन की बहुत सावधानी से परिभाषित सीमाओं के भीतर आता है। उन्होंने कहा है किः

थिएटर से संबंधित आर्थिक प्रश्न को एक शब्द में बयां किया जा सकता हैः रोजगार। यह कम मायने रखता है कि रोजगार की प्रकृति क्या है, क्योंकि यह किसी भी अन्य प्रकार के रोजगार के जितना ही उत्पादक और उपजाऊ है। थिएटर, जैसा कि आप जानते हैं, सभी प्रकार के कर्मचारियों जैसे कि पेंटर, राजमिस्त्री, डेकोरेटर, कास्ट्यूमर, आर्किटेक्ट आदि को मिलाकर कम से कम 80 हजार लोगों को आजीविका प्रदान करता है। ये सभी इस राजधानी के कई हिस्सों का जीवन और उद्योग हैं, और उन्हें आपकी सहानुभूतियों की आवश्यकता है!

आपकी सहानुभूतियां? इसका तात्पर्यः आपकी सब्सिडी।

वे आगे कहते हैं किः

पेरिस का आमोद-प्रमोद प्रांतीय विभागों को रोजगार और उपभोक्ता वस्तुओं को उपलब्ध कराता है और अमीरों की यह विलासिता पूरे गणराज्य के थिएटरों वाले जटिल उद्योग पर आश्रित सभी प्रकार के कुल दो लाख मजदूरों की आय और आजीविका का साधन बनती है। फ्रांस को शानदार बनाने वाले इस महान आमोद-प्रमोद से प्राप्त होने वाली यह आजीविका उनकी बीवी और बच्चों की जरूरतों को पूरा करने का साधन बनते हैं। उनकी भलाई के लिए यह ठीक होगा कि आप उन्हें ये 60 हजार फ्रैंक प्रदान कर दें। [***बहुत अच्छे ! बहुत अच्छे ! खूब सारी तालियां ...***]

इस बारे में मजबूर होकर मुझे कहना पड़ता है किः ***बहुत बुरा! बहुत बुरा!*** निश्चित तौर पर, इस फैसले के बोझ को उन आर्थिक तर्कों तक सीमित रखते हुए जिनसे हम यहां संबंध रखते हैं।

इसमें संदेह है कि 60 हजार फ्रैंक्स थिएटर में काम करने वाले कर्मचारियों के पास जाते हैं। पहले तो कुछ हिस्सा रास्ते में ही गायब हो जाएगा। यदि कोई इस मामले की बारीकी से जांच करे तो पाएगा कि पाई (एक प्रकार का डिज़र्ट) का अधिकांश हिस्सा तो कहीं और चला जाता है। यदि कर्मचारियों के लिए

कुछ हिस्सा बच गया तो वे उनकी अच्छी किस्मत हो होगी! लेकिन यदि मैं ये मान लूं कि सब्सिडी की पूरी धनराशि पेंटर्स, डेकोरेटर्स, कास्ट्यूमर्स, हेयर ड्रेसर्स आदि के पास जाती है तो यह वह है जो ***दिखाई पड़ता है***।

लेकिन यह धनराशि आती कहां से है? यह सिक्के का ***दूसरा पहलू*** है, जो कि उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की इसका मुख्य ***पहलू***। इन 60 हजार फ्रैंक के उद्गम का स्त्रोत क्या है? और ये 60 हजार फ्रैंक कहां गए होते, यदि विधायकों ने वोट के माध्यम से इस राशि को ***रूए डी रिवोली*** से ***रूए डी ग्रेनेले*** की राह नहीं दिखाई होती? (*रूए डी रिवोली फ्रांस का एक प्रसिद्ध व्यावसायिक प्रतिष्ठानों वाली जगह है जबकि रूए डी ग्रेनेले राजनैतिक कार्यालयों का केंद्र है। इस प्रकार, लेखक के कहने का तात्पर्य यह है कि विधायक अपने वोट के माध्यम से कानून बनाते हैं और व्यावसायिक केंद्रों से कर वसूल कर राजनैतिक केंद्रों तक पहुंचाते हैं) यही वह है जो ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

यह निश्चित है कि कोई भी यह कहने का साहस नहीं करेगा कि यह धनराशि विधायकों के द्वारा की गई वोटिंग के कारण बैलेट बॉक्स से उत्पन्न हुआ है, और ना ही यह कहेगा कि इस चमत्कारिक मतदान के बिना ये 60 हजार फ्रैंक अदृश्य और अगम्य रह जाते। इस बात को आवश्यक रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए कि बहुमत सिर्फ यह निर्णय कर सकती है कि धन

कहां से लिया जाएगा और कहां भेजा जाएगा, और यह कि उनकी मंजिल केवल एक ही होगी जो किसी दूसरे के द्वारा विक्षेपित होगी।

ऐसी परिस्थिति में, यह स्पष्ट है कि जिस करदाता पर एक फ्रैंक का कर लगाया गया होगा, उसके पास खर्च करने के लिए अब वह फ्रैंक नहीं होगा। यह भी स्पष्ट है कि करदाता एक फ्रैंक के द्वारा प्राप्त होने वाली संतुष्टि से वंचित रह जाएगा और एक मजदूर, वह चाहे जो भी हो, जो उस फ्रैंक के बदले में काम कर करदाता को संतुष्टि प्रदान करता, वह भी उस समान धनराशि की मजदूरी से वंचित रह जाएगा।

तो आइए हम यह मानने के बचकाने भ्रम जाल में न पड़े कि 16 मई का वोट राष्ट्र के कल्याण और रोजगार के क्षेत्र में किसी प्रकार की वृद्धि करता है। यह महज संपत्ति और मजदूरी का पुनः आवंटन करता है, और बस इतना ही करता है।

क्या यह कहा जाएगा कि किसी एक प्रकार की संतुष्टि और किसी एक प्रकार के रोजगार के लिए यह उन संतुष्टियों और रोजगारों को प्रतिस्थापित करते हैं जो ज्यादा जरूरी, ज्यादा नैतिक और ज्यादा तर्कसंगत हैं? मैं इसके आधार पर लड़ाई लड़ सकता हूं। मैं कहता हूं किः करदाताओं से 60 हजार फ्रैंक लेकर आप हल चलाने वालों, खुदाई करने वालों, बढ़ईयों,

लुहारों आदि की मजदूरी कम करते हैं और उसी धनराशि से आप सिंगर्स, हेयर ड्रेसर्स, डेकोरेटर्स और कॉस्ट्यूमर्स की मजदूरी बढ़ाते हैं। यह कहीं से भी सिद्ध नहीं होता कि दूसरा वर्ग पहले वाले वर्ग से ज्यादा महत्वपूर्ण है। एम. डी लामार्टिन यह आरोप नहीं लगाते हैं। उनके स्वयं के कथनों जैसे कि थिएटर का कार्य ***उतना ही*** उत्पादक है जितना कि अन्य कार्य, ***उतना ही*** लाभदायक है जितना कि अन्य कार्य, कोई और कार्य ***इससे ज्यादा*** नहीं, आदि आदि के लिए अभी भी चुनौती दी जा सकती है कि थिएटर का कार्य उतना उत्पादक नहीं है जितना की अन्य कार्यों के मुकाबले इसे बताया जाता है और जिसके लिए इसे सब्सिडी प्रदान की जाए।

लेकिन विभिन्न प्रकार के कार्यों के आंतरिक मूल्य और योग्यता की यह तुलना मेरे वर्तमान विषय का हिस्सा नहीं है। मुझे यहां केवल यह प्रदर्शित करना है कि, एम डी. लामार्टिन और उनके तर्क की सराहना करने वाले यदि एक तरफ अभिनेताओं की जरूरतों को पूरा करने वालों द्वारा अर्जित की जाने वाली मजदूरी को देखा है, तो दूसरी तरफ उन्हें करदाताओं की जरूरतों को पूरा करने वालों की कमाई के नुकसान को भी देखना चाहिए। क्योंकि यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो वे पुनः आवंटन को ***लाभ*** समझने की भूल करने के कारण उपहास का पात्र बनेंगे। यदि उनके द्वारा प्रस्तुत सिद्धांत तार्किक होते, तो

क्या वे असीमित मात्रा में सब्सिडी की मांग नहीं करते; क्योंकि जो बात एक फ्रैंक के लिए सही है, जो बात साठ हज़ार फ्रैंक के लिए सही है, समान परिस्थितियों में, एक अरब फ्रैंक के बारे में भी सही होनी चाहिए।

अब जब प्रश्न करों का ही है, तो सज्जनों, कुछ प्रामाणिक तथ्यों से युक्त कारणों के साथ उनकी उपयोगिता साबित करें, न कि सिर्फ वही शोकगीत युक्त दावे के साथ कि: "सार्वजनिक खर्च कामकाजी वर्ग को जीवित रखता है।" यह उस तथ्य को छिपाने की गलती करता है जिसे जानना आवश्यक है: जैसे कि, ***सार्वजनिक खर्च सदैव निजी खर्च*** की कीमत पर होते हैं, जिसके तहत किसी एक कामगार से लेकर बदले में दूसरे कामगार की सहायता की जा सकती है लेकिन इससे पूरे श्रमिक वर्ग का कुछ भला होता है ऐसा बिल्कुल नहीं है। आपका तर्क सजावटी और आकर्षित करने वाला है, लेकिन यह काफी बेतुका है, क्योंकि तर्क सही नहीं है।

5. लोक निर्माण

यह सुनिश्चित करने के बाद कि एक विशाल उद्योग समुदाय को लाभान्वित करेगा, किसी राष्ट्र के लिए इससे ज्यादा स्वाभाविक कुछ भी नहीं है कि, वह ऐसा ही एक उद्योग स्थापित करे

जिसका संचालन नागरिकों से धन एकत्रित कर किया जाए। लेकिन, मैं स्वीकार करता हूं कि मेरा धैर्य पूरी तरह से तब जवाब दे देता है, जब मैं इस तरह के किसी प्रस्ताव के समर्थन में कथित रूप से यह आर्थिक भ्रम सुनता हूं कि: "इसके अलावा, यह श्रमिकों के लिए रोजगार पैदा करने का एक तरीका है।"

राज्य सड़क तैयार करता है, महल बनाता है, गलियों की मरम्मत करता है, नहर खोदता है; और इन परियोजनाओं के साथ वह कुछ श्रमिकों को रोजगार देता है। यह ***दिखाई पड़ता है***। लेकिन इससे कुछ अन्य मजदूर रोजगार से वंचित हो जाते है वह ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

मान लीजिए कोई सड़क निर्माणाधीन है। हजार की तादात में मजदूर रोज सुबह आते हैं, हर शाम घर जाते हैं, और अपनी मजदूरी लेते हैं; यह निश्चित है। यदि सड़क को अधिकृत नहीं किया गया होता, यदि इसके लिए मतदान कर धन जारी नहीं किया गया होता, तो इन अच्छे लोगों को न तो यह काम मिला होता और न ही ये मजदूरी अर्जित की गई होती; यह भी निश्चित है।

लेकिन इसमें क्या बस इतना ही है? यदि सभी चीजों को शामिल किया जाए तो क्या इस पूरी कार्यवाही में कुछ और शामिल नहीं

है? जैसे ही एम. ड्युपिन इस परम विलक्षण शब्द "विधान सभा ने इसे अंगीकार किया है . . ." का उच्चारण करते हैं तो क्या लाखों फ्रैंक चमत्कारिक रूप से अपने आप चांद की किरणों से उतर कर एम. फॉल्ड और एम. बिनेयू की तिजोरी में आ जाते हैं? इस प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए क्या सरकार को धन संग्रह करने और उन्हें खर्च करने की व्यवस्था नहीं करनी होगी? क्या उन्हें अपने कर संग्राहकों देश भर में भेजना नहीं होगा और करदाताओं को अपना योगदान प्रदान नहीं करना होगा?

पहले प्रश्न का अध्ययन करें और फिर उसके दो पहलुओं को स्थापित करें। इस बात को चिन्हित करें कि सरकार मतदान के माध्यम से प्राप्त उन लाखों फ्रैंक के साथ क्या करने जा रही है, और यह भी चिन्हित करना मत भूलिए कि इन लाखों फ्रैंक के साथ करदाताओं ने क्या किया होता - जो वे अब नहीं कर सकते हैं। आपको तब दिखाई पड़ेगा कि एक सार्वजनिक उद्योग दो पहलुओं वाला सिक्का है। एक पहलू एक व्यस्त कामगार की छवि प्रस्तुत करता है। इस उपकरण (सिक्के) के माध्यम से यह ***दिखाई पड़ता है***। दूसरा पहलू, एक बेरोजगार कामगार की हालत बयां करता है।, इस उपकरण (सिक्के) के माध्यम से यह ***दिखाई नहीं पड़ता*** है।

इस निबंध में जिस कुतर्क का मैं विरोध कर रहा हूं, वह लोक निर्माण के कार्यों पर लागू होने पर और भी खतरनाक हो जाता

है, क्योंकि यह फिज़ूल खर्ची वाले सबसे मूर्खतापूर्ण उद्योगों को सही ठहराने का काम करता है। जब कोई किसी रेलमार्ग या पुल वास्तविक रूप से उपयोगी हो, तो उसके पक्ष में बहस करने के लिए इस तथ्य पर भरोसा करना पर्याप्त होता है। लेकिन अगर कोई ऐसा नहीं कर सकता तो कोई क्या करे? उनके पास सिर्फ इस बकवास का ही सहारा रह जाता है कि : "हमें श्रमिकों के लिए रोजगार पैदा करना चाहिए।"

इसका मतलब ये होता है कि पहले चैंप-डी-मार्स की छतों को बनाने का आदेश दिया गया और फिर उन्हें तोड़ने का आदेश दिया गया। ऐसा कहा जाता है कि महान नेपोलियन जब गड्ढे खोदता और फिर उसे भर देता था तो ऐसा करते हुए वह सोचता था कि वह एक परोपकारी कार्य कर रहा है। उसने ऐसा कहा भी: "परिणाम से क्या फर्क पड़ता है? हमें केवल मजदूर वर्गों के बीच होने वाले धन के वितरण को देखने की जरूरत है।"

आइए चीजों की तह तक जाएं। पैसा हमारे लिए एक भ्रम जाल पैदा करता है। एक सामान्य उद्यम में सभी नागरिकों से, पैसे के रूप में, सहयोग मांगना, वास्तव में, उनसे वास्तविक शारीरिक सहयोग मांगना है, क्योंकि उनमें से प्रत्येक अपने श्रम से अपने लिए वह राशि प्राप्त करता है जिस पर उससे कर वसूला जाता है। अब, यदि हम सभी नागरिकों को एक साथ इकट्ठा करें और

उनसे उनकी सेवाओं को प्राप्त करें ताकि एक ऐसा कार्य किया जा सके जो सभी के लिए उपयोगी हो, तो यह समझ में आता है; उनकी प्रतिपूर्ति कार्य के परिणामों में ही शामिल होगी। लेकिन अगर, एक साथ लाए जाने के बाद, उन्हें सड़कों का निर्माण करने के लिए मजबूर किया जाता है, जिस पर कोई यात्रा नहीं करेगा, या महल जिसमें कोई नहीं रहेगा, और यह सब महज उनके लिए काम उपलब्ध कराने के बहाने है, तो यह बेतुका लगेगा, और यदि वे इसके प्रति आपत्ति दर्ज कराते है किः हम इस प्रकार का काम नहीं करेंगे। इसकी बजाए हम अपने लिए काम करना पसंद करेंगे, तो निश्चित रूप से ये न्यायसंगत होगा।

नागरिकों के द्वारा श्रम की बजाए पैसे से योगदान करने से, परिणामों में सामान्यतः कुछ भी नहीं बदलता है। लेकिन अगर श्रम का योगदान होता, तो नुकसान सभी के द्वारा साझा किया जाता। जहां धन का योगदान होता है, जिन्हें राज्य व्यस्त रखता है, वे अपने हिस्से के नुकसान से बचने में सफल हो जाते हैं, जबकि पहले से ही भुगतान कर रहे उनके हमवतनों के हिस्से में और अधिक जुड़ जाता है।

संविधान में एक अनुच्छेद है जिसमें कहा गया है:

"समाज, सरकारी प्रतिष्ठानों की स्थापना के माध्यम से, विभागों और नगर पालिकाओं के द्वारा बेरोजगार हाथों को लोक निर्माण

के उपर्युक्त कार्यों में शामिल कर श्रम के विकास में सहायता करता है और प्रोत्साहन देता है . . .।"

संकट के समय में, जैसे कि कड़ाके की सर्दी के दौरान, एक अस्थायी उपाय के रूप में, करदाता की ओर से इस प्रकार के हस्तक्षेप से अच्छे प्रभाव हासिल किए जा सकते हैं। यह ठीक उसी तरह काम करता है जैसे कि बीमा (इंश्योरेंस) कार्य करता है। यह न तो नौकरियों की संख्या में इज़ाफा करता है और न ही कुल मजदूरी में, लेकिन यह सामान्य दिनों में श्रम और मजदूरी लेता है और नुकसान उठाते हुए उन्हें मुश्किल दिनों में दान करता है।

एक स्थायी, सामान्य और व्यवस्थित उपाय के रूप में, यह एक विनाशकारी झांसा, एक अनहोनी, एक विरोधाभास के अलावा और कुछ नहीं है, जो उस छोटे से काम का भारी भरकम प्रदर्शन करता है जिसे उसने प्रेरित किया है, और यही वो है ***दिखाई पड़ता है***। लेकिन यह बहुत बड़ी मात्रा में उन कार्यों को छुपाता है जिस काम को उसने रोक रखा है, और यह वो है ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

6. बिचौलिये

समाज उन सभी सेवाओं का समुच्चय है जो लोग एक दूसरे के लिए चाहे मजबूरी से या स्वेच्छा से करते हैं। ये ही सार्वजनिक सेवाएं और निजी सेवाएं कहलाते हैं।

पहले प्रकार की सेवाएं, कानून द्वारा अधिरोपित और विनियमित होती हैं, जिन्हें आवश्यकता होने पर बदलना कभी आसान नहीं होता है, और जो अपनी स्थापना के उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम न होने की दशा में भी ***सार्वजनिक सेवाओं*** के नाम से जानी जाती है, भले ही वे सार्वजनिक परेशानी के अतिरिक्त कुछ भी न हों। दूसरे प्रकार की सेवाएं स्वैच्छिक कार्यक्षेत्र यानी कि व्यक्तिगत जिम्मेदारी के क्षेत्र के तहत आतीं हैं। इस प्रकार की सेवाओं में शामिल प्रत्येक व्यक्ति, हरसंभव मोलभाव करने के बाद उन चीजों को देता है या प्राप्त करता है, जो वह चाहता है। ये सेवाएं हमेशा वास्तविक उपयोगिताओं वाली मानी जातीं हैं, जिन्हें उनके वास्तविक तुलनात्मक मूल्य से मापा जाता है।

यही कारण है कि पहले प्रकार की सेवाएं अक्सर स्थिर होती हैं, जबकि दूसरे प्रकार की सेवाएं प्रगति के नियम का पालन करती हैं।

चूंकि सार्वजनिक सेवाओं की अतिरंजित परिवृद्धि, इस कार्य में लगने वाली ऊर्जा की बर्बादी के साथ साथ समाज में एक विनाशकारी परजीवीवाद सृजित करती है। लेकिन विचित्र बात यह है कि आर्थिक विचारधारा वाले कई आधुनिक स्कूल, इस स्वभाव का श्रेय स्वेच्छा से किए जाने वाले, निजी सेवाओं को देते हुए विभिन्न व्यवसायों द्वारा किए गए कार्यों के रूपांतरण की कोशिश करते हैं।

विचारधाराओं वाले ये स्कूल उन लोगों पर जोरदार हमला करते हैं जिन्हें वे बिचौलिए मानते हैं। वे पूंजीपतियों, बैंकरों, सट्टेबाजों, उद्यमियों, व्यवसायियों और व्यापारियों पर उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच टांग अड़ाने और किसी प्रकार का मूल्यवर्द्धन किए बिना उन दोनों को लूटने का आरोप लगाते हुए उन्हें समाप्त करने की इच्छा रखते हैं। या यों कहें कि सुधारक बिचौलियों के काम को राज्य को हस्तांतरित करना चाहेंगे, क्योंकि इस काम को समाप्त नहीं किया जा सकता है।

बिचौलियों की सेवाओं के बदले जनता द्वारा उन्हें किए जाने वाले भुगतान को उजागर करते हुए समाजवादी विचारक कुतर्क करते हैं, लेकिन वे उसे छिपा लेते हैं जो राज्य को भुगतान करना पड़ेगा। एक बार फिर हमारे मन में जो ***दिखाई पड़ता है*** और जो ***दिखाई नहीं पड़ता*** है के बीच द्वन्द उत्पन्न

होता है, जो हमारी आंखें देखती हैं और जो केवल दिमाग को समझ में आती हैं।

ऐसा विशेष रूप से वर्ष 1847 में आए अकाल के दौरान हुआ जब समाजवादी स्कूल अपने विनाशकारी सिद्धांत को लोकप्रिय बनाने में सफल रहे। वे अच्छी तरह से जानते थे कि जब लोग समस्याओं से घिरे होते हैं तब बेतुके से बेतुके मतों को भी प्रचार मिलने के कुछ अवसर बन जाते हैं; **भूख गलत बातों पर भी राजी करा लेती है**।

इसके पश्चात बड़ी बड़ी बातें जैसे कि ***इंसान द्वारा इंसान का शोषण, भूख पर सौदेबाजी, एकाधिकार*** आदि का प्रयोग कर वे व्यापार को बदनाम करने और उसके लाभों के ऊपर पर्दा डालने का काम करते हैं और उसकी मदद से स्वयं को स्थापित करने का काम करते हैं।

वे कहते हैं कि, "संयुक्त राज्य और क्रीमिया से खाद्य पदार्थों को हासिल करने का कार्य व्यापारियों पर क्यों छोड़ दें? सरकार, विभाग और नगर पालिकाएं भोजन प्रदान करने की व्यवस्था और गोदामों की स्थापना कर खाद्यान्नों का भंडारण क्यों नहीं कर सकतीं? वे उसे ***शुद्ध लागत*** पर बेचे जिससे बेचारे गरीब लोगों को राहत प्राप्त हो और उन्हें मुक्त व्यापार जो कि स्वार्थी,

व्यक्तिवादी और अराजक होते हैं, उन्हें शुल्क चुकाने से छुटकारा मिले।"

जनता व्यापारियों को जो शुल्क चुकाती है, वह ***दिखाई पड़ता है***। लेकिन जनता को समाजवादी व्यवस्था में सरकार या उसके एजेंटों को जो शुल्क देना होगा, वह ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

यह तथाकथित शुल्क है क्या जो लोग व्यापारियों को चुकाते हैं? यह इस प्रकार है किः दो लोग प्रतिस्पर्धा के दबाव में और मोलभाव के बाद तय हुई कीमत पर एक दूसरे को स्वतंत्रता पूर्वक अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं।

जब भूखे लोग पेरिस में हों और जो गेहूं उनकी भूख मिटा सकती हो वह ओडेसा में हो तो समस्या तब तक समाप्त नहीं होगी जबतक कि गेहूं भूखे पेट तक न पहुंच जाए। इस कार्य को पूरा करने के तीन तरीके हैंः पहला, भूखे लोग स्वयं ओडेसा जा कर गेहूं प्राप्त कर लें, दूसरा, वे ऐसे लोगों पर भरोसा करें जो इस प्रकार के व्यवसाय में संलग्न हैं और उनके लिए ओडेसा से गेहूं ला सकें, और तीसरा यह कि वे कीमत निर्धारित करें और स्वयं धन संग्रहित कर सरकारी अधिकारियों को यह कार्य सौंप दें।

इन तीनों तरीकों में से कौन सा तरीका सबसे ज्यादा फायदेमंद है?

सभी कालों में, सभी देशों में, जितने अधिक स्वतंत्र, जितने अधिक प्रबुद्ध, जितने अधिक अनुभवी लोग रहे हैं, उतने ही अधिक बार उन्होंने ***स्वेच्छा*** से दूसरे तरीके को चुना है। मैं यह स्वीकार करता हूं कि फायदा देने के लिए मेरी नजर में यह काफी है। मेरा दिमाग यह मानने से इंकार करता है कि मानव जाति बड़े पैमाने पर खुद को उस बिंदु पर धोखा देती है जो इसे इतनी बारीकी से छूती है।

खैर, आईए हम प्रश्न की पड़ताल करते हैं।

गेहूं की अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए छत्तीस मिलियन नागरिकों के लिए ओडेसा को प्रस्थान करना स्पष्ट रूप से अव्यवहारिक है। अर्थात, पहला तरीका किसी काम का नहीं है। उपभोक्ता स्वयं से यह कार्य नहीं कर सकते; वे बिचौलियों की ओर रुख करने के लिए मजबूर हैं, चाहे सरकारी अधिकारी हों या व्यापारी।

फिर भी, क्या पहला साधन सबसे स्वाभाविक होगा, आईए इस बात का अवलोकन करते हैं। मूल रूप से यह उस भूखे व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वो अपना गेहूं प्राप्त करे। यह एक ऐसा ***कार्य*** है जो उसे चिंतित करता है; यह एक ऐसी ***सेवा*** है जिसके लिए वह स्वयं अधिकारी है। यदि कोई और, चाहे वह कोई भी हो, उसे यह **सेवा** प्रदान करता है और उस कार्य को अपने

ऊपर लेता है, तो उस व्यक्ति को मुआवजे का अधिकार है। मैं यहां जो कह रहा हूं वह यह है कि ***बिचौलियों*** को सेवा प्रदान करने के बदले में पारिश्रमिक प्राप्त करने का अधिकार है।

अब अगर इस कारण से समाजवादी उन्हें परजीवी बुलाते हैं, जो कि हो भी सकता है, तो हमें यह पूछना चाहिए कि व्यापारी और सरकारी अधिकारी - दोनों में से कौन सबसे कम चाहत रखने वाला परजीवी है?

व्यवसाय (मैं इसे मुक्त मान कर चलता हूं, अन्यथा मेरे द्वारा प्रस्तुत तर्क में और क्या बात रह जाएगी?) अपने स्वयं के हितों के कारण, मौसमों का अध्ययन करने के लिए, फसलों की दिन प्रतिदिन की स्थिति का पता लगाने के लिए, जरूरतों का पूर्वानुमान लगाने के लिए और सावधानियां बरतने के लिए मजबूर होता है। इसके जहाज पहले से तैयार रहते हैं और इसके सहयोगी सभी जगह होते हैं। इसका तात्कालिक स्व-हित वस्तुओं की हर संभव कम से कम कीमत पर खरीदी करना, कार्यविधि के सभी विवरणों को किफायती रखना, और कम से कम प्रयास के साथ अधिक से अधिक लाभ हासिल करना है। न केवल फ्रांसीसी व्यापारी, बल्कि पूरी दुनिया के व्यापारी फ्रांस की जरूरतों को पूरा करने की कोशिशों में व्यस्त हैं, और अगर उनका स्वार्थ उन्हें कम से कम खर्च पर अपना काम पूरा करने के लिए बाध्य करता है, तो उनके बीच प्रतिस्पर्धा उन्हें इसका

लाभ उपभोक्ताओं को प्रदान करने के लिए कम मजबूर नहीं करती है। एक बार गेहूँ आ जाने के बाद, व्यवसायी की रुचि उसे जल्द से जल्द बेचकर अपने जोखिमों को कवर करने, अपने मुनाफे को हासिल करने और अवसर मिलने पर प्रक्रिया को एक बार फिर से शुरू करने में होती है। तुलना के आधार पर तय होने वाली कीमतों के द्वारा निर्देशित निजी उद्यम दुनिया भर में भोजन का वितरण करते हैं, जो कि सदैव कमी की शुरुआत में ही होता है। यानी यही वह समय होता है जब उसकी सबसे ज्यादा जरूरत महसूस की जाती है। लिहाजा, किसी ऐसे ***संगठन*** की कल्पना करना असंभव है जो भूखे लोगों के हितों की पूर्ति बेहतर गणनाओं के माध्यम से करते हैं, और इस संगठन की सुंदरता, जिसे समाजवादियों द्वारा नहीं माना जाता है, ठीक इस तथ्य से आता है कि यह मुक्त है, यानी कि स्वैच्छिक है। यह सच है कि उपभोक्ता को व्यवसायी के द्वारा माल ढुलाई, परिवहन, भंडारण, आढ़त आदि पर किए गए खर्च के बदले में भुगतान करना होगा, लेकिन एक व्यक्ति जो गेहूं का उपभोग करता है, वह किस प्रणाली के तहत व्यवसायी को माल ढुलाई के खर्च का भुगतान करने से मना करता है? इसके अतिरिक्त, ***प्रदत्त सेवा*** के लिए भी भुगतान करने की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन जहां तक बिचौलिए के हिस्से का संबंध है, प्रतिस्पर्धा के कारण यह घटकर ***न्यूनतम*** हो जाता है; और जहां तक इसके प्रति न्याय का प्रश्न है, पेरिस के कारिगरों

द्वारा मार्सिले के व्यापारियों के लिए काम नहीं करना अजीब होगा, वह भी तब जब मार्सिले के व्यापारी पेरिस के कारीगरों के लिए के लिए काम करते हैं।

यदि समाजवादी योजना के अनुसार इन लेन-देन में राज्य निजी व्यवसायियों का स्थान ले ले तो क्या होगा? प्रार्थना कीजिए, और मुझे बताइए कि जनता के लिए क्या ऐसी जगह किफायती होगी। क्या यह लेन देन खुदरा मूल्य में होगा? लेकिन कल्पना कीजिए कि किसी एक दिन विशेष पर जब गेहूं की जरूरत पड़ेगी, उस दिन चालीस हजार नगर पालिकाओं के प्रतिनिधि ओडेसा पहुंचेंगे, तो कीमत पर उसके पड़ने वाले प्रभाव की कल्पना करें। क्या माल ढुलाई का खर्च इसके किफायती होने पर कोई असर डालेगा? क्या कम पानी के जहाजों, कम नाविकों, कम लदाई और उतराई, कम गोदामों की जरूरत होगी, या क्या हमें इन सभी चीजों के भुगतान की आवश्यकता से मुक्ति मिलनी चाहिए? क्या व्यवसायियों को लाभ से होने वाली बचत पर कोई प्रभाव पड़ेगा? क्या आपके जन जनप्रतिनिधि और सरकारी अधिकारी यूं ही (बिना कुछ लिए) ओडेसा गए थे? क्या वे भाईचारे वाले प्यार के कारण यात्रा करने जा रहे हैं? क्या उन्हें आजीविका की जरूरत नहीं पड़ेगी? क्या उनके समय का भुगतान नहीं करना पड़ेगा? और क्या आपको लगता है कि यह व्यापारी द्वारा कमाए जाने वाले दो या तीन

प्रतिशत लाभ के एक हजार गुना से अधिक नहीं होगा, एक ऐसी दर जिसकी गारंटी देने के लिए वह तैयार है?

और फिर, इतना सारा भोजन वितरित करने के दौरान लगने वाले ढेर सारे करों वाली कठिनाई के बारे में सोचें। इस प्रकार के उद्यमों के साथ होने वाले अन्याय और इससे जुड़े दुर्व्यवहारों के बारे में सोचें। सोचिए कि सरकार को कितनी जिम्मेदारी का बोझ उठाना पड़ता होगा।

जिन समाजवादियों ने इन मूर्खतापूर्ण विचारों की खोज की है, और संकट के दिनों में उन विचारों को जनता के दिमाग में भरा है, वे खूब उदारतापूर्वक खुद को "आगे की ओर देखने वाले (फॉर्वड लुकिंग)" व्यक्तियों की उपाधि प्रदान करते हैं। इस भाषाई उत्पीड़न के प्रयोग का एक वास्तविक खतरा है जो शब्द और इसके द्वारा लागू होने वाले फैसलों, दोनों की पुष्टि करेगा। “आगे की ओर देखने वाले (फॉर्वर्ड लुकिंग)” मानते है कि वे आम लोगों की तुलना में बहुत आगे की देख सकते हैं और उनकी गलती सिर्फ इतनी है कि वे अपनी सदी से बहुत आगे के लोग हैं और यदि अभी वह वक्त नहीं आया है कि कुछ निश्चित निजी सेवाएं जो कथित तौर पर परजीवीवादी हैं, उनका सफाया कर दिया जाए तो यह जनता की गलती है क्योंकि वे समाजवाद से बहुत पीछे हैं। ***मेरी*** समझ और जानकारी के हिसाब से यही वह सदी है जो सही है, और मुझे नहीं पता कि इस बिंदु पर

समाजवादियों की तुलना में समझ के स्तर को हासिल करने के लिए हमें किस बर्बर सदी में लौटना चाहिए।

आधुनिक समाजवादी उपद्रवी गुट वर्तमान समाज में मुक्त संघों का लगातार विरोध करते हैं। उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि स्वतंत्र समाज ही एक सच्चा संघ है जो उन सभी में से बेहतर है जो उनकी उपजाऊ कल्पनाओं के द्वारा कपटतापूर्व तरीके से गढ़े गए होते हैं।

आइए इस बिंदु को एक उदाहरण के साथ स्पष्ट करते हैं:

एक आदमी के लिए, जब वह सुबह उठता है, तो कपड़े का एक सूट पहनने में सक्षम होने के लिए, जमीन के एक टुकड़े को एक निश्चित प्रकार की वनस्पति के साथ संलग्न करने, खाद डालने, जमीन से अतिरिक्त पानी निकालने, जुताई करने, रोपण करने, एक निश्चित प्रकार की वनस्पति को उगाने की जरूरत पड़ती है; जिन्हें भेड़ों का झुण्ड अपना निवाला बनाता है। बदले में भेड़ों को अपना ऊन देना पड़ता है। फिर इस ऊन को काता जाता है, बुना जाता है, रंगा जाता है, और कपड़े में परिवर्तित करना पड़ता है। फिर इस कपड़े को काट कर और सिल कर एक परिधान बनाया जाता है। गतिविधियों के संचालन की इस पूरी श्रृंखला में कई अन्य लोग भी शामिल होते है; क्योंकि इसमें

खेती के औजारों, भेड़शालाओं, कारखानों, कोयले, मशीनों, गाड़ियों आदि के उपयोग का पूर्वानुमान लगाया जाता है।

यदि समाज एक बहुत ही वास्तविक संघ नहीं होता तो जिस किसी को भी कपड़े से बने एक सूट की जरूरत होती, उसे पृथक रूप से काम करने के लिए मजबूर होना पड़ता, यानी कि इस श्रृंखला की असंख्य गतिविधियों के संचालन कार्य में खुद को लिप्त करना पड़ता, जिसमें कुदाल चलाने से शुरुआत कर सुई से सिलाई कर इसका समापन करना पड़ता।

लेकिन धन्यवाद, संबद्ध होने की उस तत्परता के लिए जो कि हमारी प्रजाती की विशिष्ट विशेषता है, और जिसके तहत विभिन्न कार्यों को श्रमिकों की बड़ी तादात के बीच वितरित किया जाता है। आगे ये श्रमिक सामूहिक हितों के तहत अपने आप को और अधिक उप समूहों में विभाजित कर लेते हैं। खपत के बढ़ने के साथ साथ उप समूहों में विभाजन की यह प्रक्रिया उस स्थिति तक जारी रहती है, जहां एक एकल विशेषीकृत संचालन किसी नए उद्योग की स्थापना में सहयोगी हो नहीं जाता है। फिर मुनाफे के वितरण की बारी आती है, जिसका निर्धारण कार्य को पूरा करने में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा दिए गए कुल योगदान के अनुसार होता है। अब, अगर यह संघ नहीं है, तो मुझे जानना है कि संघ आखिर क्या है?

ध्यान रहे कि चूंकि श्रमिकों में से किसी एक ने भी किसी चीज से कच्चे माल का एक छोटा सा कण भी तैयार नहीं किया, इसलिए वे एक दूसरे से पारस्परिक सेवाएं लेने और देने पर निर्भर रहे और एक उभयनिष्ठ उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक दूसरे का सहयोग किया। और इन सभी बातों पर गौर किया जाए तो पता चलेगा कि प्रत्येक समूह का दूसरे समूह से संबंध ***बिचौलियों*** की भांति ही था। उदाहरण के लिए, यदि गतिविधियों के दौरान परिवहन कार्य इतना महत्वपूर्ण हो कि उसमें एक व्यक्ति को रोजगार मिल जाए, कताई के कार्य में दूसरे को और बुनाई में तीसरे को तो पहले वाले कार्य को अन्य कार्यों से अधिक ***परजीवी*** क्यों माना जाना चाहिए? क्या परिवहन की कोई आवश्यकता नहीं है? क्या किसी कार्य को करने के लिए समय खर्चने और परेशानी उठाने की जरूरत नहीं पड़ती है? क्या इस बार और मुसीबत में वह अपने साथियों को नहीं बख्शता? क्या वे उससे ज्यादा कर रहे हैं, या बस कुछ अलग कर रहे हैं? क्या वे सभी समान रूप से अपने वेतन के संबंध में, उस कानून के अधीन नहीं हैं जो कि कार्य में उनके योगदान के हिसाब से तय होता है, और जो इसे ***मोलभाव के बाद सहमत मूल्य*** तक सीमित करता है? क्या श्रम का ऐसा विभाजन और ऐसी व्यवस्थाएं, जो पूर्ण स्वतंत्रता के साथ तय की गई हैं, सामूहिक भलाई का काम नहीं करती हैं? तो क्या हमें नियोजन के बहाने किसी समाजवादी की जरूरत है, जो आकर हमरी स्वैच्छिक

रूप से स्थापित व्यवस्थाओं को निरंकुशता पूर्वक नष्ट कर दे, श्रम के विभाजन को समाप्त कर दे, सहकारी प्रयासों को अलग-अलग किए जाने वाले प्रयासों से प्रतिस्थापित कर दे, और सभ्यता की प्रगति को उलट दे?

क्या वह संघ, संघ नहीं कहलाएगा जैसा कि ऊपर मेरे द्वारा वर्णन किया गया है, क्योंकि कोई भी इसमें स्वेच्छा पूर्वक प्रवेश कर सकता है और छोड़ कर जा सकता है, क्योंकि वह इसमें अपना स्थान और भूमिका स्वयं तय करता है, क्योंकि अपने लिए स्वयं मोलभाव करता है और उसके आधार पर निर्णय लेता है, अपनी जवाबदेही स्वयं तय करता है और अपने स्वयं के हित को सुनिश्चित करते हुए इसे खुद लागू करता है? संघ को नाम हासिल करने के योग्य बनने के लिए क्या किसी कथित सुधारक को आकर अपने तौर तरीकों और इच्छाओं को हम पर थोपना और पूरी मानव जाति के नाम पर सिर्फ अपने हित पर ध्यान केंद्रीत करना आवश्यक है?

जितना अधिक आप इन "आगे की ओर देखने वालों (फॉर्वर्ड लुकिंग)" के विचारों की जांच करेंगे, उतना ही आप आश्वस्त होते जाते हैं कि उनका आधार अज्ञानता वाली नींव पर टिका है लेकिव वो खुद को अचूक घोषित करते हैं और इस अचूकता के नाम पर निरंकुश शक्ति की मांग करते हैं।

मुझे आशा है कि पाठक इस विषयांतर को क्षमा करेंगे। लेकिन शायद यह विषयांतर उन परिस्थितियों में पूरी तरह से अनुपयोगी भी नहीं है, जब यह सीधे सेंट साइमनवादियों की किताबों, झुंडों के पैरोकारों और अति आदर्शवाद के प्रशंसकों की तरफ से आता है और बिचौलियों के खिलाफ तीखे शब्दों से प्रेस और विधानसभा को भर देता है और श्रम और विनिमय की स्वतंत्रता को गंभीर रूप से खतरे में डालता है।

7. व्यापार पर अंकुश

श्रीमान संरक्षणवादी जी (यह मैं नहीं बल्कि एम. चार्ल्स डुपिन थे जिन्होंने उन्हें यह नाम दिया था) ने अपना सारा समय और अपनी सारी पूंजी को अपनी भूमि से अयस्क प्राप्त करने और उसे लोहे में परिवर्तित करने में समर्पित कर दिया। चूंकि इस मामले में प्रकृति बेल्जियम के प्रति अधिक उदार थी, इसलिए बेल्जियम के उत्पादकों ने फ्रांस को श्रीमान संरक्षणवादी जी की तुलना में बेहतर कीमत पर लोहा बेचा। जिसका मतलब यह हुआ कि सभी फ्रांस के निवासियों को, या कहे कि फ्रांस को लोहे की निश्चित मात्रा अच्छे फ्लांडर लोगों (बेल्जियम के दक्षिणी क्षेत्र के निवासियों) से कम श्रम में ही हासिल किया जा सकता था।

इसलिए, अपने स्वार्थ से प्रेरित होकर और परिस्थितियों का पूरा फायदा उठाते हुए हर दिन बड़ी संख्या में कील बनाने वाले, धातुकर्मी, गाड़ी बनाने वाले, मिस्त्री, लोहार और हल चलाने वाले या तो खुद बेल्जियम जाते हुए दिखाई देते थे या लोहे की अपनी आपूर्ति को प्राप्त करने के लिए बिचौलियों को वहां भेज रहे थे। श्रीमान संरक्षणवादी जी को यह कतई पसंद नहीं आ रहा था।

उनका पहला विचार अपने दो हाथों से सीधे हस्तक्षेप करके इस दुरुपयोग को रोकना था। निश्चित रूप से वह ऐसा तो कम से कम कर ही सकते थे, क्योंकि नुकसान तो अकेले उन्हीं का हुआ था। मैं अपनी कार्बाइन लूंगा, उन्होंने खुद से कहा। मैं अपनी बेल्ट में चार पिस्तौल रखूंगा, मैं अपना कारतूस का डिब्बा भरूंगा, मैं अपनी तलवार पर धार लगाऊंगा और इस तरह से सुसज्जित होकर, मैं सीमा पर जाऊंगा। वहाँ मैं पहले धातुकर्मी, कील निर्माता, लोहार, मिस्त्री, या ताला बनाने वाले को मार डालूँगा जो अपने लाभ की तलाश में मेरी बजाय यहां आता है। उन्हें सबक सिखाने के लिए ऐसा करना ही होगा!

जब जाने का समय आ गया तो श्रीमान संरक्षणवादी जी के दिमाग में कुछ दूसरे विचार आने लगे, जो कुछ हद तक उनके जुझारू ललक को संतुलित करने लगे थे। उन्होंने अपने आप से कहा: सबसे पहले, यह बहुत संभव है कि लोहे के खरीदार, मेरे

साथी देशवासी और मेरे दुश्मन, नाराज हो जाए और खुद को मारने देने की बजाय, वे मुझे ही मार डालें। इसके अलावा, भले ही मेरे सभी नौकर बाहर कूच कर जाए फिर भी हम पूरी सीमा की रक्षा नहीं कर सकेंगे। अंत में, पूरी कार्यवाही मुझे बहुत अधिक महंगी और खर्चीली पड़ेगी। यह इतनी महंगी होगी कि कार्यवाही से प्राप्त होने वाला परिणाम भी इसके बराबर नहीं होगा।

श्रीमान संरक्षणवादी जी अन्य लोगों की तरह खुद भी स्वतंत्र रहने के लिए दुखी मन से खुद को इस्तीफा देने जा रहे थे, तभी अचानक उनके पास एक शानदार विचार आया।

उन्हें याद आया कि पेरिस में कानून की एक बड़ी फैक्ट्री है। ये कानून क्या चीज है? उन्होंने खुद से पूछा। यह एक ऐसा उपाय है, जिसके एक बार प्रख्यापित होने पर, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, सभी को उसका पालन करना होता है। इस कानून के क्रियान्वयन के लिए एक सार्वजनिक पुलिस बल का गठन किया जाता है, और उक्त सार्वजनिक पुलिस बल को बनाने के लिए देश से आदमी और पैसा लिया जाता है।

यदि ऐसा है, तो, मैं पेरिस की उस महान फैक्ट्री से एक छोटा और अच्छा सा कानून हासिल करने का प्रबंधन करता हूं जो यह कहता हो कि "बेल्जियम का लोहा निषिद्ध है"। इससे मुझे

निम्नलिखित परिणाम प्राप्त होंगे: सरकार उन कुछ नौकरों को बदल देगी जिन्हें मैं अपने अड़ियल धातुकर्मियों, ताला बनाने वालों, कील बनाने वालों, लोहारों, कारीगरों, यांत्रिकी और हल चलाने वालों के बीस हजार बेटों के साथ सीमा पर भेजना चाहता था। फिर, इन बीस हजार सीमा शुल्क अधिकारियों के अच्छे मानसिक और शारीरिक और स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए, उन्हीं लोहारों, कील बनाने वालों, कारीगरों और हल चलाने वालों से पच्चीस मिलियन फ्रैंक लेकर अधिकारियों में वितरित किए जाएंगे। इस तरह से संगठित होने से सुरक्षा बेहतर ढंग से संपन्न होगी और इस पर मुझे कुछ खर्च भी नहीं करना होगा। इससे मैं दलालों की क्रूरता के संपर्क में भी नहीं आऊंगा और मैं अपने दाम पर लोहा बेचूंगा। इसके अलावा मैं अपने महान लोगों को लज्जा से भरमाते हुए देखने का मधुर आनन्द भोगूंगा। यह उन्हें सिखाएगा कि वे लगातार खुद को यूरोप में होने वाली सभी प्रगतियों के अग्रदूत और प्रवर्तक घोषित करते रहें। यह एक चतुर चाल होगी, और ऐसा करने की कोशिश में होने वाली परेशानियों को झेलने के लायक है!

तो श्रीमान संरक्षणवादी जी कानून की उस फैक्ट्री में गए। (किसी और बार, शायद, मैं उनके काले, गुप्त व्यवहार की कहानी बताऊंगा; लेकिन आज मैं केवल उन कदमों के बारे में बात करना चाहता हूं जो उन्होंने खुले तौर पर उठाए ताकि सभी

उसे देख सकें।) उन्होंने अपने महानुभावों और विधायकों के समक्ष निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किया :

"बेल्जियम का लोहा फ्रांस में दस फ्रैंक की दर पर बेचा जाता है, जिसके कारण मुझे भी उसी दर पर लोहा बेचने को मजबूर होना पड़ता है। मैं इसे 15 फ्रैंक की दर से बेचना चाहता हूं लेकिन ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मौजूद बेल्जियम का लोहा सब गड़बड़ कर देता है। आप एक ऐसा कानून बनाइए जो कहता हो किः 'बेल्जियम का लोहा फ्रांस में प्रवेश न कर सके।' इसके तत्काल बाद में अपने लोहे की कीमत में पांच फ्रैंक का इज़ाफा कर दूंगा, जिनके निम्नलिखित परिणाम होंगेः

'प्रति सौ किलोग्राम लोहा जो मैं जनता को बेचूंगा तो दस फ्रैंक के बदले मुझे 15 फ्रैंक प्राप्त होंगे। ऐसा करके मैं बहुत जल्दी अमीर बन जाऊंगा। और फिर मैं अपने खादानों के दोहन को और विस्तारित कर दूंगा जिससे अधिक से अधिक लोगों को रोजगार दे सकूंगा। मैं और मेरे कर्मचारी अधिक खर्च करेंगे जिससे आपूर्तिकर्ताओं और आस पास के हजारों लोगों को फायदा होगा। इन आपूर्तिकर्ताओं को बड़ा बाजार मिलेगा और वे उद्योगों को उत्पादन के लिए अधिक ऑर्डर देंगे, जिससे धीरे धीरे यह प्रक्रिया पूरे देश भर में फैल जाएगी।"

इस प्रवचन को सुनकर, कानूनों के निर्माता मंत्रमुग्ध हो गए। उन्हें लगा कि लोगों की संपत्ति को केवल कानून द्वारा बढ़ाना तो बड़ा आसान है और इसलिए उन्होंने प्रतिबंध के पक्ष में मतदान कर दिया। उन्होंने कहा कि "श्रम और बचत जैसे कष्टकारी तरीकों के बारे में क्या बात करना जब राष्ट्रीय संपत्ति को बढ़ाने के लिए बस एक फरमान जारी करने से ही काम हो जाता है?"

और, वास्तव में, कानून के सभी परिणाम जिनकी भविष्यवाणी श्रीमान संरक्षणवादी जी द्वारा की गई थी, वे सही थे। लेकिन, चूंकि श्रीमान संरक्षणवादी ने जो कुछ तर्क दिए थे, वे झूठे नहीं थे पर अधूरे अवश्य थे इसलिए उपरोक्त परिणामों के अलावा कुछ अन्य परिणाम भी उत्पन्न हुए। विशेषाधिकार की माँग करते हुए, उन्होंने उन्हीं बिंदूओं को दर्शाया जिनके प्रभाव ***दिखाई पड़ते थे***, और स्याह पक्ष वाले प्रभाव जो ***दिखाई नहीं पड़ते थे***, उन्हें छोड़ दिया गया था। उन्होंने तस्वीर में केवल दो लोगों को दिखाया था, जबकि वास्तव में तस्वीर में तीन लोग थें। इस चूक को सुधारना हमारा काम है, चाहे वह अनैच्छिक हो या पूर्व नियोजित।

हां, इस प्रकार पांच फ़्रैंक का टुकड़ा विधायी रूप से श्रीमान संरक्षणवादी जी के खजाने की ओर प्रवाहित होने लग गया, जिससे उनको और इस कारण नौकरी पाने वालों को मुनाफा प्राप्त होने की व्यवस्था हो गई। लेकिन यदि फरमान जारी कर

देने भर के कारण ही पांच फ्रैंक के टुकड़े चांद से उतर कर नीचे आ गए होते तो इन अच्छे प्रभावों के आगे किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव टिक नहीं पाते। किंतु दुर्भाग्य से, रहस्यमय सौ साउस चांद से नीचे नहीं आए, बल्कि किसी धातुकर्मी, किसी कील बनाने वाले, किसी गाड़ी बनाने वाले, किसी लोहार, किसी हल चलाने वाले, किसी बिल्डर की जेब से निकाले गए थे। एक शब्द में कहें तो, ये पैसे जेम्स गुडफेलो जैसे व्यक्ति की जेब से निकाले गए, जिसका भुगतान दस फ्रैंक का भुगतान कर प्राप्त होने वाले लोहे की तुलना में एक मिलीग्राम भी अधिक लोहा प्राप्त किए बिना ही किया गया। यह तुरंत ही स्पष्ट हो जाता है कि प्रश्न अब निश्चित रूप से बदल गया है, क्योंकि, जाहिर तौर पर, श्रीमान संरक्षणवादी जी का लाभ जेम्स गुडफेलो के ***नुकसान*** से संतुलित है, और घरेलू उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए जो कुछ भी श्रीमान संरक्षणवादी जी पांच फ्रैंक के इस टुकड़े के साथ करने में सक्षम होंगे, उसे जेम्स गुडफेलो भी कर सकता था। झील के किसी एक बिंदु पर पत्थर केवल इसलिए फेंके जाते हैं क्योंकि कानून द्वारा दूसरे बिंदू पर पत्थर फेंकने से मना किया गया होता है।

इस प्रकार, जो दिखाई नहीं पड़ता है वह उससे संतुलित होता है जो दिखाई पड़ता है, और इस पूरी कार्यवाही का जो नतीजा

अन्याय के तौर पर निकल कर आता है। यह दुखद इसलिए भी है क्योंकि यह अपराध कानून के द्वारा किया गया होता है।

लेकिन यह बस इतना ही नहीं है। मेरा कहना है कि तस्वीर में हमेशा से एक तीसरा व्यक्ति भी था जो अंधेरे में रहता था। मुझे उसे यहाँ प्रकट करना चाहिए, ताकि वह हमें पाँच फ़्रैंक के दूसरे नुकसान के बारे में बता सके। तभी हमारे सामने कार्यवाही के परिणाम समग्र रूप में निकल कर आएंगे।

जेम्स गुडफेलो के पास पंद्रह फ़्रैंक हैं, जो उसके परिश्रम का फल है। (हम उस समय की बात कर रहे हैं जब वह अभी भी स्वतंत्र है) वह अपने पंद्रह फ़्रैंक के साथ क्या करता है? वह दस फ़्रैंक में एक मिलिनरी (महिलाओं के लिए खास तौर पर तैयार हैट) खरीदता है, और इस मिलनरी के लिए वह सौ किलोग्राम बेल्जियम के लोहे के बराबर की कीमत का भुगतान करता है (या उसका बिचौलिया उसकी तरफ से भुगतान करता है)। उसके पास अभी भी पाँच फ़्रैंक बचे हैं। वह उन्हें नदी में नहीं फेंकता है, बल्कि (और यही वह है जो ***दिखाई नहीं पड़ता*** है) वह उन्हें किसी अन्य वस्तु का निर्माण करने वाले को देता है और उसके बदले में कुछ प्रतिफल (संतुष्टि) प्राप्त करता है - जैसे कि वह किसी प्रकाशक से पांच फ़्रैंक के बदले में बॉसुएट द्वारा लिखित ***डिस्कोर्स ऑन यूनिवर्सल हिस्ट्री*** की एक प्रति खरीदता है।

इस प्रकार, उसने घरेलू उद्योग को पंद्रह फ्रैंक के बराबर का प्रोत्साहन प्रदान किया, अर्थात्

पेरिस के मिलिनर को दस फ्रैंक का प्रोत्साहन
प्रकाशक को 5 फ्रैंक का प्रोत्साहन

और जहां तक जेम्स गुडफेलो की बात है, तो उसे अपने पंद्रह फ्रैंक के बदले दो प्रतिफल (संतुष्टि) प्राप्त हुए, अर्थात्

1. सौ किलोग्राम लोहा
2. एक पुस्तक

जेम्स गुडफेलो के साथ क्या हुआ? घरेलू उद्योग का क्या हुआ?

जेम्स गुडफेलो, श्रीमान संरक्षणवादी जी को पूरे सेंटाइम (फ्रांसीसी सिक्के) गिनकर पंद्रह फ्रैंक चुकाते हैं और बदले में सौ किलोग्राम लोहा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार अब उस लोहे का प्रयोग करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। अब वह एक पुस्तक पढ़ने या उसके समान किसी अन्य वस्तु का आनंद उठाने का अवसर खो देते हैं। वे पूरे 5 फ्रैंक खो देते हैं। आप इससे सहमत हैं न, आप तब इससे असहमत हो ही नहीं सकते हैं जब व्यापार पर अंकुश लगने से कीमतों में वृद्धि होती है और इस कारण उपभोक्ता को कीमतों के बीच के फर्क का नुकसान उठाना पड़ता है।

लेकिन ऐसा कहा जाता है कि ***घरेलू उद्योग*** को कीमतों के बीच के फर्क का लाभ होता है।

नहीं, ऐसा नही है। उद्योगों को इसका लाभ नहीं होता है क्योंकि फरमान जारी होने के बाद भी उसे सिर्फ पंद्रह फ्रैंक का प्रोत्साहन ही प्राप्त हो रहा होता है, जो कि उसे पहले भी प्राप्त होता था।

हां, फरमान जारी होने के बाद अब जेम्स गुडफेलो का पंद्रह फ्रैंक सिर्फ धातु उद्योग को ही जाता है, जबकि फरमान के पहले वे पंद्रह फ्रैंक मिलिनरी (महिलाओं के लिए खास हैट बनाने वाले सेक्टर) और प्रकाशन के बीच विभक्त होता था।

श्रीमान संरक्षणवादी जी का वह बल जिसका प्रयोग वह सीमा पर स्वयं कर सकते हैं या जिसका प्रयोग कर वह अपने हित में कानून बनवाने में कर सकते हैं, उसका आंकलन नैतिक दृष्टिकोण से काफी अलग तरीके से किया जा सकता है। ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो सोचते हैं कि लूटपाट जैसे गैर कानूनी काम जब कानूनी तमगा प्राप्त कर लेते हैं तो उनकी सारी अनैतिकता समाप्त हो जाती है। व्यक्तिगत रूप से, मैं इससे अधिक भयावह स्थिति की कल्पना नहीं कर सकता। हालाँकि ऐसा हो सकता है, लेकिन एक बात तो निश्चित है, और वह यह है कि दोनों स्थितियों में आर्थिक परिणाम समान ही होते हैं।

आप प्रश्न को अपनी पसंद के किसी भी दृष्टिकोण से देख सकते हैं, लेकिन यदि आप इसे निष्पक्ष रूप से जांचते हैं, तो आप देखेंगे कि लूटपाट से कोई लाभ नहीं हो सकता है, भले ही यह कानूनी हो या गैर कानूनी। हम इस बात से इनकार नहीं करते हैं कि इससे श्रीमान संरक्षणवादी जी या उनके उद्योग को, या आपकी पसंद के किसी अन्य घरेलू उद्योग को, पांच फ्रैंक का लाभ हो सकता है। लेकिन हम पुष्टि करते हैं कि इससे दो नुकसान भी होंगे: पहला नुकसान जेम्स गुडफेलो को होगा, जो उस वस्तु के लिए अब लिए पंद्रह फ्रैंक का भुगतान करता है जो उसे पहले दस फ्रैंक में प्राप्त होता था। दूसरा नुकसान उस घरेलू उद्योग को होगा, जिसे अब कीमतों के फर्क का फायदा प्राप्त नहीं होता है। अपनी पसंद का चुनाव करें कि इन दोनों में से कौन सा नुकसान उस लाभ की भरपाई करता है जिसे हम स्वीकार करते हैं। जिसे आप नहीं चुनते हैं वह किसी ***पूर्ण हानि*** से कम नहीं है।

शिक्षा: बल प्रयोग करना उत्पादन करना नहीं है, बल्कि नष्ट करना है। अगर बल प्रयोग करना, उत्पादन करना होता तो फ्रांस आज के कहीं ज्यादा अमीर होता।

8. मशीन

"बुरा हो मशीनों का! हर साल उनकी बढ़ती ताकत लाखों मजदूरों से उनकी नौकरी छीन लेती है। नौकरी चले जाने से उनकी मजदूरी खत्म हो जाती है और मजदूरी खत्म होने से उनके समक्ष आजीविका का संकट उत्पन्न हो जाता है! बुरा हो मशीनों का!"

यह अज्ञानता से युक्त पूर्वाग्रह से उठने वाला रूदन है, जिसकी प्रतिध्वनि अखबारों में गूंजती है।
क्योंकि मशीनों को लानत भेजने का मतलब मनुष्य के दिमाग को लानत भेजना है!

जो बात मुझे उलझन में डालती है, वह यह है कि ऐसे किसी व्यक्ति मिलना संभव भी है जो इस तरह के सिद्धांत से संतुष्ट हो सकता है।

क्योंकि, यदि यह सत्य है तो पिछले विश्लेषण का पूर्णतया तार्किक निष्कर्ष क्या निकलता है? यह वह गतिविधि, खुशहाली, धन और सौभाग्य है जो केवल मूर्ख और मानसिक रूप से अगतिशील राष्ट्रों के लिए संभव है, जिन्हें भगवान ने सोचने, समझने, निरूपित करने, अविष्कार करने, और कम से कम परेशानी के साथ महान परिणामों को हासिल करने का विनाशकारी उपहार प्रदान नहीं किया है। इसके विपरीत

चिथड़े, टूटी फूटी झोपड़ियां, निर्धनता, और विकासहीनता हर उस राष्ट्र का अपरिहार्य हिस्सा है जो अपने स्वयं के संसाधनों के अतिरिक्त लोहे में, आग में, हवा में, बिजली में, चुंबकत्व में - एक शब्द में कहें तो प्राकृतिक शक्तियों में - रसायनों और यांत्रिकी के नियमों को ढूंढता है और उसे हासिल करता है। दरअसल, रूसों के साथ यह कहना उचित होगा कि "हर आदमी जो सोचता है वह एक भ्रष्ट जानवर है।"

लेकिन यह सब बस इतना ही नहीं है। यदि यह सिद्धांत सत्य है, कि सभी लोग सोचते हैं और आविष्कार करते हैं (क्योंकि पहले व्यक्ति से लेकर अंतिम व्यक्ति तक सभी, अपने अस्तित्व के अंतिम क्षण तक, प्रकृति की शक्तियों को नियंत्रित कर अपने साथ सहयोग करने की इच्छा रखते हैं, ताकि कम से कम प्रयास में अधिक से अधिक हासिल किया जा सके, अर्थात् स्वयं के अथवा जिन्हें वे भुगतान करते हैं, उनके शारीरिक श्रम को कम से कम करने के लिए, जिससे कि जितना संभव हो सके उन्हें कम से कम मात्रा में श्रम करना पड़े और अधिकतम संभव संतुष्टि प्राप्त हो सके) तो क्या हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि प्रगति करने की अपनी इसी बुद्धिमता से युक्त आकांक्षा के कारण सभी मानव जाति पतन के रास्ते पर है, और यह समाज के सभी लोगों को कष्ट प्रदान करने वाली प्रतीत होती है।

इसलिए, इसे सांख्यिकीय रूप से स्थापित करना होगा कि लैंकेस्टर के निवासी, उस मशीन-ग्रस्त देश से भागकर, आयरलैंड में रोजगार की तलाश में जाते हैं, जहां मशीनों के बारे में लोगों को जानकारी नहीं है; और, ऐतिहासिक रूप से, बर्बरता की छाया सभ्यता के युगों को अंधकारमय कर देती है, और वह सभ्यता अज्ञानता और बर्बरता के समय में फलती-फूलती है।

अंतर्विरोधों के इस समूह में निसंदेह कुछ ऐसा है जो हमें झकझोर देता है और चेतावनी देता है कि समस्या के भीतर ही समाधान के लिए आवश्यक तत्व छिपे होते हैं जो कि पर्याप्त रूप से उजागर नहीं हुए होते हैं।

सारा रहस्य इस सिद्धांत में समाहित है कि ***जो दिखाई पड़ता है*** उसके पीछे वह छिपा होता है ***जो दिखाई नहीं पड़ता है***। मैं उस पर कुछ प्रकाश डालने की कोशिश करने जा रहा हूं। मेरी प्रस्तुति पिछली प्रस्तुति की पुनरावृत्ति के अलावा और कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि समस्या वही है।

मोलभाव करना इंसान का यह स्वाभाव होता है और यह तब तक रहता है जब तक कि उन्हें बलपूर्वक नहीं रोका जाता है। अर्थात, किसी ऐसी चीज के लिए, जो समान संतुष्टि प्रदान करने वाली हों, पर उनके श्रम में बचत करती हों - फिर यह मोलभाव

उन्हें चाहे सक्षम ***विदेशी निर्माता*** से करना पड़े या किसी सक्षम ***यांत्रिक निर्माता*** से।

इस झुकाव के खिलाफ जो सैद्धांतिक आपत्ति उठाई जाती है, वह दोनों मामलों में एक ही है। पहले की ही भांति अन्य में भी इसी बात की उलाहना दी जाती है कि इससे नौकरियों में कमी होती है। हालाँकि, इसका वास्तविक प्रभाव नौकरियों को कम करना नहीं है, बल्कि पुरुषों के श्रम को अन्य नौकरियों के लिए ***मुक्त*** करना है।

और इसीलिए, व्यवहार में, दोनों मामलों में एक ही प्रकार की बाधा उत्पन्न की जाती है - बल का प्रयोग। विधायक विदेशी प्रतिस्पर्धा को ***प्रतिबंधित*** करता है और यांत्रिक प्रतिस्पर्धा को ***मना*** करता है। सभी व्यक्तियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति का गला घोंटने का इससे अच्छा उपाय और क्या हो सकता है कि उनकी स्वतंत्रता छीन ली जाए?

कई देशों में, यह सच है कि विधायक इस प्रकार की प्रतियोगिता में से केवल एक पर हमला करता है और खुद को दूसरे के बारे में बड़बड़ाने तक सीमित रखता है। इससे यही सिद्ध होता है कि इन देशों में विधायिका विसंगतियों से युक्त है।

इसे लेकर हमें ज्यादा आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। झूठ के रास्ते पर विसंगतियां हमेशी होती है। यदि ऐसा नहीं होता, तो

मानव जाति नष्ट हो जाती। हमने कभी किसी झूठे सिद्धांत को पूरी तरह से लागू होते नहीं देखा और न कभी देखेंगे। मैंने पहले भी कहा है कि बेतुकापन जो है वह असंगति का चरम है। मैं आगे जोड़ना चाहूंगा कि यही इसका प्रमाण भी है।

आइए हम अपनी प्रस्तुति को जारी रखें; यह अधिक लंबा नहीं होगा। जेम्स गुडफेलो के पास दो फ्रैंक थे जिनसे उनके दो कर्मचारियों की कमाई हुई।

लेकिन अब मान लीजिए कि वह रस्सियों और बाटों की एक ऐसी व्यवस्था करता है जिससे काम आधा हो जाएगा।

इस प्रकार वह समान मात्रा में संतुष्टि प्राप्त करते हुए एक फ्रैंक की बचत करते हैं और एक कर्मचारी को कार्य मुक्त कर देते हैं।

वह एक कर्मचारी को कार्यमुक्त कर देते हैं, यह वह है ***जो दिखाई पड़ता है***।

अब केवल इसे देखकर लोग कहेंगे, 'देखिए, सभ्यता अपने साथ कितनी मुसीबतें लेकर आती है! देखिए, समानता के लिए आजादी कितनी घातक है! मनुष्य के दिमाग ने जैसे ही जीत हासिल की, तत्काल ही एक कर्मचारी को हमेशा के लिए निर्धनता की खाई में गिरना पड़ गया। संभवतः जेम्स गुडफेलो

दोनों कर्मचारियों को काम पर रखना जारी रख सकते हैं, लेकिन अब वह किसी को भी दस सोउस से अधिक पगार नहीं देंगे क्योंकि अब दोनों एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करेंगे और अपनी सेवाएं कम दर पर ही उपलब्ध कराएंगे। यही वो कारण है कि अमीर अमीर होते जाते हैं जबकि गरीब और गरीब होते जाते हैं। हमें समाज का पुनर्निर्माण करना ही होगा।'

यह एक अच्छा निष्कर्ष, या शुरुआती प्रस्तावना के योग्य हो सकता है!

लेकिन दुर्भाग्य से, प्रस्तावना और निष्कर्ष दोनों ही झूठे हैं, क्योंकि घटना के पीछे की आधी चीजें वह हैं ***जो दिखाई पड़ती हैं***, और आधी चीजें वो हैं ***जो दिखाई नहीं पड़ती हैं***।

जेम्स गुडफेलो द्वारा बचाए गए फ्रैंक और इस बचत के आवश्यक प्रभाव दिखाई नहीं पड़ते हैं।

चूंकि, अपने स्वयं के आविष्कार के परिणामस्वरूप, जेम्स गुडफेलो प्राप्त होने वाली किसी संतुष्टि के लिए लगने वाले शारीरिक श्रम के लिए एक से अधिक फ्रैंक खर्च नहीं करते हैं, जिससे उनके पास एक और फ्रैंक बचा रह जाता है।

होता यह है कि किसी स्थान पर कोई बेरोजगार मजदूर बाजार में अपना श्रम बेचने के लिए तैयार रहता है तो कहीं कोई

पूंजीपति अपने पास पड़े निरुपयोगी फ्रैंक को श्रम के बदले खर्च करने को तैयार रहता है। इन दोनों अव्यवों की मुलाकात होती है और दोनों समाहित हो जाते हैं।

और यह शीशे की तरह साफ है कि श्रम की आपूर्ति और मांग के बीच, आपूर्ति और मजदूरी की मांग के बीच के संबंध यथावत हैं और किसी भी तरह से बदले नहीं हैं।

आविष्कार और वह कर्मचारी (जिसका भुगतान पहले फ्रैंक के साथ किया जाता था) दोनों अब साथ मिल कर वह काम करते हैं जो पहले दो श्रमिकों द्वारा किया जाता था।

दूसरा कर्मचारी (जिसे दूसरे फ्रैंक से भुगतान किया जाता था) कुछ नया कार्य करता है।

फिर दुनिया में क्या बदल गया? राष्ट्र को एक ही चीज से संतुष्टि मिलती है, जिसे यदि एक शब्द में कहें तो, आविष्कार एक ऐच्छिक विजय है, जो मानव जाति के ऐच्छिक लाभ के लिए ही होता है।

जिस रूप में मैंने अपनी प्रस्तुति दी है, उससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं:

“मशीनों के अविष्कार के कारण होने वाले सभी लाभों का फायदा पूंजीपतियों को ही प्राप्त होता है। श्रमिक वर्ग को (जिसे

कि उनके कारण परेशानी का सामना करना पड़ता है, यद्यपि अस्थाई रूप से ही सही) उससे कभी कोई फायदा नहीं मिलता है। क्योंकि आपके स्वयं के कहे अनुसार, यह सच है कि वे राष्ट्र के उद्योग के एक हिस्से को बिना ***बर्बाद*** किए पुनः आवंटित करते हैं, लेकिन यह भी कि वे ऐसा इसमें कोई ***वृद्धि*** किए बिना ही करते हैं।"

यह इस निबंध के कार्यक्षेत्र में शामिल नहीं है कि वह सभी आपत्तियों का जवाब दे। इसका एक मात्र उद्देश्य अज्ञानता से युक्त उन पूर्वाग्रहों का विरोध करना है जो काफी खतरनाक हैं और जिनका प्रसार दूर दूर तक है। मेरी इच्छा इस बात को सिद्ध करने की थी कि प्रत्येक नई मशीन के आने से, एक निश्चित संख्या में कामगारों को अन्य कार्य की तलाश करनी पड़ती है, लेकिन उसी दौरान वह उन मजदूरों को भुगतान करने के लिए धन को भी ***आवश्यक*** रूप से उपलब्ध कराती है। अंततः ये कामगार और यह धन साथ मिलकर उस वस्तु का उत्पादन करते हैं जिनका अस्तित्व में आना उस अविष्कार के पहले असंभव था। इससे यह स्पष्ट होता है कि ***किसी अविष्कार की अंतिम परिणति श्रम की समान मात्रा में संतुष्टि के स्तर में वृद्धि करने वाली होती है।***

संतुष्टि के अतिरेक का फायदा कौन उठाता है?

जी हां, इसका सबसे पहला फायदा उस पूंजीवादी, उस अविष्कारक, और उस व्यक्ति को प्राप्त होता है जो मशीन का सफलता पूर्वक प्रयोग करता है। यह वह पुरस्कार है जो उनकी बुद्धिमत्ता और उनके साहस का प्रतिफल है। इस मामले में, जैसा कि हमने अभी देखा, वह उत्पादन की लागत में बचत करने का अनुभव करता है, जो कि इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि उसे किस प्रकार खर्च किया जाएगा (और हमेशा यही होता है) और इस बचत से उतने ही हाथों को रोजगार प्राप्त होता है जितने हाथ मशीन के कारण बेरोजगार हुए होते हैं।

लेकिन जल्द ही प्रतिस्पर्धा उसे होने वाली अतिरिक्त बचत के कारण अपने विक्रय मूल्य को कम करने के लिए मजबूर करती है।

और फिर यह लाभ सिर्फ आविष्कारक तक ही सीमित नहीं रह जाता है जो कि उस आविष्कार का लाभ उठाता है; बल्कि यह उत्पाद के खरीदार, उपभोक्ता, जनता और श्रमिकों के साथ साथ एक शब्द में कहें तो पूरी यह मानव जाति को प्राप्त होता है।

और जो चीज ***दिखाई नहीं पड़ती है*** वह उन सभी उपभोक्ताओं द्वारा प्राप्त की गई बचत है जिससे कि एक कोष

का निर्माण होता है जिसमें से उन लोगों के लिए मजदूरी की राशि निकाली जा सकती है, जो मशीन के कारण बेरोजगार हो गए थे।

इस प्रकार (पूर्व में दिए गए उदाहरण को फिर से लेते हुए), जेम्स गुडफेलो को किसी एक उत्पाद को प्राप्त करने के लिए उसकी मजदूरी पर दो फ्रैंक खर्च करते हैं।

धन्यवाद, उस आविष्कार को, जिसके कारण शारीरिक श्रम के लिए अब उन्हें केवल एक फ्रैंक खर्च करना पड़ता है।

जब तक वह उत्पाद को उसी कीमत पर बेचता है, तब तक इस विशेष उत्पाद को बनाने में एक श्रमिक कम कार्यरत होता है: यही ***दिखाई पड़ता है***; लेकिन वहां एक कर्मचारी अधिक था, जिसपर एक फ्रैंक अतिरिक्त खर्च करना पड़ता था, जिसे जेम्स गुडफेलो ने बचाया वह ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

घटनाओं के स्वाभाविक क्रम वाली स्थिति में, जब जेम्स गुडफेलो द्वारा उत्पाद की कीमत को एक फ्रैंक तक कम कर दिया जाता है, तो उसे अब बचत प्राप्त नहीं होती है; और इस प्रकार, वह अब नए उत्पादन हेतु राष्ट्रीय रोजगार के लिए एक फ्रैंक जारी नहीं करता है। लेकिन जो कोई भी उसके स्थान पर आता है, वह करता है। जो कोई भी उत्पाद को खरीदता है वह एक फ्रैंक कम भुगतान करता है और इस प्रकार एक फ्रैंक की

बचत करता है। अब इस बचत को वह आवश्यक रूप से मजदूरी के लिए कोष के हवाले कर देता है; यह वही है जो फिर से ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

इस समस्या के एक और समाधान को जो तथ्यों पर आधारित है, उसे उन्नत किया गया है।

किसी ने कहा है: "मशीन उत्पादन में आने वाले खर्च को कम करती है और उत्पाद की कीमत को कम करती है। कीमत कम होने से खपत में वृद्धि होती है, जिससे उत्पादन में वृद्धि की आवश्यकता होती है, और अंत में, आविष्कार से पहले जितने श्रमिकों का उपयोग होता था उतने ही - या उससे भी अधिक श्रमिकों की जरूरत पड़ने लगती है।" इस तर्क के समर्थन में वे छपाई, कताई, प्रेस आदि का हवाला देते हैं।

यह प्रस्तुति वैज्ञानिक नहीं है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि, यदि किसी उत्पाद विशेष के उपभोग की मात्रा पहले के बराबर या उसके आस पास भी रहती है तो मशीन रोजगार के लिए नुकसान दायक है, ऐसा बिल्कुल नहीं है।

मान लीजिए कि एक देश में सभी पुरुष हैट पहनते हैं। यदि किसी मशीन की सहायता से हैट की कीमत घटकर आधी हो

जाती है, तो यह ***जरूरी*** नहीं है कि खरीदे जाने वाले हैट की संख्या दोगुनी हो जाएगी।

ऐसी स्थिति में क्या यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र की श्रम शक्ति का एक हिस्सा बेरोजगार हो गया है? हां! अज्ञानता से युक्त तार्किकता के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन मेरे हिसाब से नहीं! भले ही उस देश का कोई भी निवासी एक भी अतिरिक्त हैट ना खरीदे, फिर भी मजदूरी के लिए बना कोष पूरी तरह से बरकरार रहेगा। जो भी धनराशि हैट उद्योग को जाने से बचेगी वह बचत वाले हिस्से में आएगी जो उस श्रम शक्ति के काम आएगी जो मशीन के आने के कारण अनावश्यक हो गई थी, क्योंकि अब नए उद्योगों के लिए प्रोत्साहन का अवसर तैयार होगा।

और वास्तव में, काम इसी तरह से होते हैं। मैंने 80 फ्रैंक की कीमत के समाचार पत्र देखे हैं; जो अब 48 फ्रैंक में बिकते हैं। ग्राहकों के लिए यह 32 फ्रैंक की बचत है। यह निश्चित नहीं है और अनिवार्य भी नहीं कि बचे 32 फ्रैंक का उपयोग अतिरिक्त समाचार पत्र खरीदने अथवा खबर प्राप्त करने के कार्य में ही हो। लेकिन जो निश्चित है, और जो अपरिहार्य है, वह यह है कि यदि वे इस कार्य में खर्च नहीं हो रहे हैं, तो दूसरे कार्य में खर्च होंगे। एक फ्रैंक का उपयोग और अधिक समाचार पत्र खरीदने के लिए, दूसरे फ्रैंक का उपयोग अधिक भोजन के लिए, तिसरे

फ्रैंक का उपयोग बेहतर कपड़ों के लिए, चौथे फ्रैंक का उपयोग बेहतर फर्नीचर खरीदने के लिए किया जाएगा।

इस प्रकार, सभी उद्योग एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं। वे एक विशाल नेटवर्क बनाते हैं जिसमें सभी लाइनें गुप्त चैनलों द्वारा संचार करती हैं। एक उद्योग में जो बचत होती है उससे सभी को लाभ प्राप्त होता है। एक चीज जिसे स्पष्ट रूप से समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है वह यह है कि नौकरियों और मजदूरी में वृद्धि से अर्थव्यवस्थाएं कभी भी प्रभावित नहीं होती हैं।

9. कर्ज

वैसे तो कर्ज का सार्वभौमीकरण कर धन के सार्वभौमीकरण करने का सपना लोग हमेशा से देखते रहे हैं, लेकिन पिछले कुछ वर्षों के दौरान इसमें काफी बढ़ोतरी हुई है।

मैं पूरे यकीन से कहता हूं और यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि फरवरी क्रांति के बाद से, पेरिस की प्रेस ने ***सामाजिक समस्या*** के इस समाधान की प्रशंसा करते हुए दस हजार से अधिक ब्रोशर प्रकाशित किए हैं।

लेकिन अफसोस, इस समाधान की नींव किसी और चीज पर नहीं बल्कि महज दृष्टि भ्रम पर आधारित है। अब दृष्टि भ्रम किसी चीज के लिए कहां तक नींव के रूप में काम कर सकता है।

इन लोगों की शुरुआत संपदा आधारित मुद्रा (हार्ड मनी) को उत्पादों के साथ भ्रमित करके होती है; फिर वे प्रचलित मुद्रा (पेपर मनी) को संपदा आधारित मुद्रा के साथ भ्रमित करते हैं; और फिर वे इन दोनों भ्रमों को मिलाकर एक तथ्य प्रतिपादित करने का दावा करते हैं।

इस प्रश्न में पैसे, सिक्के, बैंक नोट और अन्य माध्यमों को भूल जाना नितांत आवश्यक है, जिसके द्वारा उत्पाद एक हाथ से दूसरे हाथ तक जाते हैं, ताकि केवल उन उत्पादों को देखा जा सके, जो कर्ज के लिए वास्तविक पदार्थ का गठन करते हैं।

क्योंकि जब कोई किसान हल खरीदने के लिए पचास फ्रैंक उधार लेता है, तो वह वास्तव में वह पचास फ्रैंक नहीं होता है जो उसे उधार दिया जाता है; दरअसल, उधार वह हल होता है।

और जब कोई व्यापारी घर खरीदने के लिए बीस हजार फ्रैंक उधार लेता है, तो उस पर बीस हज़ार फ्रैंक का बकाया नहीं होता है; बल्कि उस पर घर बकाया होता है।

पैसे का अभिर्भाव केवल कई पक्षों के बीच व्यवस्था को सुविधाजनक बनाने के लिए ही होता है।

पीटर को हल उधार देने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता है, लेकिन जेम्स अपने पैसे उधार देने के लिए तैयार हो सकता है। तब विलियम क्या करता है? वह जेम्स से पैसे उधार लेता है, और इस पैसे से वह पीटर से हल खरीदता है।

लेकिन वास्तव में पैसे के लिए कोई पैसे उधार नहीं लेता है।

हम पैसे उधार लेते हैं वस्तुओं के लिए।

अब, किसी भी देश में वस्तुओं की वास्तविक मात्रा से अधिक मात्रा का एक हाथ से दूसरे हाथ तक हस्तांतरित करना संभव नहीं।

संपदा आधारित मुद्रा (हार्ड मनी) और प्रचलित मुद्रा (पेपर मनी/ बिल) की चाहे कितनी भी अधिक मात्रा प्रचलन में हो, कर्जदार दोनों को मिलाकर भी महाजन के पास उपलब्ध हलों, घरों, उपकरणों, खाद्यान्नों या कच्चे माल की वास्तविक संख्या/ मात्रा से अधिक उधार नहीं ले सकता।

इसलिए हमें अपने दिमाग में यह बात अच्छे से बैठा लेनी चाहिए कि प्रत्येक कर्जदार कर्जदाता के बारे में पूर्वानुमान लगा लेता है कि प्रत्येक उधार का अर्थ कर्ज होता है।

यह सब स्कीकृत होने के बाद, अब ऋण प्रदाता संस्थाओं (क्रेडिट इंस्टिट्यूशंस) के लिए क्या काम बाकी रह जाता है?

वे कर्जदारों और कर्जदाताओं की एक दूसरे से मुलाकात कराने और आपसी सहमति तैयार करने के काम को आसान बनाने में मदद कर सकते हैं। लेकिन, वे जो नहीं कर सकते हैं वो यह है कि वे उधार लेने और देने वाली वस्तुओं की संख्या को तत्काल बढ़ा नहीं सकते हैं।

हालांकि, ऋण प्रदाता संस्थाओं को सिर्फ ऐसा ही करना होगा ताकि समाज सुधारकों की पहुंच को समाप्त किया जा सके, क्योंकि इन भद्रजनों को सभी इच्छुक लोगों को हल, मकान, उपकरण, खाद्यान्न और कच्चा माल दे देने से कम कुछ भी मंजूर नहीं होता

और यह कैसे संभव होगा, इस बाबत उनका विचार क्या है? ऋणों को सरकार की गारंटी दिलाकर।

चलिए, इस मामले की गहराई से पड़ताल करते हैं, क्योंकि यहां कुछ ऐसा है जो ***दिखाई पड़ता है*** और कुछ ऐसा है जो **दिखाई नहीं पड़ता है**। आइए दोनों को देखने का प्रयास करते हैं।

मान लीजिए कि दुनिया में मात्र एक हल ही है और दो किसानों को उस हल की आवश्यकता है।

पीटर ही फ्रांस का एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास एक हल है। जॉन और जेम्स दोनों उस हल को उधार लेना चाहते हैं। हल को उधार पर लेने के लिए जॉन बतौर गारंटी अपनी ईमान्दारी, अपनी संपत्ति, और अपनी इज्जत की पेशकश करता है। लोग उसका ***विश्वास*** करते हैं और इलाके में उसकी ***प्रतिष्ठा*** है। जेम्स विश्वास उत्पन्न नहीं कर पाता है और हर हाल में कम भरोसेमंद प्रतीत होता है। जाहिर है कि पीटर अपना हल जॉन को ही उधार में देगा।

लेकिन अब, एक समाजवादी शानदार विचार के तहत, राज्य इसमें हस्तक्षेप करता है और पीटर से कहता है कि "अपना हल जेम्स को उधार में दे दो। प्रतिपूर्ति की गारंटी हम तुम्हें देंगे, और यह गारंटी जॉन द्वारा प्रदान की जा रही गांरटी से ज्यादा मूल्यवान है क्योंकि अपने लिए सिर्फ जॉन ही जिम्मेदार है। और हम, यद्यपि कि यह सच है कि हमारे पास अपना कुछ भी नहीं है, सभी करदाताओं की संपत्तियों को दांव पर लगाते हैं। जरूरत पड़ने पर हम उनके पैसे से मूल धन और ब्याज दोनों चुका देंगे।"

तो पीटर अपना हल जेम्स को उधार दे देगा; यह वह है जो ***दिखाई पड़ता है***।

और समाजवादी अपने आप को यह कहते हुए शाबाशी देंगे कि "देखा हम अपनी योजना में किस प्रकार सफल हुए। राज्य के हस्तक्षेप का शुक्रिया जिससे कि बेचारे जेम्स को हल मिल सका। अब उसे हाथ से मिट्टी हटाने की जरूरत नहीं पड़ेगी; और अब उसका भविष्य सुधार की राह पर चल पड़ेगा। इससे उसका भी हित होगा और संपूर्ण राष्ट्र का भी लाभ होगा।"

अरे नहीं, भद्रजनों, इससे राष्ट्र को कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि यह रहा जो ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

यह दिखाई नहीं पड़ता है कि हल जेम्स के पास इसलिए गया क्योंकि वह जॉन के पास नहीं गया।

यह दिखाई नहीं पड़ता है कि जेम्स को हाथ से मिट्टी हटाने की बजाए हल चलाने का बढ़ावा तो मिल रहा है लेकिन जॉन को हल चलाने की बजाए हाथ से मिट्टी हटाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

फलस्वरूप, इस बात पर विचार करना चाहिए कि एक ***अतिरिक्त*** कर्ज सिर्फ कर्ज का ***पुनर्आवंटन*** भर है।

इसके अतिरिक्त, यह ***दिखाई नहीं पड़ता है*** कि पुनर्आवंटन के इस कार्य में दो महत्वपूर्ण अन्याय शामिल हैंः पहला अन्याय, जॉन जो कि काबिलियत रखने और अपनी ईमान्दारी और

ऊर्जा के बल पर प्रतिष्ठा अर्जित करने के बाद भी अपने को वंचित पाता है। दूसरा अन्याय, करदाता अपने आप को उस कर्ज को चुकाने के लिए बाध्य पाते हैं जो उन्होंने कभी लिया ही नहीं।

क्या यह कहा जाएगा कि सरकार जॉन को वही अवसर प्रस्तुत करेगी जो उसने जेम्स को उपलब्ध कराया है? लेकिन चूंकि एक हल ही उपलब्ध है, तो दो उधार कैसे दिए जा सकते हैं।

तर्क हमेशा इस कथन पर वापस आता है कि, राज्य के हस्तक्षेप के लिए धन्यवाद, जिसके कारण जितना उधार दिया जा सकता है, उससे अधिक उधार लिया जाएगा, क्योंकि हल यहां उपलब्ध पूंजी की कुल राशि का प्रतिनिधित्व करता है।

यह सच है कि मैंने कार्यवाही को इसकी सरलतम शब्दावली में प्रस्तुत किया है; लेकिन यदि सबसे जटिल सरकारी ऋण प्रदाता संस्थानों को उसी कसौटी पर परखें तो आप आश्वस्त हो जाएंगे कि उनका परिणाम सिर्फ एक होगा: ऋण को फिर से आवंटित करना, इसे **बढ़ाना** नहीं। किसी देश में एक निश्चित समय पर, पूंजी की एक निश्चित मात्रा ही उपलब्ध होती है, जो किसी न किसी कार्य में निवेशित होती है। दिवालिया कर्जदारों को गारंटी प्रदान कर, निश्चित रूप से राज्य कर्जदारों की संख्या को बढ़ा सकता है, ब्याज की दर को बढ़ा सकता है (सब कुछ

करदाताओं के खर्चे पर), लेकिन यह महाजनों (उधारदाताओं) की संख्या और ऋणों के कुल मूल्य में वृद्धि नहीं कर सकता है।

किसी निष्कर्ष का दोषारोपण मुझ पर न करें, हालाँकि, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह मेरी रक्षा करे। मेरा कहना है कि कानून को कृत्रिम रूप से उधार लेने को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए; लेकिन मैं यह भी नहीं कहता कि इसे कृत्रिम रूप से बाधित करना चाहिए। यदि हमारी काल्पनिक प्रणाली में या कहीं और ऋण प्रदान करने और ऋण के लिए आवेदन करने में बाधाएं हों, तो कानून के द्वारा उन्हें हटा देना चाहिए; इससे बेहतर या अधिक न्यायपूर्ण कुछ और नहीं हो सकता है। लेकिन, बस यही है कि समाज सुधारकों को स्वतंत्रता के साथ-साथ कानून के औचित्य के बारे में पूछना चाहिए।

10. अल्जीरिया

चार वक्ता असेम्बली में कुछ कहने का प्रयत्न कर रहे हैं। शुरू में वे एक साथ सभी से बात करते हैं फिर सबसे एक एक कर के। उन्होंने क्या कहा है? निश्चित तौर पर फ्रांस की ताकत और भव्यता, निवेश की आवश्यकता जिससे कि लाभ प्राप्त किया जा सके, अपने विशाल उपनिवेश के शानदार भविष्य, अपनी ***अधिशेष*** जनसंख्या के पुनर्वितरण के फायदे आदि.. आदि.. के

संबंध में सुंदर सुंदर बातें। वाक्पटुता की ये उत्कृष्ट कृतियां, हमेशा इस निष्कर्ष से अलंकृत होती हैं कि:

"आइए, अल्जीरिया में बंदरगाहों और सड़कों के निर्माण के लिए पचास मिलियन फ्रैंक (लगभग) स्वीकृत करने के लिए वोट करें ताकि हम वहां अपना उपनिवेश तैयार कर सकें, उनके लिए घरों का निर्माण कर सकें और खेतों की सफाई कर सकें। यदि आप ऐसा करेंगे तो आप फ्रांस के कामगारों के कंधे से उनका बोझ हल्का कर सकेंगे, अफ्रीका में रोजगार को प्रोत्साहन दे सकेंगे, और इस प्रकार मार्सिले (स्थान का नाम) में होने वाले व्यापार में वृद्धि हो सकेगी। सब लाभ ही लाभ होगा।"

हां, ऐसा ही होगा, यदि हम उक्त पचास मिलियन फ्रैंक को तभी कंसीडर (विमर्श) करें जब सरकार उन्हें खर्च करे। ऐसा ही होगा, यदि हम ये देखें कि वे पैसे कहां जा रहे हैं, न कि वे पैसे आ कहां से रहे हैं? ऐसा ही होगा, यदि हम उस धन के कर संग्राहक (टैक्स कलेक्टर) के खजाने से जारी होने के बाद के सिर्फ सकारात्मक पहलुओं पर ही ध्यान दें, न कि उससे हुए नुकसान के बारे में सोंचे या और आगे बढ़ कर उन संभावित अच्छे कामों पर विचार करें जिन्हें होने से रोक दिया गया क्योंकि धन को लोगों की जेब से निकालकर कर संग्राहक की तिजोरी में भर दिया गया। हां, इस सीमित दृष्टिकोण के तहत सब लाभ ही लाभ है। बरबरी (स्थान का नाम) में बनने वाले घर

दिखाई पड़ते हैं; बरबरी में बनने वाला बंदरगाह ***दिखाई पड़ता है***; बरबरी में होने वाला रोजगार सृजन का काम ***दिखाई पड़ता है***; फ्रांस की श्रम शक्ति में एक निश्चित मात्रा में आई कमी भी ***दिखाई पड़ती है***; मार्सिले में होनी वाली बड़ी व्यापारिक गतिविधियां भी ***दिखाई पड़ती हैं***।

लेकिन इसके इतर भी कुछ है जो ***दिखाई नहीं पड़ता है***। सरकार द्वारा खर्च किए जाने वाले ये वो पचास मिलियन फ्रैंक हैं जो अब करदाताओं के पास खर्च करने के लिए नहीं बचेंगे। सरकारी खर्चे के लाभ को मिलने वाले सारे श्रेय में से उस नुकसान को घटाया जाना जरूरी है जो निजी खर्च को रोकने के कारण हुआ है। कम से कम हमें यह बताने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी कि जेम्स गुडफेलो अपने उन पांच फ्रैंक से कुछ नहीं करते जो उन्होंने कमाया था और जिसे कर के नाम पर उनसे ले लिया गया। यह एक बेतुका दावा है, क्योंकि उसे कमाने के लिए उन्होंने काफी परेशानियां उठाई थी और उन्हें उम्मीद थी कि पैसों को खर्च कर वह संतुष्टि अर्जित करेंगे। इस पैसे से उन्होंने अपने बागीचे की चहारदीवारी का निर्माण कराया होता जो वो अब नहीं करा सकेंगे। यह ***दिखाई नहीं पड़ता है***। उन्होंने अपने खेत की मड़ाई कराई होती, जो वो अब नहीं करा सकते, यह दिखाई नहीं पड़ता है। उन्होंने कुछ नए औजार खरीदे होते, जो वह अब नहीं कर पाएंगे, यह ***दिखाई***

नहीं पड़ता है। वह बेहतर भोजन करते, अच्छे कपड़े पहनते, अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा दिलाते, अपनी बेटी के लिए और अधिक दहेज की व्यवस्था कर पाते, लेकिन अब वो ऐसा नहीं कर सकते। यह वह है जो ***दिखाई नहीं पड़ता है***। वह एक पारस्परिक सहायता वाले समाज से जुड़ सकते थे लेकिन वह अब ऐसा नहीं कर सकते: यह वह है जो ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

एक तरफ, जहां उनसे उनकी संतुष्टि प्राप्त करने का जरिया छीन लिया गया और उनके हाथ से काम करने का साधन नष्ट कर दिया गया; वहीं दूसरी तरफ, उनके द्वारा गांव के गड्ढा खोदने वाले मजदूर, बढ़ई, लोहार, दर्जी और विद्यालय के अध्यापक को मिलने वाले कार्य प्रोत्साहन का अवसर भी चला गया। ***अब भी यह दिखाई नहीं पड़ता है***।

हमारे नागरिक अल्जीरिया की भावी समृद्धि पर बहुत अधिक भरोसा कर रहे हैं; चलिए स्वीकार है। लेकिन उन्हें उस पक्षाघात (पैरालिसिस) की भी गणना करने दें जो इस बीच अनिवार्य रूप से फ्रांस को ग्रसित करेगा। लोग मुझे मार्सिले में फलते फूलते व्यवसायों को दिखाते हैं; लेकिन यदि यह सबकुछ कराधान से प्राप्त पैसे से किया गया है, तो दूसरी ओर, मैं देश के बाकी हिस्सों में नष्ट कर दिए गए व्यापार की समान मात्रा को भी उजागर करूंगा। वे कहते हैं: "किसी उपनिवेशवादी को

बारबरी ले जाया जाना उस देश में रहने वाली आबादी को राहत प्रदान करता है।" मैं जवाब देता हूं: "ऐसा कैसे हो सकता है यदि इस उपनिवेशवादी को अल्जीरिया ले जाने में, हमें उसे फ्रांस में जीवित रहने के लिए आवश्यक धन से दो से तीन गुना अधिक पूंजी परिवहन में खर्च करनी पड़ी हो?"

इस दृष्टिकोण का मेरा एक ही प्रयोजन है कि पाठक यह समझ जाए कि सभी सार्वजनिक खर्चों से उत्पन्न हुई खुशहाली के पीछे एक बुराई छिपी होती है जिसे पहचानना बहुत कठिन है। मैं अपनी पूरी क्षमता के साथ यह कोशिश करता हूं कि मेरा पाठक सभी घटनाक्रमों के दोनों पहलुओं को देखने और दोनों पर विचार करने की आदत डाले।

जब भी किसी सार्वजनिक व्यय का प्रस्ताव पेश किया जाता है, तो अवश्य ही इसका परीक्षण इसकी खुद की योग्यता के आधार पर किया जाना चाहिए, न कि उपलब्ध नौकरियों की संख्या में कथित तौर पर होने वाली वृद्धि के लाभों के आधार पर, क्योंकि इस दिशा में हुआ कोई भी सुधार केवल एक भ्रम है। इस संबंध में सार्वजनिक खर्चे के द्वारा जो कुछ भी किया जा सकता है वह निजी खर्चे के द्वारा भी भी उतनी ही मात्रा में किया जा सकता है। इसलिए, रोजगार का मुद्दा गैर प्रासंगिक है।

अल्जीरिया को समर्पित सार्वजनिक व्यय की आंतरिक काबिलियत का मूल्यांकन करना इस निबंध के अधिकार क्षेत्र के भीतर नहीं है।

लेकिन एक सामान्य अवलोकन करने से मैं स्वयं को रोक नहीं सकता जो यह है कि कराधान के द्वारा किए गए व्यय के माध्यम से आर्थिक लाभ का अनुमान कभी भी उपयुक्त नहीं होता है। ऐसा क्यों हैं? इसका कारण निम्नलिखित हैः

सबसे पहला यह कि, न्याय को हमेशा इसके कारण किसी न किसी प्रकार से परेशान होना पड़ता है। चूंकि जेम्स गुडफेलो को कुछ लक्षित संतुष्टियों को हासिल करने के लिए आवश्यक सौ सोउस के लिए पसीना बहाना पड़ता है, इसलिए यह कहते हुए वह कुपित हो जाते हैं कि कर आधारित हस्तक्षेप उनसे उनकी संतुष्टि को छीन लेता और किसी और को दे देता है। अब, यह निश्चित रूप से कर वसूलने वाले उन लोगों की जिम्मेदारी बनती है कि वे इसके लिए कुछ अच्छे कारण बताएं। हमने सरकारों को ऐसे कारण देते हुए देखा है जिसे कोई पसंद नहीं करता है, "इन सौ सोउस के माध्यम से मैं कुछ लोगों को काम उपलब्ध कराने जा रहा हूं" लेकिन जेम्स गुडफेलो जैसे ही यह सुनते हैं, वह यह प्रतिक्रिया देने से नहीं चूकते हैं कि "हे भगवान, सौ सौउस की मदद से मैं खुद ही उन लोगों को अपने यहां काम पर रख लेता।" एक बार जब राज्य की ओर से इस

तर्क का निपटारा कर दिया जाता है, तो अन्य लोग भी स्वयं को अनावृत कर प्रस्तुत करते हैं, और सार्वजनिक खजाने और गरीब जेम्स के बीच की बहस बहुत सरल हो जाती है। और यदि राज्य उनसे कहता है: "मैं तुमसे जो एक सौ सोउस लूंगा, वो उन पुलिसकर्मियों को भुगतान करने के लिए खर्च होगा, जो आपको अपनी सुरक्षा की चिंता से मुक्त करते हैं, वो उस सड़क के निर्माण में खर्च होगा जिस सड़क से आप हर दिन गुजरते हैं, और उससे उस मजिस्ट्रेट को भुगतान किया जाएगा जो यह ध्यान रखता है कि आपकी संपत्ति और स्वतंत्रता अक्षुण्ण रहे" तो जेम्स गुडफेलो बिना एक शब्द कहे भुगतान कर देंगे। या कि मैं बड़ी गलतफहमी में हूं।

लेकिन अगर राज्य ये कहे कि: " मैं आपके एक सौ सोउस लूंगा और आपको एक सोउस का पारितोषिक दूंगा यदि आपने अपने खेतों में अच्छी तरह से जुताई करते हैं, या फिर अपने बच्चे को वह सिखाते हैं जो आप नहीं चाहते कि वह सीखे, या फिर तब जब कि आप इस बात की अनुमति दे दें कि कैबिनेट मंत्री अपने रात्रि भोजन पर होने वाले खर्च में सौ सोउस और जोड़ लें; या फिर मैं उस धन को अल्जीरिया में भवन निर्माण के कार्य में लगा दूं, और यह बताने की जरूरत नहीं कि मैं अतिरिक्त सौ सोउस लूंगा जिससे वहां उपनिवेशवादी को सहायता प्रदान कर सकूं, और उपनिवेशवादी की सुरक्षा करने

के कार्य में वहां तैनात होने वाले सैनिकों की मदद के लिए एक सौ सोउस अतिरिक्त, और अतिरिक्त एक सौ सोउस उस जनरल के गुजारे के लिए जो सैनिकों पर निगरानी रखे, आदि.. आदि..," तो मुझे बेचारा जेम्स यह चिल्लाता हुआ प्रतीत होगा कि, "यह कानूनी प्रणाली पूरी तरह से जंगल के कानून सदृश्य प्रतीत होती है!" और यदि राज्य आपत्तियों का पूर्वानुमान लगा भी ले तो यह क्या करता है? यह सभी चीजों को भ्रमित कर देता है; यह बेतुके तर्क प्रस्तुत करता है जिसका प्रश्न से कोई लेना देना नहीं होता है। जैसे कि यह सौ सोउस का रोजगार पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में बात करता है; यह उस खानसामे और व्यापारी की बात करता है जो मंत्री की आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है; यह उपनिवेशवादी की, सैनिकों की, जनरल की बात करता है जो पांच फ्रैंक पर निर्भर रहते हैं। संक्षेप में कहें तो यह हमें वही दिखाता है जो दिखाई पड़ता है। जब तक कि जेम्स गुडफेलो उन चीजों के बारे में नहीं जानेगा जो दिखाई नहीं पड़ता है, तब तक वह धोखा खाता रहेगा। इसीलिए मैं उसे बार बार और जोर जोर से दोहराते हुए सिखाने को मजबूर होता हूं।

यह तथ्य है कि सार्वजनिक व्यय के द्वारा नौकरियों का केवल पुनः आवंटन होता है न कि नौकरियों की संख्या में कोई वृद्धि होती है। अतः इस मद में किए जाने वाले खर्च के खिलाफ यह

दूसरी और गंभीर आपत्ति है। नौकरियों को फिर से आवंटित करने से श्रमिकों का विस्थापन होता है जिससे पृथ्वी पर जनसंख्या के वितरण को नियंत्रित करने वाले प्राकृतिक कानून बधित होते हैं। चूंकि करदाता पूरे देश में फैले होते हैं और जब कर के रूप में वसूले जाने वाले पचास मिलियन फ्रैंक उन करदाताओं के पास ही रहने दिए जाते हैं, तो वह पैसा फ्रांस की चालीस हज़ार नगर पालिकाओं में रोजगार को बढ़ावा देने के काम में आता है। यह एक बंधन के रूप में कार्य करता है जो प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मभूमि से जोड़े रखता है; और अधिक से अधिक श्रमिकों और सभी कल्पनीय उद्योगों में इसका वितरण होता है।

अब, यदि राज्य, नागरिकों से इन पचास लाख फ्रैंक को लेकर, उन्हें जमा करता है और उन्हें किसी निश्चित स्थान पर खर्च करता है, तो इससे उस स्थान पर उसी अनुपात में श्रम की मात्रा अन्य स्थानों से स्थांतरित होकर एकत्रित होने लगती है। इसमें बड़ी संख्या में स्वदेश (अपने मूल निवास वाले स्थान पर) लौटने वाले श्रमिक, रोजगार के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करने वाले लोग, और अन्य अवर्गीकृत आबादी शामिल होती है। और, कुछ समय बाद जब यह पैसा समाप्त हो जाता है तो यह कितना खतरनाक होता है, मैं उसका वर्णन करने की धृष्टता नहीं कर सकता। लेकिन ऐसा ही होता है (और यहां मैं

अपने मुद्दे पर लौटता हूं): उत्कंठित सक्रियता, और दंभ भरने वाली बातें, जब किसी संकीर्ण स्थान पर कही जाती हैं तो व सबकी आंखों को आकर्षित करती हैं। यह वह है जो ***दिखाई पड़ता है***; और लोग इसकी प्रशंसा करते हैं, इसकी सुंदरता और इस प्रक्रिया की सुगमता पर मोहित हो जाते हैं, और इसके विस्तार और पुनरावृत्ति की मांग करते हैं। और जो ***दिखाई नहीं पड़ता है*** वह यह है कि फ्रांस के अन्य इलाकों में समान संख्या में नौकरियों का सृजन रूक जाता है, जो संभवतः अधिक उपयोगी साबित हो सकती हैं।

11. मितव्ययिता और विलासता

ऐसा सिर्फ सार्वजनिक व्यय के मामले में ही नहीं होता है कि जो ***दिखाई पड़ता है*** वह उसे ढक लेता है जो कि ***दिखाई नहीं पड़ता है***। राजनैतिक अर्थव्यवस्था के आधे हिस्से को छाया में छोड़कर, देखी जाने वाली और ना देखी जाने वाली ये घटनाएं एक झूठे नैतिक मानक को प्रेरित करती है। यह राष्ट्रों को उनके नैतिक हितों और भौतिक हितों को विरोधी के रूप में देखने के लिए प्रेरित करता है। इससे ज्यादा हतोत्साहित करने वाला या इससे ज्यादा दुखद क्या हो सकता है? आइए अवलोकन करते हैं:

किसी भी परिवार में ऐसा कोई पिता नहीं होता जो अपने बच्चों को अनुशासन, बेहतर प्रबंधन, अर्थव्यवस्था, मितव्ययिता, खर्च में संतुलन आदि न सिखाता हो।

ऐसा कोई धर्म नहीं है जो दिखावटीपन और विलासिता की भर्त्सना न करता हो। एक तरफ तो यह सब ठीक और अच्छा है; लेकिन, दूसरी तरफ, निम्नलिखित कहावतों से अधिक लोकप्रिय क्या है:

"जमाखोरी करना लोगों की नसों को निचोड़ लेना है।"
"संपन्न लोगों की विलासिता, विपन्न लोगों के आराम का प्रबंध करती है।"
"फिज़ूलखर्च लोग खुद को तो बर्बाद करते हैं, लेकिन वे राज्य को समृद्ध करते हैं।"
"अमीरों के अधिशेष से गरीबों की रोटी तैयार होती है।"

निश्चय ही यहाँ नैतिक विचार और आर्थिक विचार के बीच एक स्पष्ट अंतर्विरोध है। कितने प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस संघर्ष को इंगित करने के बाद इसे समभाव से देखा है! यह वही है जो मैं कभी समझ नहीं पाया; क्योंकि मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मनुष्य के हृदय में दो परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों को देखने से अधिक कष्टदायक और कुछ नहीं हो सकता है। पहली प्रवृति की अति हो या दूसरी प्रवृति की अति, इससे मानवजाति का पतन ही होगा! यदि मितव्ययी है, तो यह अत्यधिक अभावों में

घिर जाएगा; और अगर फिजूलखर्च है, तो उसका नैतिक तौर पर दिवाला निकल जाएगा!

सौभाग्य से, ये लोकप्रिय कहावतें झूठ की रौशनी में मितव्ययिता और विलासिता का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो केवल उन तात्कालिक परिणामों को ध्यान में रखती हैं जो ***दिखाई पड़ती हैं*** न कि उन अधिक दूरस्थ प्रभावों को जो ***दिखाई नहीं पड़ते हैं***। आइए इस अपर्याप्त विचार को सुधारने का प्रयास करें।

विरासत में मिली पैतृक संपत्ति के विभाजन के बाद, मोंडोर और उनके भाई अरिस्टे की सालाना आय पचास हजार फ्रैंक है। मोंडोर फैशनेबल तरीके से परोपकार करता है। वह खर्चीला है। वह साल में कई बार अपना फर्नीचर बदलता है, हर महीने अपनी गाड़ियां बदलता है; लोग उसके उन दक्ष उपकरणों के बारे में बात करते हैं जिनका सहारा वह अपने पैसों से तेजी से छुटकारा पाने के लिए करता है। संक्षेप में कहें तो, तुलनात्मक रूप से वह बाल्ज़ाक और एलेक्ज़ेंडर डूमास जैसे विलासिता पूर्ण जीवन जीने वालों को भी पीछे छोड़ दे।

प्रशंसा गान करने वालों का समूह उसे हमेशा घेरे रहता है! मोंडोर हमारा आदर्श है! मोंडोर जिंदाबाद! वह कर्मयोगियों का हितैषी है। वह लोगों के लिए ईश्वर का दूत है! यह सच है कि वह विलासिता में डूबा रहता है; वह पैदल चलने वालों पर कीचड़

उछालता है; उसकी अपनी गरिमा और आम तौर पर मानवीय गरिमा इससे कुछ हद तक प्रभावित होती है। लेकिन इससे क्या होता है? यदि वह अपने मेहनत से किसी के लिए उपयोगी नहीं बन पाता है, तो वह अपने धन के माध्यम से ऐसा करता है। वह पैसे को चलायमान और गतिशील रखता है। उसका प्रांगण उन व्यापारियों से कभी खाली नहीं रहता है जो वहां से हमेशा संतुष्ट हो कर नहीं गए। क्या लोग यह नहीं कहते कि सिक्के गोल होते हैं ताकि वे लुढ़क सकें?

अरिस्टे के जीवन का उद्देश्य उससे बिल्कुल अलहदा है। अगर वह अहंकारी नहीं है, तो कम से कम ***व्यक्तिवादी*** जरूर है; क्योंकि वह खर्च करने के मामले में काफी तर्कसंगत है, और केवल संयत और वाज़िब आनंद चाहता है। वह अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सोचता है; एक शब्द में कहें तो, वह ***बचत करता*** है।

और अब मैं चाहता हूं कि आप ये सुनें कि भीड़ उसके बारे में क्या कहती है?

"यह मतलबी अमीर आदमी किस काम का है, जो पैसे को दबाकर रखता है? निस्संदेह सादगी से युक्त उसका जीवन थोड़ा प्रभावशाली और मार्मिक है; और इसके अलावा, वह मानवीय, परोपकारी और उदार है। लेकिन वह ***हिसाब किताब***

करता रहता है। वह अपनी पूरी आय खर्च नहीं कर देता है। उसका घर हमेशा रोशनी से चमचमाता और लोगों से भरा नहीं रहता है। कालीन बनाने वाले, कोच बनाने वाले, घोड़ों के सौदागर और हलवाई करने वाले उसके प्रति क्या कृतज्ञता रखेंगे?"

ऐसा विचार नैतिकता के लिए विनाशकारी है जो इस तथ्य पर आधारित है कि, फिज़ूलखर्च भाई के द्वारा किया जाने वाला खर्च नजरों को आकर्षित करता है जबकि बराबर या और ज्यादा ख़र्च करने वाला मितव्ययी भाई नजरों में नहीं आता है।

लेकिन सामाजिक व्यवस्था के दिव्य आविष्कारक द्वारा चीजों को इतनी अच्छी तरह से व्यवस्थित किया गया है कि इसमें, अन्य सभी चीजों की तरह, राजनैतिक अर्थव्यवस्था और नैतिकता, टकराव से दूर, सामंजस्य के साथ स्थित हैं, ताकि अरिस्टे का ज्ञान न केवल अधिक योग्य हो, बल्कि यहां तक कि मोंडोर की मूर्खता से भी अधिक ***लाभदायक*** हो।

और जब मैं अधिक लाभदायक कहता हूं, तो मेरा मतलब ऐसा केवल अरिस्टे के लिए या सामान्य रूप से समाज के लिए अधिक लाभदायक होना नहीं है, बल्कि वर्तमान दिहाड़ी मजदूरों और उद्योग युग के लिए अधिक लाभदायक होना है।

इस बात को सिद्ध करने के लिए मनुष्य के कर्मों के उन छिपे हुए परिणामों को मन की आंखों के सामने रखना ही पर्याप्त है जो शारीरिक आंख नहीं देख पाती है।

हां, मोंडोर की फिज़ूलखर्ची का प्रभाव सभी आंखों को दिखाई देता है: हर कोई उसकी चार पहिया गाड़ियों, उसकी बग्घियों, उसके घोड़ा गाड़ियों, मकान की दीवारों पर टंगे उत्कृष्ट चित्रों, उसके फर्श पर बिछी कालीनों, उसकी हवेली की भव्यता देख सकता है। हर कोई जानता है कि वह प्रतिस्पर्धाओं में अपने बेहतरीन नस्ल के घोड़ों को दौड़ाता है। पेरिस में अपनी हवेली में वह जो रात्रिभोज देता है, तो बुलेवार्ड (मुख्य मार्ग) पर भारी भीड़ जमा हो जाती है, और लोग एक दूसरे से बातें करते हैं कि: "वह एक अच्छा व्यक्ति है, जो अपनी आय को बचाता नहीं है, और शायद अपनी पूंजी को बर्बाद कर रहा है।" यही वह है ***जो दिखाई पड़ता है***।

श्रमिकों की रुचि वाले दृष्टिकोण से यह जानना इतना आसान नहीं है कि अरिस्टे की आय का क्या होता है। हालांकि, यदि इसकी जांच की जाए, तो हमें मालूम पड़ेगा कि उसकी आमदनी के अंतिम सेंटाइम (फ्रांस की मुद्रा) तक सारा का सारा पैसा, श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने में खर्च होता है। ठीक मेंडोर की आमदनी की तरह। बस इतना ही अंतर है कि मोंडोर का मूर्खतापूर्ण खर्च धीरे धीरे कम होता जाएगा और

आवश्यक रूप से एक दिन समाप्त होने के लिए बाध्य है; जबकि अरिस्टे का समझदारी भरा खर्च साल दर साल बढ़ता जाएगा।

और यदि ऐसा है तो निश्चय ही जनहित नैतिकता के अनुरूप है।

अरिस्टे अपने और अपने घर के ऊपर एक वर्ष में बीस हजार फ्रैंक खर्च करता है। यदि इतनी राशि उसके खुश रहने के लिए पर्याप्त नहीं है, तो वह बुद्धिमान कहलाने के योग्य नहीं है। वह उन बुराइयों से प्रभावित होता है जो गरीबों पर भारी पड़ती हैं; वह उन्हें राहत प्रदान करने के लिए नैतिक रूप से कुछ कुछ बाध्य सा महसूस करता है और दान के कार्यों के लिए दस हजार फ्रैंक समर्पित करता है। व्यापारियों, निर्माताओं और किसानों के बीच उनके ऐसे दोस्त हैं, कभी कभी आर्थिक रूप से खुद को परेशानियों में घिरा हुआ पाते हैं। अरिस्टे उनकी स्थिति के बारे में जानकारी लेता है ताकि विवेकपूर्ण और प्रभावी ढंग से उनकी सहायता कर सके और इस काम के लिए दस हजार फ्रैंक अलग रखता है। और अंत में, वह यह नहीं भूलता कि उसके पास बेटियां हैं जिनके दहेज के लिए और बेटों के भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए धन की आवश्यकता होगी, और इसलिए, वह खुद पर एक वर्ष में दस हज़ार फ्रैंक की बचत और निवेश करने का कर्तव्य थोपता है।

इस प्रकार वह निम्नलिखित तरीके से अपनी आय का प्रयोग करता है:

1. व्यक्तिगत खर्चे 20 हजार फ्रैंक
2. परोपकार 10 हजार फ्रैंक
3. मित्रों की सहायता 10 हजार फ्रैंक
4. बचत 10 हजार फ्रैंक

यदि हम इनमें से प्रत्येक वस्तु की समीक्षा करेंगे, तो हम पाएंगे कि एक भी सेंटाइम ऐसा नहीं है जो राष्ट्रीय उद्योग के समर्थन में नही जाता है।

1. ***व्यक्तिगत खर्चे।*** ये, कामगारों और दुकानदारों के लिए, मोंडोर द्वारा खर्च की गई समान राशि के बराबर प्रभाव डालते हैं। यह स्वतः स्पष्ट है; इसलिए आइए इस पर आगे और चर्चा न करें।
2. ***परोपकार।*** इस उद्देश्य के लिए समर्पित दस हजार फ्रैंक अपने मूल्य के बराबर ही उद्योग जगत का समर्थन प्रदान करेंगे; क्योंकि वे डबल रोटी बनाने वालों, कसाई, दर्जी और फर्नीचर व्यवसायी के पास जाएंगे। इनमें से रोटी के सिवाय बाकी अन्य जैसे कि, मांस, कपड़े आदि सीधे अरिस्टे की जरूरतों को पूरा नहीं करते हैं, लेकिन उनकी जरूरते अवश्य पूरा करते

हैं जिन्हें अरिस्टे ने अपना स्थानापन्न चुना है। अब, उद्योग जगत पर इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसकी वस्तुओं का उपभोग करने वाला उपभोक्ता किसी का स्थानापन्न है। अरिस्टे चाहे सौ सोउस स्वयं खर्च करे या अपने स्थान पर किसी गरीब को खर्च करने के लिए प्रदान कर दे, दोनों एक ही बात है।

3. ***मित्रों की सहायता।*** जब अरिस्टे अपने किसी मित्र को दस हजार फ्रैंक की मदद करता है या उधार देता है, तो वह पैसा जमीन में गाड़ने के लिए नहीं लिया गया होता है। सहायता प्राप्त करने वाले मित्र क द्वारा उस पैसे का इस्तेमाल माल के भुगतान के लिए या अपने कर्ज को उतारने के लिए किया जाता है। पहले मामले में, उद्योग को प्रोत्साहित किया जाता है। अब क्या कोई यह कहने की हिमाकत करेगा कि मोंडोर द्वारा किसी अच्छे नस्ल के घोड़े को खरीदने में खर्च किए गए दस हजार फ्रैंक से बाजार को अरिस्टे या उसके दोस्तों द्वारा कपड़े खरीदने के लिए किए गए दस हजार फ्रैंक खर्च की तुलना में अधिक लाभ हुआ है? यदि इस राशि एक उपयोग किसी ऋण का भुगतान करने के काम में किया गया हो तो, इसका परिणाम यह होता है कि ऋणदाता नाम का एक तीसरा व्यक्ति प्रकट हो जाता है, जो अब उस दस हजार फ्रैंक को संभालेगा, और जो

निश्चित रूप से उनका प्रयोग अपने व्यवसाय, अपने कारखाने, या प्राकृतिक वस्तुओं के उपभोग जैसी किसी चीज़ के लिए करेगा। वह अरिस्टे और श्रमिकों के बीच एक और घटक मात्र है। नाम बदलता है, लेकिन ख़र्चा वही रहता है और इसी तरह उद्योग जगत को प्रोत्साहन मिलता रहता है।

4. ***बचत।*** अब रह गए बचत के मद वाले दस हज़ार फ़्रैंक; और यहीं पर, कला, उद्योग और श्रमिकों के रोजगार के प्रोत्साहन के दृष्टिकोण से, मोंडोर अरिस्टे से श्रेष्ठ प्रतीत होता है, हालांकि नैतिक रूप से अरिस्टे खुद को मोंडोर से थोड़ा बेहतर दिखाता है।

यह वास्तविक शारीरिक पीड़ा के बिना नहीं है कि मैं प्रकृति के महान नियमों के बीच ऐसे विरोधाभासों को देखता हूं। यदि मानव जाति को दो पक्षों के बीच बांट दिया जाए और उनसे दो परिस्थितियोंः एक; जिसमें उसके हितों को नुकसान पहुंचता हो, दूसरा; जिसमें उसके विवेक को चोट पहुंचता हो; में से किसी एक का चयन करने के लिए कहा जाए, तो हमें उसके भविष्य के लिए हताशा होगी। लेकिन खुशी की बात है कि ऐसा नहीं है। अरिस्टे को अपनी आर्थिक और नैतिक श्रेष्ठता को फिर से देखने के लिए, हमें केवल इस सांत्वना देने वाले स्वयंसिद्ध को समझने

की जरूरत है, जो इस विरोधाभासी मान्यता के लिए किसी प्रकार से कम सच नहीं है कि: ***बचत करना खर्च करना है।***

दस हजार फ्रैंक बचाने के पीछे अरिस्टे का उद्देश्य क्या है? क्या वह दो लाख सोउस सिर्फ इसलिए बचाना चाहता है ताकि वह अपने बागीचे में गड्ढा कर के गाड़ सके? नहीं, निश्चित रूप से ऐसा नहीं है। उसकी मंशा अपनी आय और पूंजी को बढ़ाना है। जब वह अपने व्यक्तिगत प्रयोग में इस्तेमाल होने वाले वस्तुओं को न खरीदकर पैसा बचाता है तो, परिणामस्वरूप वह पैसा जमीन, घर, सरकारी बॉण्ड्स, औद्योगिक प्रतिष्ठानों आदि को खरीदने में ख़र्च होता है। संभव है कि वह किसी ब्रोकर या बैंकर के साथ उस पैसे को निवेश करे। इन सभी माध्यमों के द्वारा प्रयोग होने से, और आप इस बात को स्वीकार भी करेंगे कि, विक्रेताओं या करदाताओं के विभिन्न घटकों से होता हुआ यह पैसा ठीक उसी प्रकार उद्योगों तक पहुंचता है जैसे कि अरिस्टे द्वारा अपने भाई की भांति स्वयं फर्नीचर, आभूषण और घोड़े खरीदने पर पहुंचता।

क्योंकि जब अरिस्टे दस हजार फ्रैंक खर्च पर जमीन का एक टुकड़ा या कुछ बॉण्ड्स खरीदता है तो वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि उसे लगता है कि उसे उन पैसों को खर्च करने की जरूरत नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि इसी कारण उसे कसूरवार ठहराया जाता है।

लेकिन, इसी हिसाब से देखें तो, जो व्यक्ति अपनी जमीन बेचता है या गिरवी रखता है वह उसके बदलने में प्राप्त दस हजार फ्रैंक को किसी न किसी रूप में खर्च ही करेगा।

इस प्रकार, प्रत्येक मामले में खर्च तो हो रहा है, चाहे वह अरिस्टे स्वयं करे या उसके स्थान पर उसका कोई प्रतिस्थापन करे।

कर्मचारी वर्ग और उद्योगों को प्राप्त होने वाले आर्थिक सहयोग के दृष्टिकोण से देखें तो अरिस्टे और मोंडोर के व्यवहार के बीच केवल एक फर्क दिखाई पड़ता है। मोंडोर द्वारा किए गए खर्च का भोग प्रत्यक्ष रूप से वह या उसके आस पास के लोग करते हैं; और यह वह है जो ***दिखाई पड़ता है***। जबकि अरिस्टे के मामले में किसी घटक या दूर के किसी व्यक्ति को लाभ प्राप्त होता है, जो कि ***दिखाई नहीं पड़ता है***।

लेकिन वास्तव में, जो कोई उसके प्रभाव को कारण के साथ जोड़ सकता है, वह यह समझ पाएगा, कि जो दिखाई नहीं पड़ता है वह उतना ही वास्तविक है, जितना कि वह जो दिखाई पड़ता है। इससे यह सिद्ध होता है कि दोनों ही स्थिति में पैसा प्रचलन में है और बुद्धिमान भाई के पास खर्चीले भाई से ज़्यादा पैसा नहीं है।

इसलिए ऐसा कहना गलत है कि मितव्ययीता उद्योगों के लिए नुकसानदायक है।

उद्योगों के हित के हिसाब से मितव्ययीता भी उतना ही लाभदायक है जितनी कि विलासिता।

लेकिन यदि हमारी सोचने की क्षमता बस तात्कालीक फायदों तक सीमित रहने की बजाए दूरगामी प्रभावों पर भी संज्ञान ले तो हमें पता चलेगा कि विलासिता की तुलना में मितव्ययीता वास्तव में श्रेष्ठ ही है।

अब दस साल बीत गए हैं। मोंडोर और उसके भाग्य और उसकी महान लोकप्रियता का क्या हुआ? सब कुछ समाप्त हो गया। मोंडोर बर्बाद हो गया है; हर साल अर्थव्यवस्था में पचास हजार फ्रैंक डालना तो दूर, अब संभवतः वह सार्वजनिक उत्तरदायित्व बन गया है। किसी भी हाल में वह अब दुकानदारों की खुशी का कारण नहीं है; उन्हें अब कला और उद्योग का प्रवर्तक नहीं माना जाता है; अब वह न तो मजदूरों के लिए और न ही अपने वंशजों के लिए किसी काम का रह गया है, जिन्हें उसने संकट में छोड़ दिया है।

उधर, अरिस्टे दस वर्षो के बीतने के बाद भी अपने समस्त आय को न केवल अर्थव्यवस्था में परिचालित रखता है, बल्कि वह वर्ष दर वर्ष अपनी आय को बढ़ाने का काम भी करता रहता है। वह

राष्ट्र की मुद्रा में वृद्धि करता है, जिससे श्रमिकों को मजदूरी प्रदान करने वाले कोष में वृद्धि होती है; और चूंकि श्रम की मांग इस कोष की उपलब्धता पर ही निर्भर करती है, तो इस प्रकार, वह कामगार वर्ग के पारिश्रमिक में उत्तरोतर वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। यदि वह मर जाता है तो वह अपने बच्चों को छोड़ कर जाएगा जो प्रगति और सभ्यता के इस कार्य में उसकी जगह लेंगे।

नैतिक रूप से, विलासिता पर मितव्ययिता की श्रेष्ठता निर्विवाद है। यह सोचकर सांत्वना मिलती है कि आर्थिक दृष्टि से इसकी वही श्रेष्ठता है जो किसी वस्तु के तत्काल प्रभाव पर न रुककर अपनी जांच को उनके अंतिम प्रभाव तक पहुंचा सके।

12. रोजगार का अधिकार और लाभार्जन का अधिकार

"भाइयो, आप स्वयं आकलन कीजिए और अपने द्वारा तय कीमत पर मुझे काम प्रदान कीजिए।" यह रोजगार का अधिकार है, जो प्राथमिक या प्रथम श्रेणी का समाजवाद है।

"भाइयो, आप स्वयं आकलन कीजिए और मेरे द्वारा तय कीमत पर मुझे काम प्रदान कीजिए।" यह लाभार्जन का अधिकार है, जो परिष्कृत या दूसरे दर्जे का समाजवाद है।

दोनों ***दिखाई पड़ने वाले*** अपने अपने प्रभावों की खूबियों पर जीते हैं। वे उनके उन प्रभावों से मरेंगे जो ***दिखाई नहीं पड़ते हैं***।

जो ***दिखाई पड़ता है*** वह ऐसा कार्य और लाभ है जो समाज पर कर लगाने की प्रक्रिया के द्वारा प्रेरित होता है। जो ***दिखाई नहीं पड़ता है*** वह ऐसा कार्य और मुनाफा है जो उतनी ही राशि से स्वतः ही उत्पन्न होता है अगर इसे करदाताओं के हाथों में छोड़ दिया जाए।

1848 में रोजगार के अधिकार ने एक पल के लिए खुद को अपने दोनों चेहरों के साथ दिखाया। यह जनता की राय में इसे बर्बाद करने के लिए पर्याप्त था।

इनमें से एक चेहरा कहलाया: ***राष्ट्रीय कार्यशाला***।

दूसरा कहलाया: ***पैंतालीस सेंटाइम***।

रुए डी रिवोली से प्रतिदिन लाखों लोग राष्ट्रीय कार्यशालाओं में जाते थे। यह सिक्के का खूबसूरत पहलू था।

लेकिन दूसरा पहलू कुछ और समेटे हुए था। एक तिजोरी से लाखों फ्रैंक बाहर लाने के लिए, उन्हें पहले उसमें डालना होगा। इसलिए रोजगार के अधिकार के आयोजकों ने उस काम को करदाताओं के हवाले कर दिया।

अब, एक किसान कहता है कि, " मैं पैंतालीस सेंटाइम्स अवश्य दे दूंगा। लेकिन उसके बाद मुझे बिना वस्त्रों के रहना पड़ेगा; मैं अपने खेतों की मड़ाई नहीं कर पाऊंगा; मैं अपने मकान की मरम्मत नहीं करा सकूंगा।"

और मजदूर कहता है कि, "चूंकि मेरा मालिक नए कपड़े नहीं ले सकेगा, इसलिए दर्जी के पास कम काम बचेगा; चूंकि वह अपने खेतों की मड़ाई नहीं कराएगा, इसलिए खुदाई करने वाले मजदूर के लिए कम काम बचेगा; चूंकि वह अपने मकान की मरम्मत नहीं कराएगा, इसलिए बढ़ई और मिस्त्री के लिए कम काम बचेगा।"

इसने यह साबित कर दिया कि एक ही लेन देन से आप दो बार लाभ प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इससे यह भी साबित हुआ कि सरकार के द्वारा भुगतान कर कराया गया काम उस काम की कीमत पर कराया गया था जो करदाता स्वयं भुगतान कर करा सकते थे। वह रोजगार के अधिकार का अंत था, जिसे एक भ्रम के साथ साथ अन्याय के रूप में भी देखा जाने लगा।

हालांकि, लाभ का अधिकार, जो कि रोजगार के अधिकार की अतिशयोक्ति के अलावा और कुछ नहीं है, अभी भी जीवित है और फल-फूल रहा है।

क्या समाज को चलाने की संरक्षणवादियों की भूमिका में कुछ भी शर्मनाक नहीं है?

वह समाज से कहता है कि:

“आपको मुझे अनिवार्य रूप से काम देना चाहिए, और इतना ही नहीं, काम आकर्षक भी होना चाहिए। मैनें मूर्खतापूर्वक एक ऐसे काम का चयन किया जिससे मुझे दस प्रतिशत का नुकसान हो गया। यदि आप मेरे साथी नागरिकों पर बीस फ्रैंक का कर लगा दें और मुझे उस कर का भुगतान न करने की छूट दे दें, तो मेरा नुकसान लाभ में परिवर्तित हो जाएगा। क्योंकि अब लाभार्जन अधिकार है; इसलिए आपकी मुझ पर यह देनदारी बनती है।”

वह समाज खुद पर कर लगाता है, जो समाज इस कुतर्की की बात को मानता है, और जो यह नहीं समझता है कि वह नुकसान जिसे उठाने के लिए दूसरे मजबूर हों वह किसी उद्योग में होने वाला नुकसान से कम नहीं होता है। मैं तो कहता हूं कि - ऐसा समाज उस पर थोपे गए बोझ का ही अधिकारी है।

इस प्रकार, कई विषयों पर किए गए अपने कार्य अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं, कि राजनीतिक अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली से अंजान रहने का मतलब इससे संबंधित किसी तात्कालिक घटना के प्रभाव से खुद को असहज स्थित में

डालना होता है; जबकि राजनीतिक अर्थव्यवस्था की समझ होने से इसके तत्काल और भविष्य दोनों में घटित होने वाली सभी घटनाओं के प्रभावों को ध्यान में रखना है।

उपरोक्त सिद्धांतों की परख के लिए मैं यहां प्रश्नों के कई समुच्चय प्रस्तुत कर सकता हूं। लेकिन अभिव्यक्ति और प्रस्तुति की एकरसता उत्पन्न न हो इसलिए मैं स्वयं को ऐसा करने से रोकता हूं; हालांकि ऐसा होने की संभावना हमेशा बनी रहती है। इसलिए, मैं राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर लेखक और विचारक शेतोब्रियान द्वारा इतिहास के बारे में प्रस्तुत कथन को लागू करके समाप्त करता हूं:

इतिहास में दो प्रकार के परिणाम देखने को मिलते हैं: पहला अविलम्ब प्रभाव जिसे तत्काल ही लोगों से स्वीकृति प्राप्त हो जाती है; दूसरा दूरगामी प्रभाव जो प्रथम दृष्टया अकल्पनीय प्रतीत होता है। ये परिणाम अक्सर एक दूसरे के विपरीत होते हैं; पहला हमारे अल्पकालिक ज्ञान से आता है, दूसरा दीर्घकालीन ज्ञान से। ईश्वरीय घटनाएं मानवीय घटनाओं के बाद प्रकट होती है। ईश्वर का अभ्युदय मनुष्यों के बाद होता है। आप जितना चाहें परम ज्ञान को अस्वीकार करें, उसकी कार्रवाई में विश्वास न करें, शब्दों पर विवाद करें, जिसे आम आदमी ईश्वरकृत कहता है उसे भले ही आप "परिस्थितियों के कारण उत्पन्न शक्ति" या "कारण" कहें; लेकिन जब आप एक सिद्ध

तथ्य वाले हिस्से को देखेंगे, तो आप पाएंगे कि जब तक यह नैतिकता और न्याय पर आधारित नहीं होता है तब तक सदैव ही उन चीजों के विपरीत परिणाम प्राप्त होता है जिसकी अपेक्षा की जाती है।

(शेतोब्रियान, ***मेमॉयर्स फ्रॉम बियाण्ड द टॉम्ब***)

एक याचिका

- **द्वारा फ्रेडरिक बास्तियात**

सेवा में,
माननीय सदस्य; चैम्बर ऑफ डेप्युटीज़

कैंडल, टेपर, लैंटर्न, कैंडलस्टिक, स्ट्रीट लैम्प, स्नफर्स, एक्सटिंग्युशर्स के निर्माताओं और टैलो, ऑयल, रेज़िन, अल्कोहल, और प्रकाश करने में सहायक अन्य सभी चीजों के उत्पादकों की तरफ से।

महोदय,

आप बिल्कुल सही रास्ते पर हैं। आप अमूर्त सिद्धांतों को अस्वीकार करते हैं और वस्तुओं की प्रचूरता और कीमतों में कमी के प्रति आपके मन में बहुत कम सम्मान है। आपकी मुख्य चिंता उत्पादकों के भविष्य को लेकर है। आप उसे विदेशी प्रतिस्पर्धा से मुक्त करना चाहते हैं, अर्थात ***घरेलू बाजार*** को ***घरेलू उद्योग*** के लिए आरक्षित करना चाहते हैं।

हम आपको एक शानदार अवसर प्रदान करना चाहते हैं ताकि आप अपने उस विचार को लागू कर सकें। उसे विचार ही कहते हैं न? नहीं, वह आपका सिद्धांत है? नहीं , नहीं! सिद्धांत से

अधिक भ्रामक तो कोई चीज हो ही नहीं सकती। फिर आप उसे क्या कहते हैं? आपकी विचारधारा? आपकी कार्य पद्धति? आपके मत? लेकिन आपको विचारधाराएं तो नापसंद हैं, कार्यपद्धति भी आपकी भयावह है और जहां तक मत की बात है तो आप तो इस मत को सिरे से ही नकारते हैं कि राजनीतिक अर्थव्यवस्था जैसी भी कोई चीज होती है; इसलिए हम इसे आपके कार्य करने का तरीका मान लेते हैं

हम एक विदेशी प्रतिद्वंद्वी की विनाशकारी प्रतिस्पर्धा से पीड़ित हैं जो स्पष्ट रूप से प्रकाश के उत्पादन के लिए हमारे अपने से कहीं बेहतर परिस्थितियों में काम करता है। और वह घरेलू बाजार में वस्तुओं को अविश्वसनीय रूप से कम कीमत पर भर रहा है; और जिस क्षण वह प्रकट होता है, हमारे उत्पादों की बिक्री बंद हो जाती है। सभी उपभोक्ता उसकी ओर मुड़ जाते हैं, और फ्रांसीसी उद्योग की एक शाखा जिसकी असंख्य उप-शाखाएं है, अचानक से ठहर जाती है और उसमें पूर्णतया ठहराव आ जाता है। यह जो प्रतिद्वंद्वी है वो कोई और नहीं बल्कि सूरज है। वह हम पर इतनी निर्दयता से युद्ध छेड़ रहा है कि हमें संदेह है कि कोई विश्वासघाती एल्बियन (आजकल की उत्कृष्ट कूटनीति!) उसे हमारे खिलाफ खड़ा कर रहा है और वह कोई घमंडी द्वीप है जो हमें दिखाई नहीं पड़ रहा है।

हम आपसे बस इतना करने के लिए कहते हैं कि आप एक कानून पारित करें जिसके तहत सभी प्रकार की खिड़कियां, डॉर्मर्स, स्काइलाईट्स, अंदर और बाहर के शटर, पर्दे, केसमेंट, बुल्स-आई, डेडलाइट्स और ब्लाइंड्स को बंद करना आवश्यकता हो - संक्षेप में कहें तो, सभी ओपनिंग, होल, चिन, और दरारें जो सूर्य के प्रकाश को घरों में प्रवेश कराने का माध्यम बनती हैं, को बंद करा दिए जाएं। निष्पक्ष उद्योगों की हानि न हो और हमें यह कहते हुए गर्व हो कि, हमने अपने देश को संपन्न किया है, एक ऐसे देश को जो कृतघ्न नहीं है, और आज जरूरत के समय हमें इस असमान लड़ाई में अकेला नहीं छोड़ सकता है।

माननीय डेप्युटीज़, कृपया आप बस इतना कीजिए कि हमारे आग्रह को गंभीरता से लीजिए और हम अपनी मांग के समर्थन में जो दलील दे रहे हैं उसे कम से कम बिना सुने अस्वीकार मत कीजिए।

सबसे पहले तो, यदि आप जितना अधिक से अधिक संभव हो, प्राकृतिक प्रकाश के आने के सभी स्त्रोतों को बंद करा दीजिए, जिससे कि कृत्रिम प्रकाश की जरूरत पैदा हो। अंततः इससे फ्रांस के बहुत सारे उद्यम प्रोत्साहित होंगे?

यदि फ्रांस अधिक से अधिक चर्बी का उपभोग करता है, तो और ज्यादा मवेशियों और भेड़ों की जरूरत पड़ेगी। इसके परिणामस्वरूप, हमारे खेत और बागीचे साफ सुथरे दिखेंगे, मांस, ऊन, चमड़े और विशेष रूप से खाद में वृद्धि होगी, जो सभी कृषि संपदा का आधार है।

यदि फ्रांस अधिक तेल की खपत करता है, तो खसखस, जैतून और सफेद सरसों की खेती में विस्तार देखने को मिलेगा। ये समृद्ध लेकिन मिट्टी की उर्वरा शक्ति को समाप्त करने वाले पौधों के उत्पादन के लिए श्रेष्ठ समय होगा, क्योंकि हम उस बढ़ी हुई उर्वरता का लाभकारी उपयोग कर सकेंगे जो मवेशियों द्वारा प्रजनन से भूमि को मिलेगी।

हमारे दलदल रालदार वृक्षों से आच्छादित होंगे। मधुमक्खियों के असंख्य झुंड हमारे पहाड़ों से उन सुगंधित खजानों को इकट्ठा करेंगे जो आज के दिन में बर्बाद हो जाता है, ठीक उन फूलों की तरह ही जिनसे वे निकलते हैं। इस प्रकार, कृषि की ऐसी कोई भी शाखा नहीं है जिसका व्यापक विस्तार नहीं होगा।

शिपिंग के बारे में भी यही सच है। हजारों जहाज व्हेल के शिकार में शामिल होंगे, और कुछ ही समय में हमारे पास एक बेड़ा होगा जो फ्रांस के सम्मान और अधोहस्ताक्षरी

याचिकाकर्ताओं, जहाज का सामान बनाने वालों आदि की देशभक्ति की आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम होगा।

लेकिन हम ***पेरिस के निर्माण की विशिष्टताओं*** के बारे में क्या कहेंगे? अब से आपको मोमबत्तियों, लैंपों, झूमरों, और विशाल वाणिज्यिक स्थानों में स्थापित चमकदार दीपवृक्षों में गिल्डिंग (सोने का पॉलिस), कांस्य, और क्रिस्टल देखने को मिलेंगे। उनकी तुलना में आज के वाणिज्यिक स्थान किसी घुड़साल से अधिक नहीं लगेंगे।

तब ऊंचे रेत के टीलों पर कोई जरूरतमंद राल (रेज़िन) संग्रहकर्ता और काले गहरे गड्ढे में कोई गरीब खनिक नहीं होगा, जिसे उच्च दर पर मजदूरी प्राप्त नहीं होगी और जिसे बढ़ी हुई समृद्धि का आनंद प्राप्त नहीं होगा।

भद्रजनों, आपसे इस बाबत एक छोटी सी इनायत की उम्मीद है, जो यह आश्वस्त कर सके कि अंज़िन कंपनी के धनी शेयर धारक से लेकर माचिस बेचने वाले सबसे विनम्र विक्रेता तक, अब शायद एक भी फ्रांसीसी व्यक्ति नहीं बचेगा है, जिसकी स्थिति हमारी याचिका की सफलता से नहीं सुधरेगी।

भद्रजनों; हमें पता है कि आपकी कुछ आपत्तियां होंगी, लेकिन उनमें से एक भी ऐसी नहीं है जिसे आपने मुक्त व्यापार के पैरोकारों की पुरानी किताबों से नहीं उठाया है। यदि आपने

हमारे विरोध में एक भी शब्द कहे तो हम आपके उस सिद्धांत के खिलाफ तुरंत पलटवार करेंगे जो आपकी पूरी नीति का मार्गदर्शन करता है।

क्या आप हमें यह कहेंगे कि, यद्यपि इस संरक्षण से हमें लाभ तो होगा लेकिन फ्रांस को इससे कुछ नहीं मिलेगा, क्योंकि उपभोक्ताओं को इस खर्चे का बोझ उठाना पड़ेगा?

हमारे पास उसका भी जवाब तैयार हैः

अब आपको उपभोक्ता के हितों का आह्वान करने का अधिकार नहीं है। क्योंकि जब भी उत्पादक के हितों से उपभोक्ताओं के हित टकराए हैं, आपने सदैव उपभोक्ताओं के हितों की ही कुर्बानी दी है। आपने ऐसा ***उद्योगों को प्रोत्साहित*** करने और ***रोजगार को बढ़ावा देने*** के नाम पर किया है। आपको उसी का हवाला देते हुए इस बार भी वैसा ही करना है।

वास्तव में, आपने स्वयं भी इस आपत्ति का अंदाजा लगा लिया होगा। जब कहा जाता है कि लोहा, कोयला, तिल, गेहूं और वस्त्रों के मुक्त प्रवेश में उपभोक्ता का हित है, तो आप जवाब देते हैं, "हां, लेकिन निर्माता का हित उनके बहिष्कार में है।" बहुत अच्छा! निश्चित रूप से यदि प्राकृतिक प्रकाश के प्रवेश में उपभोक्ताओं का हित है, तो उत्पादकों का हित इसके निषेध में है।

"लेकिन," आप अभी भी कह सकते हैं, "निर्माता और उपभोक्ता एक ही व्यक्ति हैं। यदि निर्माता को संरक्षण से लाभ होता है, तो वह किसान को समृद्ध बनाएगा। इसके विपरीत, यदि कृषि समृद्ध है, तो यह विनिर्मित वस्तुओं के लिए बाजार खोल देगी।" बहुत अच्छा! यदि आप हमें दिन के दौरान प्रकाश के उत्पादन पर एकाधिकार प्रदान करते हैं, तो सबसे पहले हम अपने उद्योग की आपूर्ति के लिए बड़ी मात्रा में लकड़ी का कोयला, तेल, राल, मोम, शराब, चांदी, लोहा, कांस्य और क्रिस्टल खरीदेंगे; और, इसके अलावा, हम और हमारे कई आपूर्तिकर्ता, अमीर बनने के बाद, बहुत अधिक खपत करेंगे और घरेलू उद्योग के सभी क्षेत्रों में समृद्धि फैलाएंगे।

क्या आप कहेंगे कि सूर्य का प्रकाश प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है, और ऐसे उपहारों को अस्वीकार करना धन को प्राप्त करने के काम को प्रोत्साहित करने के नाम पर उसे अस्वीकार करना ही होगा?

लेकिन अगर आप इसी फलसफे को मानते हैं, तो आप अपनी नीति पर स्वयं एक नश्वर प्रहार करते हैं; क्योंकि याद रखें कि अब तक आपने हमेशा विदेशी वस्तुओं को बाहर रखा है ***क्योंकि*** और ***उसी अनुपात*** में वे लगभग अनावश्यक उपहार देते हैं। एकाधिकार रखने वाले अन्य लोगों की मांगों को पूरा करने के लिए आपके पास केवल ***आधा*** कारण है, और उतना

ही +प कारण हमारी याचिका को स्वीकार करने के लिए है, जो कि ***पूरी तरह से*** आपकी स्थापित नीति के अनुरूप है। इसी प्रकार, हमारी मांगों को अस्वीकार करने के लिए भी आपके पास ठीक ठाक वैसे ही कारण हैं क्योंकि हमारी मांगें किसी और की तुलना में ***बेहतर रूप से स्थापित*** की गई हैं। ऐसा करना + ? = + – ; समीकरण को स्वीकार करने के समान होगा: दूसरे शब्दों में, यह ***बेतुकेपन*** के ऊपर और ***बेतुकेपन*** का ढेर लगाने जैसा होगा।

किसी वस्तु के उत्पादन में श्रम और प्रकृति देश और जलवायु के आधार पर अलग-अलग अनुपात में सहयोग करते हैं। प्रकृति का योगदान हमेशा निःशुल्क होता है; जबकि मानव श्रम द्वारा किया गया योगदान ही वह हिस्सा है जिसका कोई मूल्य होता है, और जिसके लिए भुगतान किया जाता है।

यदि लिस्बन का एक संतरा पेरिस के संतरे की आधी कीमत पर बिकता है, तो इसका कारण यह है कि सूर्य की प्राकृतिक गर्मी, जो नि: शुल्क है, लिस्बन के संतरे के लिए वही काम करती है जो पेरिस के संतरे के लिए कृत्रिम तापमान करता है और जिसकी एक कीमत होती है। उस कीमत को आवश्यक रूप से बाजार में चुकानी पड़ती है।

इस प्रकार, पुर्तगाल का संतरा जब हम तक पहुंचता है तो, कहा जाता है कि हमें आधा संतरा मुफ्त में प्राप्त हो रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो वह संतरा पेरिस में उत्पादित होने वाले संतरे की तुलना में ***आधी कीमत*** पर प्राप्त हो रहा होता है।

अब, ठीक इसी कारण से यानी की इसके ***अर्ध-खैराती*** (इस शब्द के प्रयोग के लिए क्षमा कीजिए) होने के आधार पर आप इसे प्रतिबंधित कर देते हैं। आप पूछते हैं: "फ्रांसीसी श्रमिक उस स्थिति में विदेशी श्रमिकों की प्रतिस्पर्धा का सामना कैसे कर सकते हैं जब विदेशी श्रमिकों का सिर्फ आधा काम ही करना पड़ता है, और आधा काम तो सूर्य ही कर देता है। उधर फ्रांस के श्रमिकों को सारा काम स्वयं करना पड़ता है?" लेकिन अगर यह तथ्य कि कोई उत्पाद ***आधा*** मुफ़्त है, तो आप उसे प्रतिस्पर्धा से बाहर कर देते हैं, तो इसका पूरी तरह से नि: शुल्क होना आपको इसे प्रतिस्पर्धा में स्वीकार करने के लिए कैसे प्रेरित कर सकता है? हमारे घरेलू उद्योगों को नुकसान पहुंचाने वाली उन सभी चीजों को जिनकी कीमत आधी मुफ्त है उन्हें बाहर निकालने के बाद, या तो आपके फैसलों में एकरूपता का आभाव उत्पन्न हो गया है या फिर आपको उन चीजों को कुछ भी कारण बताते हुए दोगुने उत्साह के साथ बाहर कर देना चाहिए जो कि पूरी तरह से खैरात के तौर पर मौजूद हैं।

एक और उदाहरण ले लेते हैं: जब कोई उत्पाद जैसे कि कोयला, लोहा, गेहूं, या कपड़ा - विदेशों से हमारे पास आता है, और जब हम इसे स्वयं उत्पादित करने की तुलना में कम मजदूरी पर प्राप्त करते हैं, तो दोनों कीमतों के बीच का अंतर एक खैराती उपहार के समान ही है जो हमें प्रदान किया जाता है। इस उपहार का आकार कीमतों के बीच के अंतर की सीमा का समानुपातिक है। यदि विदेशी उत्पादक अपने उत्पाद के लिए हमसे हमारे द्वारा उत्पादित वस्तुओं की कीमतों की तुलना में केवल तीन चौथाई, आधा या एक चौथाई कीमत मांगता है तो कीमतों के बीच के अंतर का आकार जो हमें उपहार स्वरूप प्राप्त होता है वह एक चौथाई, आधा या तीन चौथाई हो जाता है। उपहार का आकार तब एकदम पूर्ण हो जाता है जब दानकर्ता हमसे कुछ भी न मांगे, जैसे कि सूर्य हमें प्रकाश देता है लेकिन बदले में कुछ नहीं मांगता है। हम औपचारिक तौर पर आपसे यह पूछना चाहते हैं कि फ्रांस के लिए आप क्या चाहते है? क्या आप निशुल्क उपभोग का लाभ चाहते हैं या भारी उत्पाद के कथित फायदे को? अपनी पसंद को स्पष्ट कीजिए, लेकिन ऐसा करते हुए तर्कसंगत रहिए; क्योंकि जब विदेशी कोयले, लोहे, गेहूं और वस्त्रों की कीमतों के अनुपातिक रूप में शून्य पर पहुंचने के दौरान आप उन पर प्रतिबंध लगा सकते हैं तो फिर सूर्य के संबंध में इसे स्वीकार करने में आपको हिचकिचाहट

क्यों हो रही है, जबकि दिन भर उपलब्ध रहने पर भी उसके प्रकाश की कीमत शून्य बनी रहती है!

एक नकारात्मक रेलमार्ग

- **फ्रेडरिक बास्तियात**

मैं कहता हूं कि लोगों को जब तक केवल उत्पादकों के हितों की परवाह रहती है, और जैसा कि दुर्भाग्य पूर्वक होता भी है, तब तक आम लोगों के हितों वाले प्रतिकार से बचना असंभव है। ऐसा इसलिए क्योंकि उत्पादक आमतौर पर बाधाओं में वृद्धि, अभाव और प्रयास के अतिरिक्त किसी और चीज की मांग नहीं करता है।

मुझे इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण बोर्डो अखबार में मिलता है।

एम. सिमियट निम्नलिखित प्रश्न उठाते हैं:

क्या पेरिस से स्पेन तक वाले रेलमार्ग पर बोर्डो में पटरियों में ब्रेक होना चाहिए?

वह प्रश्न का उत्तर सकारात्मक में देते हैं और कई कारण बताते हैं, जिनमें से मैं केवल निम्नलिखित की जांच करने का प्रस्ताव करता हूं:

पेरिस से बेयोन तक वाले रेलमार्ग में बोर्डो में एक ब्रेक होना चाहिए; क्योंकि, यदि माल और यात्रियों को उस शहर में रुकने के लिए मजबूर किया जाता है, तो यह नाविकों, कुलियों, होटलों के मालिकों आदि के लिए लाभदायक होगा।

यहां हमें फिर से यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि कैसे सेवाएं उपलब्ध कराने वालों के हितों को उपभोक्ताओं के हितों पर प्राथमिकता दी जाती है।

लेकिन अगर बोर्डो को पटरियों में एक ब्रेक स्थापित कर लाभ कमाने का अधिकार है, और यदि यह लाभ सार्वजनिक हित के अनुरूप है, तो अंगौलेमे, पोइटियर्स, टूर्स, ऑरलियन्स, और वास्तव में, सभी मध्यवर्ती बिंदुओं, जिसमें रफ़ेक, चेटेलरॉल्ट, आदि, आदि शामिल हैं, उन्हें भी आम लोगों के हितों के नाम पर,और घरेलू उद्योगों के हितों के नाम पर, पटरियों में ब्रेक स्थापित करने की मांग करनी चाहिए - क्योंकि लाइन में ये ब्रेक जितने अधिक होंगे, उतने ही रास्ते में हर बिंदु पर सामान रखने के लिए भंडार वाले स्थानों, ढोने वाले कुलियों और गाड़ियों के लिए भुगतान करने के अवसर बनेंगे। इस तरीके से, एक समय ऐसी स्थिति बन जाएगी जब रेलमार्ग पटरियों में ब्रेक की एक पूरी श्रृंखला से युक्त होगा, जो कि ***एक नकारात्मक रेलमार्ग*** बन जाएगा।

संरक्षणवादी चाहे जो कुछ भी कहें, यह निश्चित है कि ***पटरियों में ब्रेक का मूल सिद्धांत*** और ***प्रतिबंध का मूल सिद्धांत*** दोनों समान है: अर्थात उत्पादक के लिए उपभोक्ता का बलिदान, और माध्यमों के लिए साधनों का बलिदान।

व्यापार संतुलन

- फ्रेडरिक बास्तियात

व्यापार संतुलन महज विश्वास की चीज है।

हम जानते हैं कि इसमें क्या शामिल है: यदि कोई देश निर्यात से अधिक आयात करता है, तो दोनों के बीच जो अंतर होता है वह हानि होती है। इसके विपरीत, यदि देश द्वारा किया जाने वाला निर्यात उसके आयात से अधिक है, तो अतिरेक वाला अंतर उसके लिए लाभ होता है। इसे एक सर्वमान्य सिद्धांत माना जाता है, और इसी के आधार पर कानून पारित किए जाते हैं।

इस परिकल्पना के आधार पर, एम. मौगुइन ने कुछ आंकड़ों के हवाले से हमें एक दिन पहले ही चेतावनी दे दी थी, कि फ्रांस जिस प्रकार के विदेशी व्यापार में शामिल है उसमें, सिर्फ सदिच्छा के कारण उसे दो सौ मिलियन फ्रैंक का नुकसान उठाना पड़ता है, जबकि ऐसा करने की आवश्यकता ही नहीं है।

“पिछले ग्यारह वर्षों के दरम्यान आपने व्यापार के माध्यम से दो बिलियन फ्रैंक्स गवांए हैं। आप समझ रहे हैं न कि इसका मतलब क्या है?”

इसके पश्चात, अपने अचूक नियम को तथ्यों पर लागू करते हुए, वे हमें बताते हैं कि: "1847 में आपने 605 मिलियन फ्रैंक के विनिर्मित उत्पाद बेचे, और आपने केवल 152 मिलियन मूल्य के उत्पाद खरीदे। इसलिए, आपने 450 मिलियन का ***लाभ प्राप्त किया***।

“आपने कच्चे माल की खरीदी के लिए 804 मिलियन धनराशि खर्च किए, जबकि आपने सिर्फ 114 मिलियन मूल्य के सामानों की बिक्री की। इस प्रकार, आपको 690 मिलियन फ्रैंक का नुकसान हुआ।”

एक बेतुके आधार को तर्कसंगत निष्कर्ष मानने वाले निष्कपट भोलेपन का यह उदाहरण है। यहां तक कि एम. मौगुइन ने व्यापार संतुलन के नाम पर होने वाले खर्च के नाम पर सर्वश्री डारब्ले और लेबेफ को भी हंसाने का तरीका ढूंढ लिया है। यह एक बड़ी उपलब्धि है, और इसे लेकर मुझे ईर्ष्या होती है।

मुझे उस नियम की वैधता का आकलन करने की अनुमति दें जिसके अनुसार एम. मौगुइन और सभी संरक्षणवादी लाभ और हानि की गणना करते हैं। मैं ऐसा दो व्यावसायिक लेन देनों की पुनर्गणना करके करूंगा, जिनमें मुझे शामिल होने का अवसर मिला है।

मैं बोर्डो में था। मेरे पास शराब का एक प्याला था जिसकी कीमत 50 फ़्रैंक थी; मैंने इसे लिवरपूल भेजा, और कस्टमहाउस ने अपने रिकॉर्ड में 50 फ़्रैंक का निर्यात नोट कर लिया।

लिवरपूल में वही शराब 70 फ्रैंक की बिकी। मेरे प्रतिनिधि ने उन 70 फ्रैंक को कोयले में परिवर्तित किया, जिसकी कीमत बोर्डो के बाजार में 90 फ्रैंक के बराबर थी।

व्यापार संतुलन अथवा निर्यात पर आयात की अधिकताः 40 फ्रैंक।

अपनी किताबों पर भरोसा जताते हुए मैंने हमेशा ये माना कि मुझे 40 फ्रैंक का फायदा हुआ। लेकिन एम. मौगुइन के अनुसार मुझे उन फ्रैंक का नुकसान हुआ, और मेरे कारण फ्रांस का नुकसान हुआ।

अब एम. मौगुइन को यहां नुकसान कैसे दिखाई पड़ रहा है? क्योंकि उन्हें लगता है कि निर्यात पर किसी भी प्रकार के आयात की अधिकता आवश्यक रूप से एक शेष पैदा करती है जिसका भुगतान नकद में ही किया जाना चाहिए। लेकिन जिस लेन देन की बात मैं कर रहा हूं, जो कि सभी लाभदायक वाणिज्यिक लेनदेन के स्वरूपों का पालन करता है, उसमें भुगतान करने के लिए कुछ शेष है क्या? तो क्या इसे समझना इतना कठिन है कि एक व्यापारी किसी वस्तु के लिए विभिन्न

बाजारों में मिलने वाली मौजूदा कीमतों की तुलना करता है और व्यापार करने का फैसला केवल तभी करता है जब वह आश्वस्त हो जाता है, या उसे कम से कम इस बात की संभावना होती है कि उसके द्वारा निर्यातित वस्तु के बदले में उसे मुनाफे की प्राप्ति होगी। इसलिए, एम. मौगुईन जिसे ***हानि*** कहते हैं उसे ***लाभ*** कहा जाना चाहिए।

मेरे द्वारा लेने देन किए जाने के कुछ ही दिनों के भीतर मुझे पछतावे का अहसास होने लगा; मुझे इस बात का दुख था कि मैंने कुछ दिनों तक और इंतजार क्यों नहीं किया। दरअसल, बोर्डो में शराब की कीमत कम हो गई थी और लिवरपूल में इसमें वृद्धि हो गई थी। इस प्रकार, यदि मैंने जल्दबाजी नहीं की होती तो मैं 40 फ्रैंक की शराब खरीदता और 100 फ्रैंक में बेचता। मेरा पूरे विश्वास के साथ मानना है कि इस आधार पर मुझे कहीं अधिक ***लाभ*** हुआ होता। लेकिन एम. मौगुइन से मैंने जाना कि वास्तव में यह तो नुकसान हुआ जो कि अधिक बर्बादी वाला होता।

मेरे द्वारा किए गए एक दूसरे लेन देन का बड़ा ही अलग परिणाम प्राप्त हुआ।

मैंने पेरिगोर्ड से कुछ मशरूम मंगाए जिसकी कीमत मुझे 100 फ्रैंक पड़ी। उन्हें कुछ विशिष्ट इंग्लिश कैबिनेट मंत्रियों के लिए

मुझसे बहुत ही ऊंची दर पर खरीद लिया गया। मैंने उनसे भुगतान पाउंड स्टरलिंग के रूप में करने का आग्रह किया। कितना अच्छा होता यदि उन्हें (मेरा तात्पर्य मशरू से था, न कि इंग्लिश पाउंड या फिर टोरी) मैं ही खा गया होता, पर अफसोस। यदि मैंने खुद खा लिया होता तो सारे बर्बाद नहीं हुए होते, जैसे कि उन्हें लाने वाला जहाज प्रस्थान के दौरान ही डूब गया हो। उस कस्टम अधिकारी ने जिसने उस मौके पर 100 फ्रैंक के निर्यात को दर्ज किया था, उसने ऐसे मामले में फिर कभी आयातित माल को प्रवेश करने ही नहीं दिया।

ऐसी स्थिति में एम. मौगुइन कहेंगें कि फ्रांस को 100 फ्रैंक का फायदा हुआ क्योंकि वास्तव में इतनी ही राशि का निर्यात, आयात से अधिक हो गया, शुक्र है कि जहाज डूब गया। यदि परिस्थिति बदल जाती और कहीं मुझे 200 या 300 फ्रैंक मूल्य के बराबर के इंग्लिश पाउंड प्राप्त हो गए होते तो व्यापार संतुलन हमारे हित में नहीं रहता और फ्रांस हार गया होता।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस बात पर विचार करना भी दुखद है कि ऐसे सभी व्यवसायिक लेन-देन जो व्यवसायियों के अनुसार हानि में समाप्त होते हैं, वे उस वर्ग के सिद्धांतकारों के अनुसार लाभ दिखाते हैं जो हमेशा सिद्धांतों के खिलाफ राग अलापते रहते हैं।

लेकिन व्यवहारिक दृष्टिकोण से देखें तो, उनके विचार परिणाम के अनुसार और भी दुखद है।

मान लीजिए कि एम. मौगुईन के पास इस बात की शक्ति है (और मतदान के अधिकार के साथ उनके पास कुछ हद तक है भी) कि वह अपनी गणनाओं और इच्छाओं को किसी व्यवसायी की गणनाओं और इच्छाओं के साथ प्रतिस्थापित कर सकें और वह दे सकें जो उन्हीं के शब्दों में, 'देश को एक अच्छा वाणिज्यिक और औद्योगिक संगठन जो घरेलू उद्योग को अच्छी तरह प्रोत्साहित कर सके'। तो वह क्या करेंगे?

एम. मौगुइन कानून द्वारा व्यापारियों के उन सभी लेन देन का दमन कर देंगे जिनमें वस्तुओं का कम घरेलू कीमत पर खरीदना शामिल है ताकि उन्हें विदेशों में उच्च कीमत पर बेचा जा सके और उससे होने वाली आय को देश में उत्सुकता से मांग की जाने वाली वस्तुओं में परिवर्तित किया जा सके; क्योंकि इन लेनदेनों में ठीक यही हो रहा है कि आयातित मूल्य निर्यातित मूल्य से अधिक है।

इसके विपरीत, फ्रांस में महंगा खरीद कर विदेशों में सस्ती कीमत पर बेचने के विचार पर आधारित सभी उद्योगों को वह बर्दाश्त करेंगे, और न सिर्फ बर्दाश्त करेंगे बल्कि वास्तव में उन्हें प्रोत्साहित करेंगे और जरूरत पड़ी तो सब्सिडी (जनता पर कर

लगा कर) भी प्रदान करेंगे। दूसरे शब्दों में कहें तो, उन सभी चीजों का निर्यात करना जो हमारे लिए उपयोगी हैं ताकि उन चीजों का आयात कर सकें जो हमारे लिए किसी काम के न हों। इस प्रकार, वह हमें बिल्कुल मुक्त छोड़ देंगे यदि हम, उदाहरण के लिए, पेरिस से चीज़ (खाद्य सामग्री) एम्सटर्डम भेजें ताकि अत्याधुनिक फैशन वाली वस्तुओं को एम्सटर्डम से पेरिस मंगा सकें। क्योंकि इस प्रकार के आवागमन से व्यापार संतुलन सदैव हमारे हित में होगा।

फिर भी, यह दुखद है और, मैं साहस के साथ कहता हूं कि यह अपमानजनक भी है, क्योंकि कानून का निर्माण करने वाले ऐसे मामलों में इच्छुक पार्टियों के द्वारा अपने जोखिम पर निर्णय लेने और स्वयं कार्य करने की अनुमति नहीं देंगे। कम से कम तब तो हर कोई अपने कामों की जवाबदेही को वहन करता है; जो गलती करता है वह दंडित होता है और फिर उससे सीख लेता है। लेकिन जब कानून निर्माता नियमों और निषेधों को थोपता है, भले ही उस निर्णय में कोई भयंकर त्रुटि हो, वह त्रुटि पूरे राष्ट्र के लिए आचरण का नियम बन जाती है। फ्रांस में हम आजादी से बहुत प्यार करते हैं, लेकिन हम इसे शायद ही समझ पाते हैं। ओह, आइए इसे बेहतर ढंग से समझने की कोशिश करते हैं! इससे हमारे प्यार में किसी प्रकार की कमी नहीं आएगी।

एम. मौगुइन ने अदम्य साहस के साथ कहा है कि इंग्लैंड में ऐसा कोई राजनेता नहीं है जो व्यापार संतुलन के सिद्धांत को स्वीकार नहीं करता है। नुकसान की गणना करने के बाद, जो उनके अनुसार, हमारे आयात की अधिकता के परिणामस्वरूप होता है, वह चिल्लाया: "यदि इसी तरह की तस्वीर अंग्रेजों के सामने पेश की जाती, तो हाऊस ऑफ कॉमन्स में कोई सदस्य ऐसा नहीं होता जिन्हें यह नहीं लगेगा कि उनकी कुर्सी को खतरा है।"

अपनी तरफ से, मैं पुष्टि करता हूं कि अगर कोई हाउस ऑफ कॉमन्स से कह दे कि: "देश से निर्यात की जाने वाली चीज़ों का कुल मूल्य आयात किए जाने वाले कुल मूल्य से अधिक है," यह खतरा उन्हें तब महसूस होगा; और मुझे संदेह है कि वहां एक भी ऐसा वक्ता मिल सकता है जिसे यह कहने का साहस होगा कि: "अंतर लाभ का प्रतिनिधित्व करता है।"

इंग्लैंड में वे आश्वस्त हैं कि, राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण यह है कि जितना दिया जाता है उससे अधिक प्राप्त किया जाए। इसके अलावा, उन्होंने इस बात का अवलोकन किया है कि यह सभी व्यापारियों की प्रवृति है; और यही कारण है कि उन्होंने लेसीज़ फेअरे (व्यापार को सरकारी हस्तक्षेप से मुक्त रखने) का पक्ष लिया है और वे मुक्त व्यापार को बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

बाजार से जुड़ी बीस भ्रांतियां
- टॉम जी. पॉमर

बाजार तंत्र के माध्यम से सामाजिक समन्वय की समस्याओं को हल करने के गुणों और सीमाओं के बारे में सोचते समय, कुछ सामान्य मिथकों को दूर करना उपयोगी होता है। मिथकों से मेरा मतलब उन बयानों से है जो बिना किसी तर्क या सबूत के पारित कर दिए जाते हैं स्पष्ट रूप से सच हो जाते हैं। वे उस तरह की चीजें हैं जो आप रेडियो पर, दोस्तों से, राजनेताओं से सुनते हैं - और वातावरण में बस वे ही वे प्रतीत होते हैं। उन्हें इस प्रकार बार बार दोहराया जाता है जैसे कि वे कोई गहरी समझदारी वाली बात हो।

इसमें जोखिम वाली बात यह है कि, चूंकि वे अत्यंत व्यापक होते हैं इसलिए उन्हें आलोचनात्मक परीक्षण के अधीन नहीं रखा जाता है। मैं यहां यही करने का प्रस्ताव रखता हूं।

सभी नहीं, लेकिन ऐसे अधिकांश मिथक उन लोगों द्वारा फैलाए जाते हैं जो मुक्त बाजारों के प्रति शत्रुतापूर्ण नजरिया रखते हैं। कुछ मिथक ऐसे भी हैं जो शायद मुक्त बाजारों को लेकर अति उत्साहित लोगों के द्वारा छोटे से इलाकों में फैले हुए हैं। नीचे

ऐसे ही बीस मिथकों को चार श्रेणियों में बांट कर प्रस्तुत किया गया है:

नैतिक आलोचनाएं;

आर्थिक आलोचनाएं;

नैतिक और आर्थिक आलोचनाओं का वर्ण संकर;

और अत्यधिक उत्साही प्रतिवाद

नैतिक आलोचनाएं

1. बाजार अनैतिक या नैतिक रूप से निरपेक्ष होते हैं

बाजार लोगों को केवल शुद्ध और सरल लाभ की गणना के बारे में विचार कराता है। बाजार में होने वाले विनिमय में न तो कोई नैतिकता होती है, और न ही उस बात के लिए कोई प्रतिबद्धता जो हमें इंसानों के रूप में अलग पहचान दिलाती है: अर्थात् उन विषयों पर विचार करने की हमारी काबिलियत जो न केवल हमारे लिए फायदेमंद है, बल्कि क्या सही है और क्या गलत है, क्या नैतिक है और क्या अनैतिक है।

अधिक झूठे दावे की कल्पना करना कठिन होगा। विनिमय की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए न्याय के प्रति सम्मान रखना ही

पड़ता है। जो लोग विनिमय करते हैं वे उन लोगों से भिन्न होते हैं जो केवल लेते हैं; अर्थात विनिमय करने वाले लोग अन्य लोगों के वैद्य दावों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हैं। सबसे पहले तो लोग विनिमय प्रक्रिया में इस कारण ही संलग्न होते हैं, क्योंकि वे उस वस्तु को हासिल करना चाहते हैं जो दूसरों के पास होती है, लेकिन वे उसे यूं ही नहीं ले सकते क्योंकि वे नैतिकता और कानून के वश में होते हैं। विनिमय, संसाधनों के एक से दूसरे को होने वाले आवंटन वाला परिवर्तन है; इसका मतलब यह है कि प्रत्येक विनिमय को एक आधार रेखा के अनुसार मापा जाता है। जैसे कि अगर कोई विनिमय नहीं होता है, तो सभी पक्षों के पास वही रहता है जो उनके पास पहले से होता है। विनिमय के ढाँचे के लिए न्याय पर आधारित एक ठोस नींव की आवश्यकता होती है। ऐसे नैतिक और कानूनी आधारों के बगैर कोई विनिमय नहीं हो सकता है।

हालांकि, बाजारों की स्थापना महज कानून के लिए सम्मान की भावना से ही नहीं होती हैं। बाजारों की स्थापना इंसानों के द्वारा अपनी इच्छाओं की पूर्ति के साथ साथ स्वयं को दूसरों के स्थान पर रखते हुए उनकी इच्छाओं की पूर्ति करने की योग्यता से भी होती है। किसी भोजनालय का संचालक उस व्यवसाय में बहुत अधिक दिनों तक नहीं टिक पाएगा यदि वह अपने यहां खाना खाने आने वालों की पसंद का ख्याल नहीं रखेगा। यदि ग्राहक

खाना खाकर बीमार हो जाते हैं तो वे दुबारा वहां कभी नहीं आएंगे। यदि उन्हें खाने का स्वाद पसंद नहीं आता है तो भी वे दुबारा वहां कभी नहीं आएंगे। भोजनालय का संचालक व्यवसाय से बाहर हो जाएगा। बाजार से केवल उन प्रतिभागियों को प्रोत्साहन प्राप्त होता है जो स्वयं को दूसरे के स्थान पर रखते हैं, उनके पसंद का ध्यान रखते हैं, और उस हिसाब से देखने की कोशिश करते हैं जिससे कि दूसरे देखते हैं।

बाजार, हिंसा का विकल्प हैं। बाजार हमें सामाजिक बनाता है। बाजार हमें यह ध्यान दिलाता है कि दूसरे लोग भी मायने रखते हैं।

2. बाजार लालच और स्वार्थ को प्रोत्साहित करता है

बाजार में लोग केवल न्यूनतम कीमतें प्राप्त करने अथवा अधिकतम लाभ हासिल करने का प्रयास करते हैं। जैसे कि, उन्हें दूसरों की कोई परवाह न हो और वे केवल स्वार्थ और लालच द्वारा प्रेरित हों।

बाजार न तो स्वार्थ और लालच को प्रोत्साहित करता है और न ही उन्हें हतोत्साहित करते हैं। वे सबसे परोपकारी लोगों के साथ साथ सबसे स्वार्थी लोगों के लिए अपने उद्देश्यों को शांति से

आगे बढ़ाना संभव बनाते हैं। जो लोग अपने जीवन को दूसरों को बाजार की सहायता लेने में मदद करने में समर्पित कर देते हैं ताकि वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें, उनकी संख्या भी उन लोगों से कम नहीं है जिनका लक्ष्य अपने धन के भंडार को बढ़ाना है। कुछ लोग तो इस उद्देश्य से भी धन जमा करते हैं ताकि वे दूसरों की मदद करने के योग्य बन सकें। जॉर्ज सोरोस और बिल गेट्स इसी प्रकार वाले लोगों के उदाहरण हैं; वे बड़ी मात्रा में पैसा कमाते हैं, ताकि वे अपनी क्षमता बढ़ा सकें और अपने विशाल परोपकारी गतिविधियों के माध्यम से कम से कम आंशिक रूप से ही सही दूसरों की मदद कर सकें।

मदर टेरेसा अपने पास उपलब्ध धन का उपयोग अधिक से अधिक लोगों को खाना खिलाने, कपड़े पहनने और आराम देने के लिए करना चाहती है। बाजार मदर टेरेसा को मजबूर लोगों की सहायता के लिए न्यूनतम कीमतों पर कंबल, भोजन और दवाएं हासिल करने के मौके प्रदान करता है। बाजार धन के निर्माण के मौके उपलब्ध कराता है जिसका उपयोग दुर्भाग्यशाली लोगों की मदद के लिए किया जा सकता है। यह परोपकार के तहत दूसरों की मदद करने की क्षमता को अधिकतम करने को सरल बनाता है। बाजार परोपकार के तहत किए जाने वाले दान कार्य को संभव बनाता है।

लोगों के उद्देश्यों को उनके "स्व-हित" के साथ जोड़कर देखना एक आम गलती है, जो बाद में भ्रमित होकर "स्वार्थ" में तब्दील हो जाता है। बाजार में लोगों के उद्देश्य वास्तव में स्वयं के उद्देश्य हैं, लेकिन उद्देश्यों के साथ स्वयं के रूप में हम दूसरों के हितों और कल्याण के बारे में भी चिंतित होते हैं- जैसे कि हमारे परिवार के सदस्य, हमारे मित्र, हमारे पड़ोसी, और यहां तक कि वे अजनबी भी जिन्हें हम कभी नहीं मिलेंगे। और जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, बाजार लोगों को अजनबियों सहित दूसरों की जरूरतों पर विचार करने के लिए प्रशिक्षित करने में मदद करते हैं।

जैसा कि अक्सर बताया गया है, मानव समाज का सबसे गहरा आधार न तो प्यार है और न ही दोस्ती। प्यार और दोस्ती, पारस्परिक लाभ से युक्त वह फल है जो परस्पर सहयोग के द्वारा प्राप्त होता है, भले ही वह छोटे समूह में हो अथवा बड़े समूह में। इस तरह के पारस्परिक लाभ के बिना, समाज बस असंभव होगा। आपसी लाभ की संभावना के बिना, टॉम का हित, जून का अहित करेगा, और जून का हित टॉम का अहित करेगा। और वे कभी भी सहयोगी नहीं हो सकते, कभी सहकर्मी नहीं हो सकते, कभी दोस्त नहीं बन सकते। बाजारों द्वारा सहयोग में जबरदस्त वृद्धि होती है, और यह उन लोगों के बीच भी सहयोग की अनुमति देता है जो व्यक्तिगत रूप से

एक-दूसरे को नहीं जानते हैं, जो एक ही धर्म या भाषा को साझा नहीं करते हैं, और जो कभी नहीं मिलते हैं। सु-परिभाषित और कानूनी रूप से सुरक्षित संपत्ति के अधिकार से युक्त व्यापार और व्यापार को बढ़ावा देने की क्रिया अजनबियों के बीच परोपकार के कार्य को संभव बनाती है और सीमाओं के पार प्यार और दोस्ती को बढ़ावा देती है।

आर्थिक आलोचनाएं

3. बाजार पर निर्भरता एकाधिकार को बढ़ावा देता है

सरकारी हस्तक्षेप के बिना, मुक्त बाजारों पर निर्भरता कुछ बड़ी फर्मों को सब कुछ बेचने के लिए प्रेरित करेगी। बाजार स्वाभाविक रूप से एकाधिकार बनाते हैं, क्योंकि सीमांत उत्पादकों को उन फर्मों द्वारा निचोड़ा जाता है जो अपने स्वयं के लाभ के अलावा कुछ नहीं चाहते हैं, जबकि सरकारें सार्वजनिक हित से प्रेरित होती हैं और एकाधिकार को नियंत्रित करने के लिए कार्य करेंगी।

सरकारें कर सकती हैं - और अक्सर करती भी हैं - अपने चहेते व्यक्तियों या समूहों को एकाधिकार दे सकती हैं; अर्थात्, वे दूसरों को बाजार में प्रवेश करने से रोकती हैं और उनके बीच ग्राहकों के लिए होने वाली प्रतिस्पर्धा के रिवाज पर रोक लगाती

हैं। एकाधिकार का यही अर्थ है। एकाधिकार किसी सरकारी एजेंसी को भी दिया जा सकता है (जैसा कि कई देशों में सरकारी एजेंसियों को डाक सेवा के क्षेत्र में एकाधिकार प्राप्त है) या इसे किसी पसंदीदा फर्म, परिवार या व्यक्ति को दिया जा सकता है।

क्या मुक्त बाजार एकाधिकार को बढ़ावा देते हैं? ऐसा सोचने का कोई कारण नहीं है या बहुत कम कारण है, लेकिन ऐसा न सोचने के अनेकों कारण हैं। मुक्त बाजार व्यक्तियों के बाजार में प्रवेश करने, बाजार से बाहर निकलने और किसी से भी अपनी मर्जी से खरीद और बिक्री करने की स्वतंत्रता पर आधारित होते हैं। यदि प्रवेश की स्वतंत्रता वाले बाजारों में फर्म औसत से अधिक लाभ कमाती हैं, तो वे लाभ प्रतिद्वंद्वियों को उन लाभों को दूर करने के लिए आकर्षित करते हैं। अर्थशास्त्र के कुछ साहित्य ऐसी काल्पनिक स्थितियों का वर्णन प्रस्तुत करते हैं जिनमें बाजार की कुछ परिस्थितियों में अनवरत "सुविधा शुल्क (रेंट)" की व्यवस्था बनी रहती है, जो कि अवसर लागत के अधिशेष से आय अर्जित करना है, जिसे अन्य प्रयोगों में संसाधनों द्वारा अर्जित करने के तौर पर परिभाषित किया गया है। लेकिन विशिष्ट संसाधनों के स्वामित्व (उदाहरण के लिए, रेम्ब्रांट की एक पेंटिंग) जैसे अपेक्षाकृत अरुचिकर मामलों के अलावा इस संदर्भ में कोई ठोस उदाहरण खोजना बेहद कठिन

है। इसके विपरीत, ऐतिहासिक रिकॉर्ड सरकारों के अपने समर्थकों को विशेष विशेषाधिकार देने के उदाहरणों से भरे पड़े हैं।

बाजार में प्रवेश करने की आजादी और अपने पसंद की जगह से खरीदने की आजादी मिलने से सुविधा या सेवा हासिल करने के लिए पहले प्रदान की जाने सुविधा शुल्कों में कमी आती है और इससे उपभोक्ता हितों को प्रोत्साहन प्राप्त होता है। इसके विपरीत, सरकारों को यह निर्धारित करने की शक्ति प्रदान करना कि कौन सामान और सेवाएं प्रदान कर सकता है या नहीं, एकाधिकार की स्थिति पैदा करता है - यह तथ्य है और, यह ऐतिहासिक रूप से देखी गई एकाधिकार की स्थिति है - जो उपभोक्ताओं के लिए हानिकारक हैं और जो मानव जाति की उन उत्पादक शक्तियों को रोकते हैं जिन पर मानव जाति की बेहतरी टिकी हुई है। यदि एकाधिकार की स्थिति को पैदा करना बाजार का दस्तूर होता, तो हमें इतने सारे लोग सरकार के पास जाते हुए और अपने कम शक्तिशाली प्रतिस्पर्धियों और ग्राहकों की कीमत पर स्वयं के लिए एकाधिकार की मांग करते दिखाई नहीं पड़ते। वे इसके बजाय बाजार के माध्यम से ही अपना एकाधिकार स्थापित कर सकते थे?

यह हमेशा याद रखने योग्य है कि सरकार स्वयं एकाधिकार का प्रयोग करना चाहती है; यह सरकार की चारित्रिक विशेषता को

उत्कृष रूप से परिभाषित करता है कि यह किसी दिए गए भौगोलिक क्षेत्र में बल के प्रयोग पर एकाधिकार का प्रयोग करती है। हमें इस तरह के एकाधिकारी से प्रतिस्पर्धा के लिए बाजार (जो प्रतिस्पर्धा करने की स्वतंत्रता से परिभाषित होता है) की तुलना में अधिक अनुकूल होने की उम्मीद क्यों करनी चाहिए,?

4. बाजार सही जानकारी पर निर्भर करते हैं, सूचना उपलब्ध कराने के लिए सरकारी विनियमन की आवश्यकता होती है

बाजारों के कार्यकुशल होने के लिए आवश्यक है कि वहां सक्रिय सभी सहभागी अपनी समस्त गतिविधियों पर आने वाली लागत के बारे में पूरी तरह से अवगत हों। यदि कुछ सहभागियों के पास दूसरों की तुलना में अधिक जानकारी है, तो इस तरह की विषमताएं अक्षमता और अन्यायपूर्ण परिणामों को जन्म देंगी। सरकार को ऐसी जानकारी प्रदान करने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ता है जिसमें बाजारों की कमी है और ऐसे परिणाम तैयार करने के लिए जो कुशल और न्यायसंगत दोनों हैं।

हमारी जरूरत की अन्य सभी चीजों की ही तरह, सूचना की भी एक कीमत होती है। अर्थात इसे पाने के लिए हमें किसी चीज का त्याग करना पड़ता है। सूचना अपने आप में एक उत्पाद है जिसका बाजारों में आदान-प्रदान किया जाता है; उदाहरण के लिए, हम उन पुस्तकों को खरीदते हैं जिनमें जानकारी होती है क्योंकि हम पुस्तक में दी गई जानकारी को उस मूल्य से अधिक महत्व देते हैं जिनका हम इसके लिए त्याग करते हैं। बाजारों को संचालन के लिए तुलनात्मक रूप से सटीक जानकारी की उतनी आवश्यकता अब नहीं होती है, जितनी की लोकतंत्र की होती है। बाजार के प्रतिभागियों के लिए सूचना महंगी होती है लेकिन राजनीतिक प्रतिभागियों के लिए निशुल्क होती है, यह अवधारणा हानिकारक तरीके से अवास्तविक है। न तो राजनेताओं और न ही मतदाताओं के पास सही जानकारी है। उल्लेखनीय यह है कि, राजनेताओं और मतदाताओं के पास बाजार में सक्रिय सहभागियों की तुलना में पर्याप्त मात्रा में जानकारी हासिल करने के लिए प्रोत्साहन कम होता है, क्योंकि वे अपना पैसा खर्च नहीं कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, जब सार्वजनिक कोष से पैसा खर्च किया जाता है, तो राजनेताओं के पास उतनी सावधानी बरतने या उतनी जानकारी हासिल करने का प्रोत्साहन नहीं होता जितना कि लोग अपना पैसा खर्च करते समय करते हैं।

राज्यों के हस्तक्षेप का समर्थन आम तौर पर इस दलील पर आधारित होता है कि उपभोक्ताओं और विशिष्ट सेवा प्रदाताओं के बीच सूचना संबंधी असममितताएं होती हैं। उदाहरण के लिए, चिकित्सक रोगियों की तुलना में चिकित्सा मामलों के बारे में लगभग हमेशा अधिक जानकार होते हैं; इसलिए हम अपना इलाज खुद करने की बजाय डॉक्टरों के पास जाते हैं। उसके कारण, यह आरोप लगाया जाता है कि उपभोक्ताओं के पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि कौन से डॉक्टर अधिक सक्षम हैं, या क्या उन्हें सही इलाज मिल रहा है, या क्या वे बहुत अधिक भुगतान कर रहे हैं। तब समाधान के तौर पर राज्य द्वारा लाइसेंस प्रणाली को प्रस्तावित किया जा सकता है; और लाइसेंस जारी कर, ऐसा कहा जाता है कि, लोग चिकित्सक की योग्यता, सक्षमता और ईमानदारी को लेकर आश्वस्त हो जाते हैं। हालाँकि, चिकित्सा और अन्य व्यवसायों को लाइसेंस जारी करने की प्रणाली से संबंधित अध्ययनों के साक्ष्य इसके सर्वथा विपरीत हैं। एक तरफ जहां बाजारों की प्रवृति प्रमाणन के वर्गीकरण की होती है, वहीं दूसरी तरफ लाइसेंसिंग हां अथवा नहीं वाली द्विअंगी प्रक्रिया होती है; जैसे कि आप लाइसेंस धारक हैं, या आप लाइसेंस धारक नहीं है। इसके अलावा, लाइसेंस प्राप्त व्यवसायों में यह सामान्य है कि लाइसेंस रद्द कर दिया जाता है यदि लाइसेंस प्राप्त पेशेवर "गैर-व्यावसायिक आचरण" में संलग्न होता है, जिसे आमतौर पर विज्ञापन सहित

परिभाषित किया जाता है! लेकिन विज्ञापन उन माध्यमों में से एक है जिसे बाजारों ने विकसित किया है ताकि उनकी सहायता से उत्पादों और सेवाओं की उपलब्धता के बारे में, सापेक्ष गुणों के बारे में और कीमतों के बारे में जानकारी प्रदान की जा सके। लाइसेंस जारी करने की प्रणाली सूचना संबंधी असममितताओं का समाधान नहीं है; बल्कि यही कारण है।

5. बाजार केवल तभी काम करते हैं जब असीमित संख्या में सही जानकारी वाले लोग एक समान वस्तुओं का व्यापार करते हैं

बाजार की दक्षता, जिसमें उत्पादन को अधिकतम किया जाता है और लाभ को कम से कम किया जाता है, के लिए आवश्यक है कि वहां कोई भी कीमतों को निर्धारित करने वाला न हो, अर्थात किसी भी खरीदार या विक्रेता के बाजार में प्रवेश करने या बाहर निकलने से, कीमतें प्रभावित नहीं हों। पूरी तरह से प्रतिस्पर्धी बाजार में, कोई भी व्यक्तिगत खरीदार या विक्रेता कीमतों पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता है। सभी उत्पाद समरूप हैं और उत्पादों और कीमतों के बारे में जानकारी मूल्य विहिन है। लेकिन वास्तविक बाजार पूरी तरह

से प्रतिस्पर्धी नहीं हैं, यही वजह है कि सरकार को उसमें हस्तक्षेप करने और चीजों को ठीक करने की आवश्यकता पड़ती है।

आर्थिक बातचीत के अमूर्त मॉडल उपयोगी साबित हो सकते हैं, लेकिन जब तय मानदंडों से युक्त शब्दावलियों जैसे कि "संपूर्ण" को सैद्धांतिक अमूर्तता से जोड़ा जाता है, तो बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है। यदि बाजार की एक निश्चित स्थिति को "पूर्ण" प्रतियोगिता के रूप में परिभाषित किया जाता है, तो बाकी सारी चीजें "अपूर्ण" हो जाती है और उनमें सुधार करने की जरूरत होती है, संभवतः बाजार से बाहर की किसी एजेंसी द्वारा। वास्तव में, "पूर्ण" प्रतियोगिता केवल एक मानसिक मॉडल है, जिससे हम कुछ दिलचस्प तथ्यों को निकाल सकते हैं, जैसे कि संसाधनों को निर्देशित करने में मुनाफे की भूमिका (जब वे औसत से अधिक होते हैं, तो प्रतिस्पर्धी आपूर्ति बढ़ाने के लिए संसाधनों को स्थानांतरित करेंगे, कीमतों में कटौती करेंगे, और मुनाफे को कम करेंगे) और नकदी रखने की मांग को निर्धारित करने में अनिश्चितता की भूमिका (चूंकि यदि जानकारी मूल्य विहीन होती, तो हर कोई अपना सारा पैसा निवेश कर देता और इसे उसी समय भुनाने की व्यवस्था करता, जब से उन्हें निवेश करने की आवश्यकता होती, जिससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि नकदी का अस्तित्व सूचना की कमी की एक

विशेषता है)। "पूर्ण" प्रतियोगिता बाजारों को बेहतर बनाने के लिए कोई मार्गदर्शक नहीं है; यह बाजार प्रक्रियाओं के मानसिक मॉडल के लिए चुना गया एक खराब शब्द है जो प्रतिस्पर्धा की वास्तविक दुनिया की स्थितियों से अलग है।

बाजारों को 'पूर्णता' की ओर ले जाने की एजेंसी बनने वाले उस राज्य से हम आशा करते हैं कि वह भी उन 'श्रेष्ठ' जनतांत्रिक नीतियों से उत्पन्न हुआ होगा, जिसमें मतदाताओं और प्रतिभागियों की अनगिनित संख्या का नीतियों पर कोई व्यक्तिगत प्रभाव नहीं होगा, सभी नीतियां समरूप होंगी और नीतियों की लागत और लाभ से जुड़ी सूचना मूल्य विहिन होगी। जाहिर तौर पर ऐसा कभी नहीं होता है।

नीतिगत विकल्पों में से चुनने की वैज्ञानिक पद्धति के लिए आवश्यक है कि चयन वास्तविक रूप में उपलब्ध विकल्पों में से किए जाएं। ऊपर बताए गए सभी तरीकों में राजनीतिक पसंद और बाजार की पसंद दोनों ही "अपूर्ण" हैं, इसलिए बाजार की प्रक्रियाओं और राजनैतिक प्रक्रियाओं के तहत चयन वास्तविकता के आधार पर किया जाना चाहिए - न कि "संपूर्णता" - के आधार पर।

वास्तविक बाजारों में सूचना प्रदान करने और बाजार में सक्रिय सहभागियों के बीच पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग उत्पन्न

करने के ढेर सारे तरीके उत्पन्न होते हैं। बाजार लोगों को सहयोग के तौर तरीकों सहित जानकारी प्राप्त करने की रूपरेखा प्रदान करते हैं। विज्ञापन, क्रेडिट ब्यूरो, प्रतिष्ठा, कमोडिटी एक्सचेंज (वस्तु विनिमय), स्टॉक एक्सचेंज, प्रमाणन बोर्ड, और ऐसे ही कई अन्य संस्थान पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग को सुविधाजनक बनाने के लक्ष्य की पूर्ति के लिए बाजारों के भीतर उत्पन्न होते हैं। बाजार परिपूर्ण नहीं हैं इसलिए उन्हें अस्वीकृत करने की बजाय, हमें मानव कल्याण की अपूर्ण स्थिति को सुधारने के लिए बाजार का उपयोग करने के और तरीकों की तलाश करनी चाहिए।

और अंत में, प्रतिस्पर्धा बाजार की ही एक अवस्था है लेकिन इसे इस रूप में देखने की बजाय प्रतिद्वंद्विता वाले व्यवहार की प्रक्रिया के रूप में ज्यादा देखा जाता है। जब उद्यमी बाजार में प्रवेश करने और दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए स्वतंत्र होते हैं, तथा ग्राहक जब कई उत्पादकों में से किसी एक को चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं, तो ग्राहकों के लिए उत्पादकों के बीच प्रतिद्वंद्विता का रिवाज उन्हें ग्राहकों के अनुकूल व्यवहार के लिए प्रेरित करता है।

6. बाजार के लिए सार्वजनिक (सामूहिक) वस्तुओं का उत्पादन करना संभव नहीं है

अगर एक ही सेब हैं और मैं उस सेब को खा लूं, और आप उसे नहीं खा सकते; तो उस सेब की खपत विशुद्ध रूप से प्रतिद्वंद्विता है। अगर मैं एक फिल्म दिखाता हूं और नहीं चाहता कि अन्य लोग भी इसे देखें, तो भुगतान न करने वालों को बाहर रखने के लिए मुझे पैसे खर्च करने होंगे और दीवारें बनवानी होंगी। कुछ वस्तुएं, जिनकी खपत में प्रतिद्वंद्विता नहीं होती है और जिनका बहिष्करण (अवांछनीय लोगों को उपभोग करने से दूर रखना) महंगा है, उन्हें बाजारों में उत्पादित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि हर किसी के पास इस बात का प्रोत्साहन (इंसेंटिव) होता है कि वे दूसरों के द्वारा उत्पादन करने का इंतेजार करें। यदि आप किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं, और मैं उसका यूं ही उपभोग कर सकता हूं, तो फिर मेरे पास उसका उत्पादन करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं है। ऐसा ही आपके लिए भी है। ऐसी वस्तुओं की सार्वजनिकता के लिए राज्य द्वारा प्रावधान किए जाने की आवश्यकता होती है। इस तरह के उत्पादों में न केवल रक्षा और कानूनी व्यवस्था वाले प्रावधान शामिल होते हैं, बल्कि शिक्षा, परिवहन, स्वास्थ्य सेवा जैसी कई अन्य सेवाएं भी शामिल

होती हैं। इस तरह के सामानों का उत्पादन करने के लिए बाजारों पर कभी भी भरोसा नहीं किया जा सकता है, क्योंकि भुगतान न करने वाले उपभोक्ता, भुगतान करने वाले उपभोक्ताओं द्वारा चुकाई जाने वाली कीमत पर आनंद लेंगे, और चूंकि हर कोई एक फ्री-राइडर (दूसरों द्वारा चुकाई जाने वाली कीमत पर आनंद उठाने वाला) बनना चाहेगा, इसलिए कोई भी भुगतान नहीं करेगा। इसलिए, ऐसी वस्तुओं का उत्पादन केवल सरकार के द्वारा ही किया जा सकता है।

राज्य के लिए सार्वजनिक वस्तुओं वाला स्पष्टीकरण सबसे अधिक गलत तरीके से उपयोग किया जाने वाला आर्थिक तर्क है। वस्तुओं के उपभोग में प्रतिद्वंद्विता है या नहीं, यह प्रायः वस्तुओं की अंतर्निहित विशेषता नहीं होती, बल्कि उपभोग करने वाले समूह के आकार की विशेषता होती है। जैसे एक स्विमिंग पूल दो लोगों के लिए गैर-प्रतिद्वंद्वी हो सकता है, लेकिन दो सौ लोगों के लिए काफी प्रतिद्वंद्वी हो सकता है। और बहिष्करण (अवांछनीय लोगों को उपभोग करने से दूर रखना) की लागत सभी वस्तुओं पर समान रूप से लागू होती है, चाहे वे सार्वजनिक हों या निजी। उदारहण के लिए, यदि मैं आपको अपने सेब खाने से रोकना चाहता हूं, तो मुझे उनकी रक्षा के लिए कुछ कार्रवाई करनी पड़ सकती है, जैसे कि बाड़ बनाना।

कई वस्तुएं जिनका उपभोग में गैर- प्रतिद्वंद्वी हैं, उनका उत्पादन सिर्फ इसलिए किया जाता है क्योंकि उद्यमी ने गैर-भुगतानकर्ताओं को बाहर रखने के साधनों में निवेश किया हुआ होता है, जैसे कि पेशेवर फुटबॉल खेल (यदि आप इसे देखते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि मैं इसे नहीं देख सकता)।

असल में, वस्तुओं की अंतर्निहित विशेषता नहीं होने के बावजूद, कई वस्तुओं का कथित सार्वजनिक स्वामित्व राजनैतिक निर्णय की विशेषता होती है जो वस्तुओं की उपलब्धता विशिष्टता विहिन और यहां तक कि मूल्य विहिन आधार पर भी कराती है। यदि राज्य "फ्रीवे (सुविधा शुल्क रहित रास्तों)" का निर्माण करता है, तो यह देखना कठिन होगा कि निजी उद्यम "फ्रीवे" का उत्पादन कैसे कर सकता है, जो कि किराया विहिन परिवहन हो, और जो प्रतिस्पर्धा कर सकता हो। लेकिन ध्यान दें कि "फ्रीवे" वास्तव में मुफ़्त नहीं है, क्योंकि इसे करों के माध्यम से वित्तपोषित किया जाता है (जिसमें आनंद से बहिष्करण का एक विशेष कठोर रूप शामिल है, और जिसे जेल के रूप में जाना जाता है), और यह भी कि मूल्य निर्धारण की अनुपस्थिति, वस्तुओं के निष्प्रभावी उपयोग के तरीकों का प्राथमिक कारण है, जैसे ट्रैफिक जाम, जो दुर्लभ संसाधनों (भीड़भाड़ में स्थान) को उनके सबसे मूल्यवान उपयोगों के लिए आवंटित करने के लिए एक तंत्र की कमी को दर्शाता है। वास्तव

में, दुनिया भर का रुझान सड़कों के मूल्य निर्धारण की ओर रहा है, जो सार्वजनिक वस्तुओं के तर्क को सड़कों से संबंधित राज्य के प्रावधान में कटौती करता है।

कई सामान जो बाजारों में उपलब्ध कराना कथित रूप से असंभव है, उन्हें बाजार तंत्र के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता रहा है या वर्तमान में कराया जा रहा है - जिसमें प्रकाशस्तंभ (लाइट हाऊसेज़) से लेकर शिक्षा तक, पुलिसिंग से लेकर परिवहन तक शामिल है, और जो बताता है कि कथित सार्वजनिकता का सामान्य स्तुतिगान अनुचित है, या कम से कम अतिरंजित है।

तर्क का एक सामान्य रूप है जो कहता है कि कुछ वस्तुओं का उत्पादन कथित तौर पर केवल राज्य की कार्रवाई के माध्यम से ही होता है, वह यह है कि कुछ "वाह्य कारक" हैं जो मूल्य तंत्र के माध्यम से अनुबंधित नहीं हैं। इस प्रकार, व्यापक शिक्षा, शिक्षित लोगों के अतिरिक्त अन्य लोगों के लिए भी सार्वजनिक लाभ उत्पन्न करती है, जो कथित तौर पर राज्य के प्रावधान और सामान्य कर राजस्व के माध्यम से वित्तपोषण के कार्य को उचित ठहराते हैं। लेकिन दूसरों को होने वाले लाभ के बावजूद, जो बड़े या छोटे हो सकते हैं, शिक्षित व्यक्तियों को होने वाले लाभ उनके लिए इतने महान हैं कि वे शिक्षा में पर्याप्त निवेश को प्रेरित करते हैं। सार्वजनिक लाभ हमेशा फ्री राइडर्स

(सेवाओं का मुफ्त में आनंद लेने वाले) के दलबदल को उत्पन्न नहीं करते हैं।

दरअसल, आज अनुसंधान का जो खजाना प्रदर्शित हो रहा है, वह राज्य के द्वारा शिक्षा पर एकाधिकार कायम रखने के दौरान प्रायः उन अत्यंत गरीबों के लिए उसका उत्पादन करने में विफल रहता है, जो शिक्षा के लाभों को समझते हुए अपनी अल्प आय का अच्छा खासा हिस्सा अपने बच्चों को शिक्षित करने के कार्य में निवेश करते हैं। उनके बच्चों के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने से चाहे जो भी वाह्य कारक उत्पन्न हों, वे उन्हें अपने बच्चों की शिक्षा के लिए अपने स्वयं के पैसे से भुगतान करने से नहीं रोक पाते।

अंत में, यह याद रखना चाहिए कि बाजार के माध्यम से सार्वजनिक वस्तुओं के कुशल उत्पादन की असंभवता का आरोप लगाने वाला लगभग हर तर्क इस संभावना पर कम से कम समान रूप से लागू होता है - और कई मामलों में अधिक दृढ़ता से लागू होता है - कि राज्य सार्वजनिक वस्तुओं का उत्पादन करेगा। एक न्यायपूर्ण और कानून शासित राज्य का अस्तित्व और संचालन अपने आप में एक सार्वजनिक हित है, अर्थात, इसके लाभों का उपभोग प्रतिद्वंद्विता से रहित है (कम से कम नागरिकों के बीच), और इसके रखरखाव में सहयोग न करने वाले उपभोक्ताओं को इसका लाभ उठाने से रोकना

महंगा होगा (जैसे सुधि मतदाता)। राजनेताओं और मतदाताओं के लिए न्यायपूर्ण और कुशल सरकार बनाने के लिए प्रोत्साहन बहुत अधिक प्रभावशाली नहीं हैं, निश्चित रूप से तब और नहीं जब इनकी तुलना उद्यमियों और उपभोक्ताओं को बाजार में सहयोग के माध्यम से सार्वजनिक वस्तुओं को प्राप्त करने वाले प्रोत्साहन से हो। इसका मतलब यह नहीं है कि सार्वजनिक वस्तुओं के उत्पादन में राज्य की कभी कोई भूमिका नहीं होनी चाहिए, लेकिन इसे अपने नागरिकों को राज्य द्वारा सार्वजनिक वस्तुओं को प्रदान करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी के समक्ष झुकने के लिए कम इच्छुक होने के लिए तैयार करना चाहिए। वास्तव में, राज्य को जितनी अधिक जिम्मेदारियां दी जाती हैं, उसके द्वारा उन सार्वजनिक वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम होने की संभावना कम होती जाती है, जैसे कि अपने नागरिकों के अधिकारों की आक्रामकता से रक्षा, जिससे उन्हें अतिरिक्त विशेष लाभ प्राप्त हो सकता है।

7. नकारात्मक या सकारात्मक वाह्य प्रभाव होने की स्थिति में बाजार काम नहीं करते (या काम करने में अक्षम होते हैं)

बाजार तभी काम करते हैं जब उसके कार्यों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले सभी प्रभावों को निर्णय लेने

वाले वहन करें। यदि उत्पादन में किसी प्रकार का योगदान दिए बिना लोग उस वस्तु का लाभ प्राप्त करते हैं, तो बाजार सही मात्रा में उत्पादन करने में विफल हो जाएगा। इसी तरह, यदि लोगों को "नकारात्मक लाभ" प्राप्त होते हैं, अर्थात, यदि उन्हें नुकसान होता है और माल के उत्पादन खर्च में उन लागतों को जोड़ने का निर्णय ध्यान में नहीं रखा जाता है, तो बाजार दूसरों की कीमत पर लाभ अर्जित करेगा, क्योंकि गतिविधियों का लाभ पार्टियों के एक समूह को प्राप्त होता है और लागत दूसरे द्वारा वहन की जाती है।

महज वाह्य प्रभावों के अस्तित्व के कारण राज्य कुछ गतिविधियों या निजी चयन के प्रकटीकरण का अधिग्रहण कर ले, यह कोई तर्क नहीं बनता है। फैशनेबल कपड़े और अच्छी साज सज्जा की वस्तुएं बहुत सारे सकारात्मक वाह्य प्रभाव उत्पन्न करते हैं, क्योंकि अन्य लोग उन लोगों की प्रशंसा करते हैं जो अच्छी तरह से तैयार रहते हैं या सुसज्जित रहते हैं, लेकिन यह इस बात का कारण नहीं बनता है कि राज्य कपड़े और साज सज्जा की वस्तुओं का चुनाव या प्रावधान करे। बागवानी, वास्तुकला, और कई अन्य गतिविधियां दूसरों पर सकारात्मक वाह्य प्रभाव उत्पन्न करती हैं, लेकिन लोग अपने बगीचों और अपने भवनों को समान रूप से सुशोभित करने का कार्य स्वयं

करते हैं। उन सभी मामलों में, केवल उत्पादकों को होने वाले लाभ, जिनमें उन लोगों की स्वीकृति भी शामिल है, जिन पर सकारात्मक वाह्य प्रभाव पड़ते हैं, उन्हें माल का उत्पादन करने के लिए प्रेरित करने के लिए पर्याप्त हैं। अन्य मामलों में, जैसे कि टेलीविजन और रेडियो प्रसारण कार्य का प्रावधान, सार्वजनिक भलाई के कार्य अन्य वस्तुओं के प्रावधान से "बंधे हुए" हैं, जैसे कि फर्मों के लिए विज्ञापन; सार्वजनिक वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए आवश्यक तंत्रों की विभिन्नता उतने ही महान हैं जितने कि उन्हें पैदा करने वाले उद्यमियों की सरलता।

हालांकि, यह ***नकारात्मक*** वाह्य प्रभावों का अस्तित्व ही है जो आम तौर पर लोगों को बाजार तंत्र की प्रभावोत्पादकता या न्याय पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित करता है। प्रदूषण सबसे अधिक उद्धृत उदाहरण है। यदि कोई उत्पादक लाभप्रद रूप से उत्पादों का उत्पादन कर सकता है क्योंकि वह उत्पादन की लागत दूसरों पर थोपता है, जिन्होंने उत्पादन प्रक्रिया का हिस्सा बनने के लिए सहमति नहीं दी है - जैसे, हवा में भारी मात्रा में धुआं या नदी में रसायनों को फेंकना - तो शायद वह ऐसा ही करेगा। जो लोग प्रदूषित हवा में सांस लेते हैं या जहरीला पानी पीते हैं वे उत्पाद के उत्पादन की लागत वहन करेंगे, जबकि उत्पादक को उत्पाद की बिक्री से लाभ अर्जित होगा। हालाँकि, ऐसे मामलों में समस्या यह नहीं है कि बाज़ार विफल हो गए हैं,

बल्कि यह है कि वे अनुपस्थित हैं। बाजार संपत्ति पर टिके होते हैं और जब तक संपत्ति के अधिकारों को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया जाता है या उन्हें कड़ाई से लागू नहीं किया जाता है तब तक वे कार्य नहीं कर सकते हैं। प्रदूषण के मामले में ठीक ऐसा ही है, यह बाजार की विफलता का नहीं, बल्कि दूसरों की संपत्ति के अधिकारों को परिभाषित करने और उनकी रक्षा करने में सरकार की विफलता का उदाहरण है, जैसे कि प्रदूषित हवा में सांस लेने वालों या प्रदूषित पानी पीने वालों के अधिकारों को परिभाषित करने और उनकी रक्षा करने में विफलता।

जब हवा के बहने की दिशा या पानी के बहाव की दिशा में रहने वाले लोगों को अपने अधिकारों की रक्षा करने का अधिकार होता है, तो वे अपने अधिकारों के लिए दृढ़ता से डट सकते हैं, और प्रदूषण फैलाने वालों को ऐसा करने से रोक सकते हैं। उत्पादक प्रदूषण को खत्म करने के लिए अपने स्वयं के खर्च पर उपकरण या प्रौद्योगिकी स्थापित कर सकता है (या उत्सर्जन को सहनीय और गैर हानिकारक स्तर तक कम कर सकता है), या हवा के बहने वाली दिशा या पानी के बहाव की दिशा में रहने वाले लोगों को उनके संसाधनों का उपयोग करने के अधिकारों के लिए भुगतान करने की पेशकश कर सकता है (संभवतः उन्हें रहने के लिए एक बेहतर स्थान उपलब्ध कराने

की पेशकश जैसा कुछ), या उसके प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किए जाने की दशा में उसे उस उत्पाद का उत्पादन बंद कर देना चाहिए, क्योंकि इससे दूसरों के अधिकारों को नुकसान पहुंचा रहा है और यह प्रदर्शित होता है कि उत्पादन में लगने वाला कुल लागत लाभ से अधिक है। यह संपत्ति के अधिकार वाला प्रावधान है जो इस तरह की गणना को संभव बनाता है और लोगों को दूसरों पर पड़ने वाले अपने कार्यों के प्रभावों को ध्यान में रखने के लिए प्रेरित करती है। और यह बाजार ही है, जो अधिकारों के मुक्त आदान प्रदान में संलग्न होने का अवसर प्रदान करता है, और जो सभी पक्षों को कार्यों की लागत की गणना करने की अनुमति देता है।

वायु और जल प्रदूषण जैसे नकारात्मक वाह्य प्रभाव बाजार की विफलता का संकेत नहीं हैं, बल्कि संपत्ति के अधिकारों को परिभाषित करने और उनकी रक्षा करने में सरकार की विफलता का संकेत हैं, जिस पर बाजार आधारित होता है।

8. सामाजिक व्यवस्था जितनी अधिक मिश्रित होती है, वह बाजारों पर उतना ही कम आश्रित होती है और उसे सरकार के दिशा-निर्देशों की उतनी ही अधिक आवश्यकता पड़ती है

जब समाज कम मिश्रित था, तब बाजारों पर निर्भरता वाली व्यवस्था सही से काम करती थी, लेकिन आर्थिक और सामाजिक संबंधों की जबरदस्त वृद्धि के साथ, सरकार को इतने सारे लोगों की गतिविधियों को निर्देशित और समन्वयित करना आवश्यक है।

इसके विपरीत यदि कुछ भी है तो वह सच है। शिकारियों या जमाखोरों के समूहों से युक्त किसी सामान्य सामाजिक व्यवस्था को प्रभावी ढंग से समन्वित करने के लिए एक ऐसे नेता की आवश्यकता पड़ती है जो अपनी आज्ञा को मानने मजबूर करने की शक्ति से पूर्ण हो। लेकिन जैसे जैसे सामाजिक संबंध अधिक मिश्रित होते जाते हैं, स्वैच्छिक बाजार वाली विनिमय व्यवस्था पर निर्भरता कम की बजाए अधिक महत्वपूर्ण होती जाती है। एक मिश्रित सामाजिक व्यवस्था को अधिक से अधिक सूचनाओं के समन्वय की आवश्यकता होती है बजाए किसी एक विचार या विचारों के समूह की जो स्वामित्व स्थापित कर सके। बाजारों ने अपेक्षाकृत कम लागत वाले तरीके से सूचना प्रसारित करने के लिए तंत्र विकसित किया है। कीमतें आपूर्ति और मांग से संबंधित जानकारियों को इकाइयों के रूप में इस प्रकार से समाहित करती हैं कि विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के बीच तुलना करना संभव हो सके, जबकि उसी रूप में सरकारी नौकरशाही के लिए इतनी बड़ी तादात में रिपोर्ट करना संभव

नहीं हो पाता है। इसके अलावा, कीमतें भाषाओं, सामाजिक रीति-रिवाजों और जातीय व धार्मिक विभाजनों के इतर कार्य करने में सक्षम होती हैं और लोगों को हजारों मील दूर बैठे अज्ञात व्यक्तियों के ज्ञान का लाभ उठाने की अनुमति देती हैं, जिनके साथ उनका कभी किसी अन्य प्रकार का संबंध नहीं होगा। एक अर्थव्यवस्था और समाज जितना अधिक मिश्रित होता है, बाजार तंत्र पर उसकी निर्भरता उतनी ही महत्वपूर्ण होती जाती है।

9. विकासशील देशों में बाजार काम नहीं करते है

अच्छी तरह से विकसित बुनियादी ढांचे और कानूनी प्रणालियों वाले देशों में बाजार अच्छी तरह से काम करते हैं, लेकिन उनकी अनुपस्थिति में विकासशील देश बाजारों का सहारा नहीं ले सकते। ऐसे मामलों में, राज्य के दिशा निर्देश आवश्यक हैं, कम से कम तब तक जब तक कि एक अत्यधिक विकसित बुनियादी ढाँचा और कानूनी प्रणाली विकसित नहीं हो जाती है, जो बाजारों को कार्य करने के लिए अवसर दे सकती है।

आम तौर पर, बुनियादी ढांचे का विकास बाजारों के माध्यम से संचित धन की एक विशेषता है, न कि बाजारों के अस्तित्व के लिए कोई परिस्थिति, और बाजारों के अल्प विकसित होने का

एक कारण कानूनी प्रणाली की विफलता है, लेकिन यह विफलता कानूनी प्रणाली में सुधार के लिए एक शक्तिशाली कारण बनती है ताकि यह बाजारों के विकास के लिए एक आधार प्रदान करे, न कि कानूनी सुधार और बाजार के विकास को स्थगित करे। विकसित देशों के धन को प्राप्त करने का एकमात्र तरीका बाजारों के लिए कानूनी और संस्थागत नींव बनाना है ताकि उद्यमी, उपभोक्ता, निवेशक और श्रमिक धन बनाने के लिए स्वतंत्र रूप से सहयोग कर सकें।

वे सभी देश जो आज धनी हैं, कभी वे भी बहुत गरीब थे। कुछ देशों के विकसित होने की कहानी तो एक पीढ़ी से भी कम पुरानी है और लोगों को अब भी याद है। जिसे स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है वह गरीबी (जो मानव जाति की एक नैसर्गिक अवस्था है) नहीं, बल्कि धन है। धन का सृजन करना होता है और धन के सृजन को सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा तरीका लोगों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहन देना है। अच्छी तरह से परिभाषित और कानूनी रूप से सुरक्षित संपत्ति के अधिकारों और विनिमय को सुविधाजनक बनाने के लिए कानूनी संस्थानों पर आधारित मुक्त बाजार से बेहतर किसी अन्य प्रणाली की खोज नहीं की जा सकी है जो धन के सृजन के लिए प्रोत्साहन पैदा कर सके। गरीबी से बाहर निकलने का एक

ही रास्ता है, और वह है मुक्त बाजार के माध्यम से धन के सृजन का मार्ग।

"विकासशील राष्ट्र" शब्द का अक्सर गलत उपयोग किया जाता है जब इसे उन राष्ट्रों पर लागू किया जाता है जिनकी सरकारों ने केंद्रीय योजनाओं, राज्य के स्वामित्व, व्यापारिकता, संरक्षणवाद और खास किस्म के विशेषाधिकारों के पक्ष में बाजारों को खारिज कर दिया होता है। ऐसे राष्ट्र वास्तव में विकास नहीं कर रहे हैं। जो राष्ट्र विकसित हो रहे हैं, भले ही वे अपेक्षाकृत अमीर या अपेक्षाकृत निर्धन अवस्था से इसकी शुरूआत कर रहे हों, वे ऐसे राष्ट्र हैं जिन्होंने संपत्ति और अनुबंध के संदर्भ में विधिक संस्थानों का सृजन किया है और बाजारों को मुक्त किया है, तथा सत्ता, राजकोष और राज्य की शक्तियों की पहुंच को सीमित कर दिया है।

10. बाजार महामंदी जैसे विनाशकारी आर्थिक दुष्चक्रों की ओर ले जाता है

बाजार की ताकतों पर निर्भरता "तेजी और मंदी" के चक्र की ओर ले जाती हैं क्योंकि निवेश वाला अति आत्मविश्वास खुद को क्षीण करता है, जिससे पहले निवेश में भारी उछाल आता है, और बाद में उत्पादन में संकुचन और

बेरोजगारी का अनिवार्य रूप से कारण बनता है जो आम तौर पर आर्थिक स्थिति को बिगाड़ता है।

"तेजी और मंदी" के आर्थिक चक्रों को कभी कभी बाजारों पर निर्भरता के लिए दोषी ठहराया जाता है। हालांकि, इसका प्रमाण यह है कि सामान्यीकृत अतिउत्पादन बाजारों की विशेषता नहीं है; जब वस्तुओं और सेवाओं का अधिक उत्पादन किया जाता है, तो कीमतें समायोजित हो जाती हैं और परिणाम सामान्य संपन्नता के रूप में उत्पन्न होता है, न कि "मंदी" के रूप में। जब एक या दूसरा उद्योग लाभप्रदता को बनाए रखने के लिए बाजार की क्षमता से परे फैलता है, तो आत्म सुधार की एक प्रक्रिया शुरू होती है, और लाभ के संकेत संसाधनों को गतिविधि के अन्य क्षेत्रों में पुनर्निर्देशित करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार के सुधारों के सभी उद्योगों पर लागू होने के कोई निहित कारण नहीं है; वास्तव में, यह स्वयं में विरोधाभासी है (क्योंकि यदि निवेश को सभी से छीना जा रहा होता है और सभी को पुनर्निर्देशित किया जा रहा होता है, तो सच यह है कि इसे सभी से नहीं छीना जा रहा होता है)।

जब सरकारें मौद्रिक प्रणालियों में मूर्खतापूर्ण हेरफेर के माध्यम से मूल्य प्रणालियों को विकृत करती हैं तो लंबी अवधि वाली आम बेरोजगारी संभव है, इसके बावजूद एक नीतिगत त्रुटि जिसे अक्सर उद्योगों को प्रदान की जाने वाली सब्सिडी के साथ

जोड़ा जाता है (जो अनुबंध करते हैं और मजदूरी और मूल्य को नियंत्रित करते हैं जिससे बाजार को समायोजित करने से रोका जाता है) तो बेरोजगारी की अवधि लंबी होती जाती है। 1929 से द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक चली महामंदी का मामला ऐसा ही था, जो अर्थशास्त्रियों (जैसे कि नोबेल पुरस्कार विजेता मिल्टन फ्रीडमैन) के अनुसार अमेरिकी फेडरल रिजर्व सिस्टम द्वारा मुद्रा आपूर्ति में भारी और अचानक संकुचन के कारण पैदा हुआ था, जो कि राजनीतिक रूप से निर्धारित लक्ष्यों का हासिल करने का प्रयास कर रहा था। तब संरक्षणवाद में वृद्धि के कारण आम संकुचन की स्थिति और गहरी हो गई, जिससे समस्त विश्व की समस्या को और बढ़ गई और राष्ट्रीय वसूली अधिनियम (नेशनल रिकवरी एक्ट), कृषि उत्पादों की कीमतों को उच्च बनाए रखने के लिए कार्यक्रम (बड़ी तादात में कृषि उत्पादों को नष्ट करके और आपूर्ति को प्रतिबंधित करके), और बाजार की शक्तियों को सरकार की नीतिगत त्रुटियों के विनाशकारी प्रभावों को ठीक करने से रोकने के उद्देश्य से शुरू किया गया 'नया सौदा (न्यू डील)' जैसे कार्यक्रमों ने समस्या को और लंबे समय तक बनाए रखा। बाजार में हाल फिलहाल की गिरावटें, जैसे कि 1977 का एशियाई आर्थिक संकट (द एशियन फिनान्सियल क्राइसिस), अनुचित मौद्रिक और विनिमय दर वाली नीतियों के कारण उत्पन्न हुआ जिसने निवेशकों के संकेतकों को विकृत कर दिया था। बाजार की ताकतों ने

सरकारों की नीतिगत विफलताओं को ठीक किया, लेकिन यह प्रक्रिया कठिनाईयों से रहित नहीं थी; कठिनाई का कारण बीमारी को ठीक करने वाली दवा नहीं थी, बल्कि सरकारों की खराब मौद्रिक और विनिमय दर वाली नीतियां थीं जो शुरुआत से ही इस समस्या का कारण थीं।

सरकारी मौद्रिक प्राधिकरणों द्वारा अधिक विवेकपूर्ण मौद्रिक नीतियों को अपनाने के कारण, इस तरह के चक्रों का रुझान बराबर हो गया है। जब इसे बाजार के समायोजन की प्रक्रियाओं पर अधिक निर्भरता के साथ जोड़ा जाता है, तो परिणाम आर्थिक चक्रों की आवृत्ति और गंभीरता में कमी के रूप में देखने को मिलता है और उन देशों की आर्थिक स्थिति में दीर्घकालिक और निरंतर सुधार होता है, जिन्होंने व्यापार की स्वतंत्रता, राजकोषिय संयम और कानून के शासन वाली नीतियों का पालन किया है।

11. बाजारों पर बहुत अधिक निर्भरता उतनी ही मूर्खतापूर्ण है जितनी कि समाजवाद पर बहुत अधिक निर्भरता: मिश्रित अर्थव्यवस्था सबसे अच्छी है

ज्यादातर लोग समझते हैं कि अपने सभी अंडों को एक टोकरी में रखना नासमझी है। विवेकपूर्ण निवेशक अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाते हैं, उसी प्रकार "नीति

पोर्टफोलियो" में भी विविधता के साथ - साथ समाजवाद और बाजारों का मिश्रण रखना भी उचित है।

विवेकपूर्ण निवेशक जिनके पास अंदरूनी जानकारी नहीं है, वे जोखिम से बचने के लिए वास्तव में अपने पोर्टफोलियो में विविधता रखते हैं। यदि एक स्टॉक नीचे जाता है, तो दूसरा ऊपर जा सकता है, और इस प्रकार हानि को लाभ के साथ बराबर किया जा सकता है। लंबे समय में, पर्याप्त रूप से विविधता युक्त पोर्टफोलियो में वृद्धि होगी। लेकिन नीतियों के साथ ऐसा नहीं है। कुछ का प्रदर्शन असफल होने में लिया गया लम्बा समय है तो अन्य का प्रदर्शन सफलता से युक्त रहा है। "विविध निवेश पोर्टफोलियो" बनाने भर के लिए असफल होने के लिए जाने जाने वाले फर्मों के स्टॉक और सफल होने वाले फर्मों के स्टॉक को रखना समझदारी का काम नहीं है। विविधिकरण का असल कारण निवेशक का इस विशेष ज्ञान से अंजान रहना है कि कौन से फर्म के लाभदायक रहने की संभावना है और कौन से फर्म के लाभदायक नहीं रहने की संभावना है।

दशकों के आर्थिक आंकड़ों के अध्ययनों को प्रति वर्ष प्रकाशित करने वाले कनाडा के फ्रेजर इंस्टीट्यूट और अनुसंधान संस्थानों के एक विश्वव्यापी नेटवर्क ने लगातार दिखाया है कि बाजार की ताकतों पर अधिक निर्भरता से प्रति व्यक्ति आय अधिक होती

है, आर्थिक विकास तेज होता है, बेरोजगारी कम होती है, जीवन काल में वृद्धि होती है, शिशु मृत्यु दर में कमी आती है, बाल श्रम की दर में गिरावट आती है, स्वच्छ पेयजल, स्वास्थ्य सेवा, और स्वच्छ वातावरण सहित आधुनिक जीवन की अन्य सुविधाओं तक पहुंच बढ़ती है, और बेहतर शासन, जैसे कि कार्यालयी भ्रष्टाचार की कम दर और अधिक लोकतांत्रिक जवाबदेही में सुधार आता है। मुक्त बाजार अच्छे परिणाम देते हैं।

इसके अलावा, सड़क के बीचो बीच चलना "अच्छी तरह से संतुलित" होना नहीं कहलाता है। बाजार की कार्यप्रणाली में राज्य के हस्तक्षेप से आम तौर पर विकृतियां ही पैदा होती हैं और यहां तक कि संकट की स्थिति भी उत्पन्न होती है, जो तब और अधिक हस्तक्षेपों के बहाने के रूप में उपयोग किए जाते हैं, इसलिए नीति को किसी एक दिशा (तरफ) में चलाना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक "नीतिगत पोर्टफोलियो" जिसमें अविवेकी मौद्रिक नीति शामिल है, जो अर्थव्यवस्था में होने वाली वृद्धि की तुलना में धन की आपूर्ति को ज्यादा तेज गति से बढ़ाती है, बढ़ती कीमतों की ओर ले जाएगी। इतिहास ने बार-बार दिखाया है कि राजनेताओं की प्रवृति अपनी स्वयं की अविवेकपूर्ण नीतियों को दोष देना नहीं, बल्कि "ओवरहीटेड अर्थव्यवस्था" या "देशद्रोही सट्टेबाजों" को दोष देकर और कीमतों पर नियंत्रण थोपकर प्रतिक्रिया देते हैं। जब आपूर्ति और

मांग द्वारा विकृत कीमतों को ठीक करने की अनुमति नहीं दी जाती है (इस मामले में, पैसे की बढ़ी हुई आपूर्ति, जो पैसे की कीमत में गिरावट का कारण बनती है, जैसा कि वस्तुओं के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है), तो परिणाम स्वरूप वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता में कमी आ जाती है, क्योंकि अधिक से अधिक लोग सीमित मात्रा में उपलब्ध वस्तुओं को बाजार कीमत से कम कीमत पर खरीदने की इच्छा रखते हैं जबकि उत्पादक उस कीमत पर आपूर्ति करने के इच्छुक नहीं होते हैं। इसके अलावा, मुक्त बाजारों की अनुपस्थिति लोगों को काला बाजारी, अधिकारियों के अंडर द टेबल रिश्वत, और कानून के शासन से दूरी बनाने के लिए प्रेरित करती है। वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता में कमी और भ्रष्टाचार का मिश्रित परिणाम सत्तावादी दावों को ओर अधिक दृढ़ता से लागू करने के लिए सत्ताधारियों को प्रेरित करता है। प्रमाणित तौर पर खराब नीतियों से युक्त एक "नीतिगत पोर्टफोलियो" को रखने का प्रभाव कमजोर अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार और यहां तक कि कमजोर संवैधानिक लोकतंत्र के रूप में देखने को मिलता है।

नैतिक और आर्थिक आलोचनाओं का वर्ण संकर

12. बाजार, गैर-बाजार वाली प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक असमानता की ओर ले जाता है

परिभाषा के अनुसार, बाजार उपभोक्ता की प्राथमिकताओं को पूरा करने की क्षमता को पुरस्कृत करता है, और जैसे-जैसे क्षमताएं बदलती हैं, वैसे वैसे आय में भी बदलाव होता है। इसके अलावा, परिभाषा के अनुसार, समाजवाद समानता की स्थिति है, इसलिए समाजवाद की तरफ बढ़ता हर कदम समानता की ओर एक कदम है।

यदि हम नीतियों और परिणामों के बीच के संबंधों को समझना चाहते हैं, तो यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि संपत्ति एक कानूनी अवधारणा है; और धन एक आर्थिक अवधारणा है। दोनों को लेकर लोग अक्सर भ्रमित होते हैं, लेकिन उन्हें अलग अलग देखा जाना चाहिए। बाजार वाली प्रक्रियाएं नियमित रूप से बड़े पैमाने पर धन का पुनर्वितरण करती हैं। इसके विपरीत, संपत्ति का अनिच्छुक पुनर्वितरण (जब नागरिकों द्वारा व्यक्तिगत तौर पर किया जाता है तो इसे "चोरी" के रूप में जाना जाता है) मुक्त बाजारों को संचालित करने वाले नियमों के तहत निषिद्ध है, जिसके लिए संपत्ति को अच्छी तरह से परिभाषित और कानूनी रूप से सुरक्षित होना आवश्यक है। बाजार संपत्ति का पुनर्वितरण कर सकते हैं, भले ही संपत्ति का स्वामित्व एक ही हाथ में हों। हर बार जब किसी परिसंपत्ति का मूल्य (जिसमें एक मालिक के पास संपत्ति का अधिकार

होता है) परिवर्तित होता है, तो संपत्ति के मालिक के धन की मात्रा भी बदल जाती है। एक संपत्ति जिसकी कीमत कल 600 यूरो थी, वह आज केवल 400 यूरो की हो सकती है। यह बाजार के माध्यम से 200 यूरो की संपत्ति का पुनर्वितरण है, हालांकि संपत्ति का कोई पुनर्वितरण नहीं हुआ है। इसलिए बाजार नियमित रूप से धन का पुनर्वितरण करते हैं और इस प्रक्रिया में संपत्ति के मालिकों को उनके मूल्य को अधिकतम करने या अपनी संपत्ति को उन लोगों को हस्तांतरित करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो उसे अधिकतम करेंगे। नियमित पुनर्वितरण, कुल मूल्य को अधिकतम करने के लिए प्रोत्साहन पर आधारित होता है, और धन की उस मात्रा के हस्तांतरण का प्रतिनिधित्व करता है जिसे अधिकांश राजनेताओं के लिए कल्पना करना ही संभव नहीं होता है। यह एक दूसरे के विपरीत है कि एक तरफ जहां बाजार की प्रक्रिया में धन का पुनर्वितरण होता है, वहीं राजनीतिक प्रक्रियाएं संपत्ति का पुनर्वितरण करती हैं। एक व्यक्ति से इसे लेकर और दूसरों को देने की इस प्रक्रिया में, संपत्ति कम सुरक्षित बन जती है, और इस तरह के पुनर्वितरण से संपत्ति को सामान्य रूप से कम मूल्यवान बना दिया जाता है, यानी धन को नष्ट कर दिया जाता है। पुनर्वितरण जितना अप्रत्याशित होगा, संपत्ति के पुनर्वितरण के खतरे के कारण धन की हानि उतनी ही अधिक होगी।

समानता एक ऐसी विशेषता है जिसे कई प्रकार से अलग-अलग आयामों के साथ महसूस किया जा सकता है, लेकिन सभी में ऐसा हो यह जरूरी नहीं। उदाहरण के लिए, कानून के सामने सभी लोग समान हो सकते हैं, लेकिन अगर ऐसा है भी तो, इस बात की संभावना नहीं है कि वे राजनीति में भी ठीक उसी प्रकार से प्रभावी होंगे, क्योंकि कुछ लोग जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के समान अधिकारों का प्रयोग अधिक करते हैं, और अधिक वाक्पटु (अधिक बोलने वाले) या ऊर्जावान होते हैं, वे अधिक प्रभावशाली साबित होते हैं। इसी तरह, मुक्त बाजारों में सामान और सेवाओं की पेशकश करने के समान अधिकारों से समान आय प्राप्त हो ऐसा बिल्कुल नहीं होता है, क्योंकि कुछ दूसरों की तुलना में अधिक कठिन या अधिक समय तक काम कर सकते हैं (क्योंकि वे अवकाश की बजाए आय पसंद करते हैं), या विशेष कौशल रखते हैं जिसके लिए उन्हे अतिरिक्त भुगतान प्राप्त होता है। दूसरी तरफ, प्रभाव की समानता या आय की समानता को ताकत के बल पर हासिल करने के प्रयास से यह होगा कि कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिकारों या राजनीतिक सत्ता का अधिक प्रयोग करेंगे, अर्थात ऐसे परिणामों को लाने के लिए सत्ता आवश्यक हो जाएगी। परिणामों के एक विशेष पैटर्न को उत्पन्न करने के लिए, किसी व्यक्ति या समूह के पास पुनर्वितरण के लिए आवश्यक "ईश्वर की आंख" वाली दृष्टि होनी चाहिए, जो कहीं कमी तो कही

अधिकता को देख सके और अधिकता वाली जगह से लेकर कमी वाली जगह पर रख सके। चूंकि समान परिणाम पैदा करने की शक्तियां उनके विश्वासपात्रों के हाथों में सौंपी गई होती हैं, जैसा कि आधिकारिक तौर पर समतावादी सोवियत संघ जैसी व्यवस्था में हुआ करता था, असमान राजनीतिक और कानूनी शक्तियों वाले लोगों में उन शक्तियों का उपयोग कर असमान आय या संसाधनों तक पहुंच प्राप्त करने का लोभ पैदा हो जाता है। .

तर्क और अनुभव दोनों यह बताते हैं कि समान या "उचित" आय या कुछ अन्य पैटर्न जो बाजार के सहज क्रम द्वारा उत्पादित किए जाने वाले उत्पादों के अतिरिक्त होते हैं उन्हें प्राप्त करने के लिए किए जाने वाले सचेत प्रयास, प्रायः खुद को पराजित करने वाले होते हैं, क्योंकि इसका सीधा सा कारण यह है कि संपत्ति के पुनर्वितरण की शक्ति जिनके हाथों में होती है वह उसका प्रयोग स्वयं का हित करने में करते हैं, इस प्रकार राजनैतिक सत्ता वाली असमानता अन्य प्रकार की असमानता चाहे सम्मान, धन या कुछ और, में परिवर्तित हो जाती है। आधिकारिक तौर पर कम्युनिस्ट राष्ट्रों का अनुभव निश्चित रूप से ऐसा ही था और वर्तमान में वेनेजुएला जैसे अन्य राष्ट्रों द्वारा इस तरह का रास्ता अपनाया जा रहा है, जिसमें ह्यूगो शावेज नामक एक व्यक्ति के हाथों में सारी शक्तियां जमा हो रही है,

जो इस तरह की व्यापक असमान शक्ति की मांग करता है, जाहिर तौर पर नागरिकों के बीच धन की समानता पैदा करने के लिए।

2006 की विश्व आर्थिक स्वतंत्रता रिपोर्ट (इकोनॉमिक फ्रीडम ऑफ द वर्ल्ड रिपोर्ट) के आंकड़ों के अनुसार, मुक्त बाजारों पर निर्भरता और आय की असमानता का संबंध बहुत ही कमजोर कड़ी से जुड़ा हुआ है (दुनिया भर में सबसे कम मुक्त से लेकर सर्वाधिक मुक्त अर्थव्यवस्थाओं तक को यदि चतुर्थक में विभाजित किया जाए, तो दस प्रतिशत सबसे गरीब द्वारा प्राप्त किए जाने वाले आय का औसत 2.2 प्रतिशत से 2.5 प्रतिशत के औसत के बीच रहता है), लेकिन यह सबसे गरीब 10 प्रतिशत की आय के स्तर से बहुत दृढ़ता से सहसंबद्ध है (दुनिया भर में सबसे कम मुक्त से लेकर सर्वाधिक मुक्त अर्थव्यवस्थाओं तक को यदि चतुर्थक में विभाजित किया जाए तो सबसे गरीब 10 प्रतिशत द्वारा प्राप्त आय का औसत स्तर $826, $1,186, $2,322 और $6,519 है। बाजारों पर अधिक निर्भरता का आय वितरण पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है, लेकिन यह गरीबों की आय में काफी वृद्धि करता है और यह संभावना है कि बहुत से गरीब निश्चित रूप से इसे एक अच्छी बात मानेंगे।

13. बाजार स्वास्थ्य, आवास, शिक्षा और भोजन जैसी मानवीय जरूरतों को पूरा नहीं कर सकते हैं

वस्तुओं को उन सिद्धांतों के अनुसार वितरित किया जाना चाहिए जो उनकी प्रकृति के अनुकूल हों। बाजार भुगतान करने की क्षमता के आधार पर वस्तुओं का वितरण करते हैं, लेकिन स्वास्थ्य, आवास, शिक्षा, भोजन और अन्य बुनियादी मानवीय जरूरतों वाली वस्तुओं और सेवाओं का वितरण जरूरत के आधार पर किया जाना चाहिए, न कि भुगतान करने की क्षमता के आधार पर, क्योंकि वे विशेष जरूरत की चीजें होती हैं।

यदि बाजार अन्य सिद्धांतों की तुलना में मानवीय जरूरतों को पूरा करने का बेहतर काम करते हैं, अर्थात, यदि अधिक लोग समाजवाद की तुलना में बाजारों के तहत उच्च जीवन स्तर का आनंद लेते हैं, तो ऐसा लगता है कि बाजारों के तहत आवंटन तंत्र जरूरतों को पूरा करने की कसौटी पर भी बेहतर ढंग से काम करता है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, बाजार की स्वतंत्रता की श्रेणी के अनुसार सबसे गरीब लोगों की आय में तेजी से वृद्धि होती है, जिसका अर्थ है कि गरीबों के पास अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अधिक संसाधन हैं। (स्वाभाविक रूप से, सभी ज़रूरतें सीधे आय से संबंधित नहीं हैं; सच्ची दोस्ती और प्यार वाली जरूरतें तो निश्चित रूप से नहीं हैं। लेकिन यह सोचने का भी कोई कारण नहीं है कि वे अधिक "समान रूप से" सख्त क्रियाविधि द्वारा वितरित किए जाते हैं,

या यहां तक कि उन्हें इस तरह के तंत्र से वितरित किया जा सकता है।)

यही नहीं, चूंकि "ज़रूरत" के दावे, "क्षमता" के दावों के जैसे ही रेतीले (रबरी) दावे प्रतीत होते हैं, इसलिए भुगतान करने की इच्छा को मापना अधिक आसान होता है। जब लोग अपने स्वयं के पैसे से वस्तुओं और सेवाओं के लिए बोली लगाते हैं, तो वे हमें बता रहे हैं कि वे अन्य वस्तुओं और सेवाओं के सापेक्ष उन वस्तुओं और सेवाओं को कितना महत्व देते हैं। निश्चित रूप से शिक्षा या स्वास्थ्य देखभाल की तुलना में भोजन अधिक बुनियादी आवश्यकता है, इसलिए बाजारों के माध्यम से वह काफी प्रभावी ढंग से प्रदान किया जाता है। वास्तव में, उन देशों में जहां निजी संपत्ति को समाप्त कर दिया गया था और बाजार द्वारा किए जाने वाले आवंटन कार्य को राज्य द्वारा किए जाने वाले आवंटन कार्य से प्रतिस्थापित कर दिया गया था, वहां परिणाम अकाल और यहां तक कि नरभक्षण के रूप में देखने को मिले। बाजार वास्तव में, मानवीय जरूरतों की अधिकांश वस्तुओं को अन्य तंत्रों की तुलना में बेहतर तरीके से उपलब्ध कराते हैं, जिनमें वे वस्तुएं भी शामिल हैं जिन्हें बुनियादी मानवीय जरूरत की चीजें मानी जाती हैं।

आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए दुर्लभ संसाधनों के उपयोग की आवश्यकता होती है, जिसका अर्थ यह है कि उनके

आवंटन के बारे में चुनाव करना होगा। जिन क्षेत्रों में बाजारों को संचालित करने की अनुमति नहीं होती है, वहां दुर्लभ संसाधनों के नियंत्रित वितरण के लिए अन्य प्रणालियों और मानदंडों का उपयोग किया जाता है, जैसे नौकरशाही आवंटन, राजनीतिक खींचतान, सत्तारूढ़ दल की सदस्यता, राष्ट्रपति या सत्ता के मुख्य धारकों के साथ संबंध, या रिश्वत और अन्य प्रकार के भ्रष्टाचार। यह मुश्किल से ही जाहिर हो पाता है कि ऐसे मानदंड बाजारों द्वारा विकसित मानदंडों से बेहतर हैं, इसलिए नहीं कि वे अधिक समानता उत्पन्न करते हैं; बल्कि इसलिए कि अनुभव इसके विपरीत है।

14. बाजार योग्यतम की उत्तरजीविता के सिद्धांत पर टिका है

खून से सने दांतों और पंजों (रेड इन टूथ एंड क्लॉ) वाले जंगल के कानून की तरह बाजार के कानून का मतलब है योग्यतम की उत्तरजीविता (सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट)। जो लोग बाजार के मानकों के अनुसार उत्पादन नहीं कर सकते हैं वे रास्ते में गिर जाते हैं और उन्हें पैरों के नीचे रौंद दिया जाता है।

जीवन पद्धति और मानवीय सामाजिक अंतःक्रिया से संबंधित अध्ययन में क्रमिक विकास के सिद्धांत जैसे कि "योग्यतम की

उत्तरजीविता" का आह्वान तब तक भ्रम पैदा करता है जब तक कि सभी मामलों के संबंध में इस बात की पहचान नहीं हो जाती कि उत्तरजीविता क्या है। जीव विज्ञान के मामले में, इसका संबंध किसी प्राणी से और उसके द्वारा बच्चे पैदा करने की क्षमता से है। एक खरगोश, जो कि इतना धीमा है कि वह खुद को बचा नहीं पाता है और बिल्ली का भोजन बन जाता है, वह बच्चे पैदा नहीं कर सकता है। सबसे तेज और चपल खरगोश बच्चे पैदा करने में सक्षम हो पाएगा। जब इस सिद्धांत को सामाजिक क्रमिक विकास की प्रक्रिया पर लागू किया जाता है, तो उत्तरजीविता का मापन एक दम से बदल जाता है; क्योंकि यह किसी मनुष्य के बारे में नहीं बल्कि सामाजिक अंतःक्रिया के किसी स्वरूप से संबंधित होता है, जैसे कि कोई रिवाज, संस्था, या कोई प्रतिष्ठान आदि जिसे क्रमिक विकास वाले संघर्ष के लिए "चयनित" किया गया है।

जब कोई व्यावसायिक प्रतिष्ठान व्यवसाय से बाहर हो जाता है, तो वह "मर जाता है", अर्थात सामाजिक सहयोग का वह विशेष स्वरूप "मर जाता है", लेकिन निश्चित रूप से इसका मतलब यह नहीं है कि बतौर निवेशक, मालिक, प्रबंधक अथवा कर्मचारी, उस प्रतिष्ठान को स्थापित करने वाला व्यक्ति भी् मर जाता हैं। बस सहयोग के कम कुशल स्वरूप का स्थान अधिक कुशल स्वरूप ले लेता है। बाजार की प्रतिस्पर्धा निश्चित रूप से

जंगल की प्रतिस्पर्धा के विपरीत है। जंगल में जानवर एक दूसरे को खाने या एक दूसरे को विस्थापित करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। बाजार में, उद्यमी और प्रतिष्ठान उपभोक्ताओं के साथ और अन्य उद्यमियों और प्रतिष्ठानों के साथ सहयोग करने के अधिकार के लिए एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। बाजार वाली प्रतिस्पर्धा जीवित रहने के अवसर वाली प्रतिस्पर्धा नहीं है; यह सहयोग करने के अवसर के लिए प्रतिस्पर्धा है।

15. बाजार कला और संस्कृति को भ्रष्ट करते हैं

कला और संस्कृति मानव आत्मा के उच्च तत्वों की प्रतिक्रिया है और इसे टमाटर या शर्ट के बटन की तरह खरीदा और बेचा नहीं जा सकता है। कला को बाजार के भरोसे छोड़ना धर्म को बाजार में छोड़ने जैसा है, और यह कला की अंतर्निहित गरिमा के साथ विश्वासघात जैसा है। इसके अलावा, जैसे ही कला और संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धा के लिए उपलब्ध कराया जाता है, इसका परिणाम उनकी अवमानना के रूप में प्राप्त होता है, क्योंकि सर्वशक्तिमान डॉलर या यूरो की चाह में पारंपरिक स्वरूपों का कर दिया जाता है।

अधिकांश कलाओं का सृजन बाजार के लिए किया गया है और किया जाता है। दरअसल, कला का इतिहास काफी हद तक नई प्रौद्योगिकियों, नए दर्शन, नई अभिरुचि और आध्यात्मिकता के नए रूपों की प्रतिक्रिया के तौर पर में बाजार के माध्यम से होने वाले नवाचार का इतिहास है। कला, संस्कृति और बाजार कई शताब्दियों से एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। संगीतकार लोगों से उनके संगीत समारोहों में भाग लेने के लिए शुल्क लेते हैं, जैसे सब्जी व्यापारी टमाटर के लिए शुल्क लेते हैं या दर्जी सूट पर बटन बदलने के लिए शुल्क लेते हैं। वास्तव में, रिकॉर्ड, कैसेट, सीडी, डीवीडी, और अब आईट्यून्स और एमपी 3 फाइलों के निर्माण द्वारा संगीत, फिल्म और कला के अन्य रूपों के लिए व्यापक बाजारों का निर्माण अधिक से अधिक लोगों को अधिक से अधिक विविध कला के संपर्क में आने का मौका देता है और कलाकारों को और अधिक कलात्मक ज्ञान का सृजन करने के लिए, कला के एक से अधिक स्वरूपों का मिश्रण कर वर्ण संकर बनाने और अधिक आय अर्जित करने का अवसर उपलब्ध कराता है। आश्चर्य नहीं कि, किसी भी काल में सृजित अधिकांश कला समय की कसौटी पर खरी नहीं उतरती है; और अतीत के महान कार्यों की समकालीन कला से तुलना कर उसे "कचरा" बताते हुए उसकी निंदा करने वालों के लिए एक गलत दृष्टिकोण तैयार करती है; क्योंकि वे उसकी तुलना जिस चीज से कर रहे होते हैं,

वह सैकड़ों वर्षों से लेकर पिछले वर्ष तक के दौरान बड़े पैमाने पर सृजित किए गए सबसे अच्छे काम हैं। यदि वे उन सभी कार्यों को शामिल करते जो समय की कसौटी पर खरे नहीं उतरे और याद नहीं रखे गए, तो तुलना शायद काफी अलग दिखेगी। सर्वश्रेष्ठ की उत्तरजीविता (सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट) का जो सिद्धांत लागू होता है वह कला के लिए बाजार की इसी प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है।

समकालीन कलात्मक सृजनता की समग्रता की तुलना पिछली शताब्दियों की सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों से करना, कला के लिए बाजारों का मूल्यांकन करते समय लोगों द्वारा की जाने वाली एकमात्र त्रुटि नहीं है। गरीब समाजों का दौरा करने वाले धनी समाजों के पर्यवेक्षकों के द्वारा की जाने वाली एक और त्रुटि काफी आम है, और वह यह है कि वे अक्सर गरीब समाजों की निर्धनता को उनकी संस्कृति की निर्बलता मान बैठते हैं। जब अमीर आगंतुक गरीब लेकिन आर्थिक रूप से प्रगति करते देशों के ऐसे लोगों से मिलते हैं जो सेल फोन का उपयोग करते हैं और लैपटॉप पर काम करते हैं तो उन्हें अपनी यात्रा के पिछले वर्ष की तुलना में उतने "प्रामाणिक" न होने की शिकायत रहती है। जैसे जैसे लोग उदारीकरण या वैश्वीकरण में वृद्धि करके बाजार की अंतःक्रिया के माध्यम से अमीर बनते जाते हैं, जैसे कि सेल टेलीफोन के इस्तेमाल की शुरूआत

आदि, अमीर देशों के वैश्वीकरण विरोधी कार्यकर्ता शिकायत करते हैं कि गरीबों से उनकी संस्कृति "लूटी"जा रही है।

लेकिन संस्कृति की तुलना गरीबी से क्यों की जाती है? जापान के लोग गरीबी से अमीरी की ओर चले गए और इसके परिणामस्वरूप वे किसी भी प्रकार से कम जापानी हो गए है, यह तर्क देना सही नहीं होगा। वास्तव में, उनकी अधिक संपत्ति ने दुनिया भर में जापानी संस्कृति के बारे में जागरूकता फैलाना संभव बना दिया है। भारत में, जैसे-जैसे आय बढ़ रही है, फैशन उद्योग पोशाक के पारंपरिक रूपों, जैसे कि साड़ी की ओर रुख कर रहा है, और सुंदरता और रूप के इस सौंदर्यात्मक मानदंड को अपना रहा है, नवीनीकरण कर रहा है और उन्हें लागू कर रहा है। आइसलैंड जैसे छोटे देश ने उच्च साहित्यिक संस्कृति और अपने स्वयं के रंगमंच और फिल्म उद्योग को बनाए रखने में सक्षमता हासिल की है क्योंकि उस देश में प्रति व्यक्ति आय काफी अधिक है, जिससे उन्हें अपनी संस्कृति को बनाए रखने और विकसित करने के लिए अपनी आय आवंटित करने में आसानी होती है ।

और अंत में, यद्यपि धार्मिक विश्वास "बिक्री के लिए" नहीं होते हैं, लेकिन मुक्त समाज धर्म को उन्हीं सिद्धांतों - समान अधिकार और पसंद की स्वतंत्रता - के आधार पर त्याग देते हैं

जो कि मुक्त बाजार की नींव हैं। चर्च, मस्जिद, सिनागॉग्स (यहूदी पूजा स्थल) और मंदिर अनुयायियों और समर्थन के लिए एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। आश्चर्य नहीं कि, वे यूरोपीय देश जो चर्चों को आधिकारिक रूप से सरकारी समर्थन प्रदान करते हैं, उन देशों में चर्च की भागीदारी (प्रभाव) बहुत कम होती है, जबकि उन देशों में जहां धर्म को सरकारी समर्थन प्राप्त नहीं होता है वहां चर्च की भागीदारी (प्रभाव) का स्तर बहुत अधिक होता है। इसका कारण समझना इतना कठिन नहीं है: जिन चर्चों को सदस्यता और समर्थन के लिए प्रतिस्पर्धा करनी होती है, उन्हें सदस्यों को सेवाएं प्रदान करनी होती हैं - सांस्कारिक, आध्यात्मिक और सांप्रदायिक - और सदस्यता की जरूरतों पर अधिक ध्यान देने के कारण अधिक मजहबी कट्टरता और भागीदारी पैदा होती है। दरअसल, यही कारण है कि स्वीडन में आधिकारिक रूप से स्थापित सरकारी चर्च ने वर्ष 2000 में स्वयं को भंग कर देने की पैरवी की; सरकारी नौकरशाही के एक उदासीन भाग के रूप में, चर्च अपने सदस्यों और संभावित सदस्यों के साथ संबंध खो रहा था और उसके प्रभाव के कारण समाप्त हो रहा था।

बाजार और कला व संस्कृति के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। बाजार विनिमय कलात्मक अनुभव या सांस्कृतिक संवर्धन के

समान नहीं है, बल्कि यह दोनों को आगे बढ़ाने के लिए एक सहायक माध्यम है।

16. बाजार केवल अमीर और प्रतिभाशाली लोगों को लाभान्वित करते हैं

अमीर और अमीर हो गए तथा गरीब और गरीब हो गए। यदि आप बहुत सारा पैसा कमाना चाहते हैं, तो आपको शुरुआत भी बहुत से करनी होगी। बाजार में मुनाफे की दौड़ में, जो जल्दी शुरुआत करते हैं, वे ही पहले समापन रेखा तक पहुंचते हैं।

बाजारगत प्रक्रियाएं दौड़ वाली प्रतिस्पर्धा नहीं होती हैं, जिनमें जीतने वाले और हारने वाले होते हैं। जब दो पक्ष स्वेच्छा से विनिमय करने के लिए सहमत होते हैं, तो वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे दोनों लाभ की अपेक्षा करते हैं, इसलिए नहीं कि वे ये आशा करते हैं कि वे जीतेंगे और दूसरा हार जाएगा। किसी दौड़ वाली प्रतिस्पर्धा के उलट, विनिमय वाली प्रक्रिया में, यदि एक व्यक्ति जीतता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरे को हारना है। दोनों पक्षों को फायदा होता है। बात दूसरे को "हराने" की नहीं होती है, बल्कि स्वैच्छिक सहकारी विनिमय के माध्यम से लाभ हासिल करने की होती है; दूसरे व्यक्ति को

विनिमय करने के लिए प्रेरित करने के लिए, आपको उसे भी लाभ प्रदान करना होगा।

धन के लिए पैदा होना निश्चित रूप से एक अच्छी बात हो सकती है, जिसे अमीर देशों के नागरिक शायद उतना महत्व नहीं देते जितना कि वे लोग जो गरीब देशों से अमीर देशों में प्रवास करना चाहते हैं; दूसरे प्रकार के लोग आमतौर पर एक अमीर समाज में रहने के लाभों को उन लोगों की तुलना में बेहतर समझते हैं जो वहां की पैदाइश हुए हैं। लेकिन, सभी खरीदारों और विक्रेताओं के लिए प्रवेश की स्वतंत्रता और समान अधिकारों वाले एक मुक्त बाजार के अंदर, यह आवश्यक नहीं कि बाजार की मांगों को पूरा करने में जो बीते कल तक पारंगत थे, वे आने वाले कल में भी बाजार की मांग को पूरा करने में उतने ही पारंगत होंगे। समाजशास्त्री इसे "कुलीन वर्ग के संचलन (सर्कुलेशन ऑफ एलीट्स)" के तौर पर उल्लेखित करते हैं जो मुक्त समाजों की विशेषता है; बजाय कि सैन्य शक्ति, जातिगत जनसंख्या, या जनजातीय अथवा पारिवारिक संबंधों पर निर्भर रहने वाले गतिहीन कुलीन वर्ग के। मुक्त समाजों के कुलीन वर्ग - जिनमें कलात्मक कुलीन वर्ग, सांस्कृतिक कुलीन वर्ग, वैज्ञानिक कुलीन वर्ग और आर्थिक कुलीन वर्ग शामिल हैं- नए सदस्यों के प्रवेश के लिए खुले रहते हैं और शायद ही कभी इस वर्ग की सदस्यता को सदस्यों के

बच्चों को हस्तांतरित किया जाता है, इसलिए बहुत सारे लोगों की उच्च वर्ग से मध्यम वर्ग में पदावनति हो जाती है।

धनवान समाज उन सफल लोगों से भरे हुए हैं जिन्होंने उन देशों को पीछे छोड़ दिया है जहां बाजार गंभीर रूप से प्रतिबंधित हैं या ताकतवर लोगों के लिए विशेष इनायत, संरक्षणवाद, और व्यापारिक एकाधिकार और नियंत्रण द्वारा बुरी तरह बाधित हैं, और जहां बाजार में उन्नति के अवसर सीमित हैं। ऐसे लोगों ने उन समाजों को थोड़ा बहुत या कुछ भी लिए बगैर छोड़ा और संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और कनाडा जैसे अधिक खुले और बाजार उन्मुख समाजों में खूब सफलता पाई। उन्होंने जिन समाजों को छोड़ा और जिन समाज में वे शामिल हुए, उनमें क्या अंतर था? अंतर था बाजार में प्रतिस्पर्धा करने की स्वतंत्रता। गरीब देशों के लिए यह कितना दुखद है कि उनके गृह देश में व्यापार को सरकारी संरक्षण और प्रतिबंध, उन्हें विदेश ले जाते हैं, जिससे वे घर पर रहकर अपनी उद्यमशीलता के माध्यम से अपने पड़ोसियों और दोस्तों को काम में शामिल कर उन्हें समृद्ध नहीं कर सकते हैं।

आम तौर पर, मुक्त बाजारों वाले देशों में, विपुल संपत्ति अमीरों की इच्छाओं को पूरा कर के नहीं बल्कि विनम्र वर्गों की इच्छाओं को पूरा करके अर्जित की जाती है। फोर्ड मोटर्स से लेकर सोनी और वॉलमार्ट तक, महान कंपनियां जिन्होंने विपुल

संपत्ति अर्जित की है, उन्होंने ऐसा सबसे अमीर लोगों की इच्छाओं को पूरा करके नहीं, बल्कि निम्न और मध्यम वर्ग के लोगों की जरूरतों को पूरा करके किया है।

मुक्त बाजार जिन्हें "कुलीन वर्गों के संचलन (सर्कुलेशन ऑफ एलिट्स)" वाली विशेषताओं के तौर पर प्रस्तुत किया जाता है, उनमें एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे किसी व्यक्ति को स्थान प्रदान करने की गारंटी नहीं ली जा सकती, या किसी कुल में जन्म लेने के कारण वहां प्रवेश करने से रोका नहीं जा सकता है। "अमीर और अमीर हो जाता है, और गरीब और गरीब हो जाता है" वाला वाक्यांश मुक्त बाजारों पर लागू नहीं होता है, बल्कि व्यापार को सरकारी संरक्षण और राजनीतिक दोस्ताने (क्रोनिज्म) वाली व्यवस्थाओं, अर्थात ऐसी व्यवस्थाएं जहां सत्ता के साथ निकटता धनार्जन के मौके निर्धारित करती है, पर लागू होता है। बाजार वाली व्यवस्था के तहत, अधिक सामान्य अनुभव यह है कि अमीर अच्छा करते हैं (लेकिन अपने समाज के मानकों के अनुसार "अमीर" बने नहीं रह सकते हैं) और गरीब बहुत अधिक अमीर हो जाते हैं, और कई मध्यम और उच्च वर्गों में प्रोन्नत हो जाते हैं। किसी भी काल और परिभाषा के अनुसार 20 प्रतिशत जनसंख्या सबसे कम आय के पंचमक (क्विंटाइल) में होगी और 20 प्रतिशत उच्चतम आय के पंचमक (क्विंटाइल) में होगी।

लेकिन यह या तो इसका पालन नहीं करता है कि वे पंचमक (क्विंटाइल) आय की समान मात्रा को मापेंगे (जैसा कि सभी आय समूहों की आय बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ती है) या आय श्रेणियां उन्हीं लोगों द्वारा भरी रहेंगी। श्रेणियां बल्कि एक होटल में कमरों या बस में सीटों की तरह हैं; वे किसी के द्वारा भरे जाते हैं, लेकिन हमेशा एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं। जब बाजार उन्मुख समाजों में आय के वितरण का समय के साथ अध्ययन किया जाता है, तो आय की गतिशीलता का एक बड़ा परिमाण उभर कर सामने आता है, जिसमें उल्लेखनीय संख्या में लोग आय के वितरण में ऊपर और नीचे जाते हैं। हालांकि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि समृद्ध बाजार वाली अर्थव्यवस्थाओं में निम्नतम से उच्चतम तक सभी की आय में वृद्धि होती है।

17. जब कीमतें उदारीकृत होती हैं और बाजार की ताकतों के अधीन होती हैं, तो वे बस ऊपर जाती हैं

वास्तविकता यह है कि जब कीमतें, सरकारी नियंत्रण से रहित, बाजार की ताकतों पर छोड़ दी जाती हैं, तो वे बस बढ़ती जाती हैं, जिसका अर्थ है कि लोगों की खर्च करने की क्षमता कम से कम होती जाती है। मुक्त बाजार आधारित कीमतें, ऊंची कीमतों का दूसरा नाम है।

कीमतों को जब बाजार से नीचे के स्तर पर नियंत्रित कर रखा गया होता है तो, कम से कम कुछ समय के लिए ही सही, मुक्त छोड़ने पर उनमें बढ़ोत्तरी की प्रवृति देखी जाती है। लेकिन कहानी में इसके अलावा भी बहुत कुछ है। पहली चीज तो यह कि कुछ नियंत्रित कीमतें जो बाजार के स्तर से ऊपर रखी गई होती हैं, तो बाजार के मुक्त होने पर उन कीमतों में गिरावट की प्रवृति देखी जाती है। इसके अलावा, जब मुद्रा का मूल्य सरकार की सत्ता द्वारा नियंत्रित होता है, तो यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वस्तुओं की कीमत मात्र उतनी ही नहीं होती जितनी कि उनकी खरीदारी के दौरान सफल खरीददार द्वारा आमतौर पर प्रत्यक्ष रूप से चुकाई जाती है। यदि वस्तुओं की बिक्री कतार में नियंत्रित वितरण (राशनिंग) के माध्यम से की जाती है तो, लोगों को वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए कीमत का भुगतान उस समय के रूप में भी करना पड़ता है, जो कतार में लगने के कारण खर्च होता है। (ध्यान रहे कि, इंतजार में लगने वाला समय विशुद्ध रूप से उसकी बर्बादी को इंगित करता है, क्योंकि यह वह समय नहीं है जो किसी तरह उत्पादकों को हस्तांतरित किया जा सके ताकि वे अतृप्त मांगों की पूर्ति के लिए अधिक से अधिक सामानों के उत्पादन के लिए प्रेरित हो सकें। यदि भ्रष्ट अधिकारियों के हाथ खुले हैं, तो टेबल के नीचे से (रिश्वत) भी भुगतान करना पड़ता है, अतः ऐसे भुगतान भी टेबल पर किए गए भुगतान (वास्तविक कीमत) में जुड़ेंगे।

कानूनी कार्रवाईयों में होने वाले खर्च का योग, अवैध रिश्वत, और राज्य द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का अधिकतम मूल्य तय किए जाने के कारण लाइनों में प्रतीक्षा करने में लगने वाला समय उस कीमत से काफी अधिक कर देता है, जिस पर लोग बाजार के माध्यम से सहमत होते हैं। इसके अलावा, रिश्वत पर खर्च किया गया पैसा और प्रतीक्षा में बिताया गया समय बर्बाद हो जाता है - वे उपभोक्ताओं द्वारा खर्च किए जाते हैं लेकिन उत्पादकों द्वारा प्राप्त नहीं किए जाते हैं, इसलिए वे उत्पादकों को अधिक उत्पादन करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं देते हैं और इस तरह मूल्य नियंत्रण के कारण होने वाली वस्तुओं की कमी की समस्या बढ़ती जाती है।

जब कीमतों को मुक्त किया जाता है, तो अल्पावधि में पैसे की कीमतें बढ़ सकती हैं, इसका परिणाम उत्पादन में वृद्धि और अनावश्यक राशनिंग (वस्तुओं के नियंत्रित वितरण की प्रक्रिया) और भ्रष्टाचार में कमी के रूप में देखने को मिलता है, जिसके परिणामस्वरूप कुल वास्तविक कीमतें- एक बुनियादी वस्तु के रूप में व्यक्त की जाती हैं, और मानवीय श्रम का समय कम हो जाता है। वर्ष 1800 में एक व्यक्ति को रोटी के एक टुकड़े को कमाने के लिए जितने समय श्रम करने की जरूरत पड़ती था, वह उसके द्वारा एक पूरे दिन किए जाने वाले श्रम का एक बड़ा हिस्सा होता था; लेकिन जैसे - जैसे श्रम के बदले में प्राप्त होने

वाली मजदूरी ज्यादा, और ज्यादा बढ़ती गई, रोटी के टुकड़े को खरीदने के लिए खर्च होने वाले श्रम के समयावधि की आवश्यकता घटती गई और अमीर देशों में तो यह घट कर महज कुछ मिनटों तक ही रह गया है। श्रम करने की समयावधि के आधार पर मापने पर, अन्य सभी वस्तुओं की कीमतों में नाटकीय रूप से गिरावट देखने को मिलती है, और अपवाद के रूप में केवल श्रम की कीमत ही बढ़ी है। जैसे - जैसे श्रम के ऐवज में प्राप्त होने वाली उत्पादकता और मजदूरी बढ़ती है, मानव श्रम को काम पर रखना अधिक महंगा हो जाता है, यही कारण है कि गरीब देशों में मामूली रूप से संपन्न लोगों के पास आमतौर पर नौकर होते हैं, जबकि अमीर देशों में बहुत धनी लोगों को भी अपने कपड़े और बर्तन धोने के लिए मशीन खरीदना बहुत सस्ता लगता है। मुक्त बाजारों के परिणामस्वरूप श्रम की तुलना में अन्य सभी चीजों की कीमत में गिरावट आई है, और अन्य सभी चीजों की तुलना में श्रम की कीमत में वृद्धि हुई है।

18. साम्यवादी समाज के बाद आया निजीकरण और बाजारीकरण का दौर भ्रष्ट था, जो दिखाता है कि बाजार लोगों को भ्रष्ट बना रहे हैं

निजीकरण वाले अभियान लगभग हर बार बड़ी चालाकी से संचालित होते हैं। यह एक ऐसा खेल है जिसमें सबसे क्रूर और भ्रष्ट अवसरवादियों को राज्य की सर्वश्रेष्ठ संपत्ति से पुरस्कृत किया जाता है। निजीकरण और बाजारीकरण का सारा खेल गंदा है और यह लोगों की चीजें चुराने के अलावा किसी और चीज का प्रतिनिधित्व नहीं करता है।

पूर्व की कई समाजवादी सरकारों द्वारा निजीकरण के लिए चलाए गए अभियानों के परिणाम काफी भिन्न भिन्न प्राप्त हुए हैं। कुछ ने बहुत ही सफल बाजार प्रक्रियाएं सृजित की तो कई अन्य वापस अधिनायकवाद की ओर खिसक गए और उन्होंने देखा कि "निजीकरण" प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप नए अभिजात्य वर्ग सरकारी और निजी दोनों व्यवसायों पर नियंत्रण प्राप्त कर रहे हैं, जैसा कि रूस की उभरती "सिलोविकी" प्रणाली में है। धांधली से संचालित होने वाले निजीकरण की योजनाओं से लाभ पाने वाले गंदे हाथों की गंदगी बाजार

संस्थानों की पहले से मौजूद कमी का परिणाम थी, विशेष रूप से कानून का शासन जो बाजार की नींव है।

उन संस्थानों को स्थापित करना कोई आसान काम नहीं है और ऐसी कोई जानी पहचानी तकनीक नहीं है जो आमतौर पर सभी मामलों में काम करती हो। लेकिन कुछ मामलों में कानून के शासन से युक्त संस्थाओं का पूरी तरह से उपयोग करने में विफलता के कारण कोशिश करना तो बंद नहीं किया जा सकता है; यहां तक कि रूस के मामले में भी, निजीकरण की जो गहरी त्रुटिपूर्ण योजनाएं स्थापित की गई थीं, वे एक पार्टी के द्वारा किए जाने वाले अत्याचार वाली व्यवस्था में सुधार थीं जो उनके पहले थी और जो अपने ही अन्याय और अक्षमता के कारण ध्वस्त हो गई थी।

एक कार्यशील कानूनी प्रणाली के अभाव में "निजीकरण" कर देना भर बाजार बनाने के समान नहीं है। बाजार कानून की नींव पर टिका होता है; इसलिए निजीकरण की विफलता, बाजार की विफलता नहीं है, बल्कि बाजार के लिए कानूनी आधार तैयार करने में राज्य की विफलता है।

अत्यधिक उत्साही प्रतिवाद

19. मनुष्यों के बीच सभी संबंधों को बाजार संबंधों में परिवर्तित किया जा सकता है

सारी गतिविधियां इसीलिए की जाती हैं क्योंकि कर्ता अपनी उपयोगिता को अधिकतम कर रहे हैं। यहां तक कि दूसरे लोगों की मदद कर के भी आप लाभान्वित हो रहे हैं, अन्यथा आप ऐसा नहीं करेंगे। मित्रता और प्रेम पारस्परिक लाभ के लिए सेवाओं के आदान - प्रदान का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कि आलू की बोरियों के आदान - प्रदान से कम नहीं होते हैं। इसके अलावा, इंसान द्वारा की जाने वाली अंतःक्रियाओं के सभी स्वरूपों को राजनीति सहित बाजारों के संदर्भ में समझा जा सकता है, जिसमें लाभ के वादे के लिए वोटों का आदान - प्रदान किया जाता है। यहां तक कि अपराध के क्षेत्र में भी, जिसमें अपराधी और पीड़ित आदान - प्रदान करते हैं। "आपका पैसा या आपकी जान" वाला उदाहरण तो सभी को ज्ञात है।

सभी गतिविधियों को एक ही उद्देश्य के तहत सीमित करने का प्रयास मानवीय अनुभवों को गलत ठहराता है। माता पिता जब

अपने बच्चों के लिए बलिदान करते हैं या खतरे में होने पर उन्हें बचाने के लिए दौड़ पड़ते हैं, तो ऐसा करते समय वे अपने लिए लाभ के बारे में नहीं सोचते हैं। जब लोग मोक्ष या आध्यात्मिक ज्ञान के लिए प्रार्थना करते हैं, तो उनकी प्रेरणा बिल्कुल वैसी नहीं होती है, जब वे कपड़ों की खरीदारी कर रहे होते हैं। इन सभी में जो उभयनिष्ठ बात है वह यह है कि उनके कार्य उद्देश्यपूर्ण होते हैं, और वे कार्य अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किए जाते हैं। लेकिन यह तर्कसंगत नहीं है कि वे जिन उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं उन सभी को एक ही मापदंड के अंतर्गत मापी जाने वाली इकाईयों के तहत सीमित कर के देखा जाए। हमारे उद्देश्य और प्रेरणाएँ भिन्न भिन्न हो सकती हैं; जैसे कि, जब हम हथौड़ा खरीदने के लिए बाजार जाते हैं, या जब हम किसी कला संग्रहालय में प्रवेश करते हैं, और जब हम एक नवजात शिशु को पालते हैं, तो हम कई अलग अलग उद्देश्यों को महसूस कर रहे होते हैं, जिनमें से सभी को बाजारों में खरीदने और बेचने के संदर्भ में अच्छी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

यह सच है कि विभिन्न प्रकार की अंतःक्रियाओं को समझने और उन्हें स्पष्ट करने के लिए बौद्धिक रचनाओं और उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अर्थशास्त्र की जिन अवधारणाओं का प्रयोग बाजारों में होने वाली आदान -

प्रदान की प्रक्रिया को समझने के लिए किया जाता है, उनका उपयोग राजनीति विज्ञान और यहां तक कि धर्म को समझने के लिए भी किया जा सकता है। राजनीतिक विकल्पों में व्यवसायिक विकल्पों की तरह ही गणना योग्य लागत और लाभ हो सकते हैं; और राजनीतिक दलों या माफिया कार्टेल की तुलना बाजार में फर्मों से की जा सकती है। लेकिन यह अवधारणाओं के ऐसे अनुप्रयोगों का पालन नहीं करता है जिसमें दो विकल्प वाली स्थितियां नैतिक या कानूनी रूप से समकक्ष हों। एक अपराधी जो आपको अपना पैसा रखने और अपने जीवन को बनाए रखने के बीच एक विकल्प प्रदान करता है, उसकी तुलना किसी उद्यमी से नहीं की जा सकती है जो आपको अपना पैसा अपने पास रखने या किसी वस्तु को खरीदने के लिए इसका इस्तेमाल करने के बीच एक विकल्प प्रदान करता है। इसका साधारण सा कारण यह है कि अपराधी आपको आपके उन दो चीजों में से किसी एक को चुनने के लिए मजबूर करता है जिस पर आपका नैतिक और कानूनी अधिकार है, जबकि उद्यमी आपको दो चीजों के बीच चयन करने का एक विकल्प प्रदान करता है, जिनमें से एक पर उसका अधिकार है और दूसरे पर आपको अधिकार है।

दोनों ही मामलों में आपको किसी एक का चयन करना होता है और एक उद्देश्य के तहत कार्य करना होता है, लेकिन पहले

मामले में अपराधी द्वारा आपको चयन करने के लिए बाध्य किया गया होता है, जबकि दूसरे मामले में उद्यमी द्वारा आपको एक विकल्प उपलब्ध कराया जाता है। पहले मामले में आपके अधिकारों में कटौती होती है जबकि दूसरे मामले में आपको किसी ऐसी वस्तु की पेशकश की जाती है जो आपके पास पहले से नहीं है लेकिन आपके लिए उसका मूल्य आपके पास उपलब्ध किसी अन्य चीज से अधिक होती है। सभी मानवीय संबंध बाजार की शर्तों के अनुरूप परिवर्तनशील नहीं होते हैं, और बहुत कम ही कम संबंध ऐसे होते हैं जिनमें अनैच्छिक 'आदान प्रदान' की प्रक्रिया शामिल होती है, क्योंकि वे मौलिक तौर पर बाजार से भिन्न होते हैं, क्योंकि वे लाभ प्राप्त करने के अवसरों की बजाए अवसरों और लाभ को गंवाने का प्रतिनिधित्व करते हैं।

20. बाजार सरकार के बिना भी सभी समस्याओं का समाधान कर सकता है

सरकार इतनी अक्षम होती है कि वह कुछ भी ठीक से नहीं कर सकती। बाजार का मुख्य सबक यह है कि हमें हमेशा सरकार को कमजोर करना चाहिए, क्योंकि सरकार बाजार के बिल्कुल विपरीत है। आपके पास

जितनी कम सरकार होगी, आपके पास उतना ही अधिक बाजार होगा।

जो लोग बाजार के फायदों को पहचानते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि दुनिया के अधिकांश हिस्सों में, शायद सभी में, मूल समस्या यह नहीं है कि सरकारें बहुत अधिक करती हैं, बल्कि यह भी है कि वे बहुत कम करती हैं। पहली श्रेणी—ऐसी चीजें जो सरकारों को नहीं करनी चाहिए, उनमें अ) ऐसी गतिविधियां शामिल हैं जो किसी को भी नहीं करनी चाहिए, जैसे कि "नस्लीय नरसंहार," भूमि की चोरी, और अभिजात्य वर्ग के लिए खास कानूनी विशेषाधिकारों का निर्माण करना, और ब) ऐसी चीजें जो सरकारें, बाजारों में फर्मों और उद्यमियों के साथ स्वैच्छिक अंतःक्रिया के माध्यम से कर सकती हैं और उन्हें अवश्य किया जाना चाहिए, जैसे वाहनों का निर्माण, समाचार पत्र प्रकाशित करना और रेस्तरां चलाना। सरकारों को यह सब करना बंद कर देना चाहिए। लेकिन जैसे ही वे वह करना बंद कर देते हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए, सरकारों को कुछ ऐसे काम करना शुरू कर देना चाहिए जो वास्तव में न्याय को बढ़ाते हैं और समस्याओं को हल करने के लिए स्वैच्छिक अंतःक्रिया की नींव तैयार करते हैं। वास्तव में, दोनों के बीच एक संबंध है: सरकारें जो अपने संसाधनों को वाहन निर्माण के कारखाने चलाने या समाचार पत्र प्रकाशित करने में खर्च करती हैं - या

इससे भी बेकार, संपत्ति को जब्त करती हैं और कुछ लोगों के लिए कानूनी विशेषाधिकार का प्रावधान करती हैं - दोनों वास्तविक तौर पर सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली अहम सेवाओं को प्रदान करने की अपनी योग्यताओं में कटौती करती हैं। उदाहरण के लिए, गरीब देशों की सरकारें विरले ही कभी स्पष्ट कानूनी अधिकार प्रदान करने जैसा अच्छा काम करती हैं, जैसे कि संपत्ति को छीने जाने से बचाने के लिए कानून। कानूनी प्रणालियाँ अक्सर अक्षम और बोझिल होती हैं, और उनमें स्वतंत्रता और निष्पक्षता का अभाव होता है जो स्वैच्छिक लेनदेन को सुविधाजनक बनाने के लिए आवश्यक हैं। बाजारों के लिए सामाजिक समन्वय की रूपरेखा प्रदान करने में सक्षम होने के लिए, संपत्ति और अनुबंध को कानून में अच्छी तरह से स्थापित किया जाना चाहिए। जो सरकारें उन सार्वजनिक लाभों को प्रदान करने में विफल रहती हैं, वे बाजारों को उभरने से रोकती हैं। सरकार कमजोर होकर नहीं, बल्कि कानूनी तौर पर सत्तावादी होने के साथ-साथ अपनी शक्तियों में सीमित होकर कानून और न्याय बनाने के अधिकार का प्रयोग करके सार्वजनिक हित की सेवा कर सकती है। एक कमजोर सरकार सीमित सरकार के समान नहीं होती है। कमजोर असीमित सरकारें बेहद खतरनाक हो सकती हैं क्योंकि वे ऐसे काम करती हैं जो नहीं किए जाने चाहिए लेकिन उनके पास न्यायपूर्ण आचरण वाले नियमों को लागू करने की शक्ति नहीं

होती है जो जीवन की सुरक्षा, स्वतंत्रता, और संपत्ति की सुरक्षा प्रदान करने और मुक्त बाजार में विनिमय के लिए आवश्यक हैं। सरकार की अनुपस्थिति में मुक्त बाजार वैसा नहीं रह पाता जैसा कि वह वास्तव में होता है।, सभी प्रकार की अराजकता आकर्षक हो, ऐसा नहीं हैं। मुक्त बाजार कुशलतापूर्वक प्रशासित सीमित सरकारों द्वारा संभव बनाए जाते हैं जो उचित आचरण के नियमों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं और उन्हें निष्पक्ष रूप से लागू करते हैं।

यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि ऐसी बहुत सी समस्याएं हैं जिनका समाधान सतर्क कार्रवाईयों के माध्यम से करना होता है; इस बात पर जोर देना ही काफी नहीं है कि अवैयक्तिक बाजार प्रक्रियाएं सभी समस्याओं का समाधान कर देंगी। नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री रोनाल्ड कोसे के द्वारा बाजार और प्रतिष्ठानों पर आधारित महत्वपूर्ण अध्ययन में की गई व्याख्या के अनुसार, वास्तव में, समान लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, प्रतिष्ठान आम तौर पर सतर्क योजनाओं और समन्यव पर भरोसा करते हैं बजाए कि आदान प्रदान पर निरंतर आश्रित रहने के, क्योंकि बाजार में जाना खर्चीला काम होता है। उदाहरण के लिए, हर बार अनुबंध की व्यवस्था करना खर्चीला होता है, इसलिए अनुबंध लागत को कम करने के लिए दीर्घकालिक अनुबंधों का उपयोग किया जाता है। प्रतिष्ठानों में,

दीर्घकालिक अनुबंध, हाजिर बाजार विनिमय (स्पॉट एक्सचेंजों) के स्थानापन्न होते हैं और इसमें विशेष सेवाओं के लिए निरंतर बोली लगाने के बजाय टीम वर्क और सतर्क मार्गदर्शन से जुड़े श्रमिक संबंध शामिल होते हैं।

प्रतिष्ठान, टीम वर्क और योजना के छोटे छोटे द्वीपों के समान होते हैं, और सफल होने में सक्षम होते हैं क्योंकि वे बाजार की आदान प्रदान की प्रक्रिया के माध्यम से सहज क्रम (स्पॉन्टेनियस ऑर्डर) के व्यापक महासागर के भीतर नौकायन (नेविगेट) करते हैं। (समाजवादियों की सबसे बड़ी भूल पूरी अर्थव्यवस्था का प्रबंधन एक बड़ी फर्म की तरह करने का प्रयास करना था; बाजार के व्यापक सहज क्रम के भीतर सतर्क मार्गदर्शन और टीम वर्क की सीमित भूमिका को नहीं पहचानना एक समान त्रुटि होगी)। बाजार जिस हद तक न्यायपूर्ण आचरण के नियमों के निर्माण और प्रवर्तन की रूपरेखा प्रदान कर सकते हैं, मुक्त बाजारों के अधिवक्ताओं को सिर्फ वहीं तक इसे बढ़ावा देना चाहिए। निजी सुरक्षा फर्म अक्सर राज्य पुलिस की तुलना में बेहतर होती हैं (और कम हिंसक भी, क्योंकि सरकार को छोड़कर किसी अन्य के लिए हिंसा की लागत को आसानी से तीसरे पक्ष को स्थानांतरित नहीं की जा सकती है); इसी प्रकार, स्वैच्छिक मध्यस्थता अक्सर राज्य की अदालतों की तुलना में कहीं बेहतर काम करती है।

लेकिन उसकी पहचान करना बाजार की स्थापना में नियमों की केंद्रीय भूमिका की पहचान करना है और इस प्रकार केवल "सरकार विरोधी" होने के बजाय, सरकार द्वारा या बाजार द्वारा प्रदान किए गए कुशल और न्यायपूर्ण नियमों का समर्थन करना चाहिए।

अंत में, हमें यह याद रखना चाहिए कि संपत्ति और बाजार विनिमय, अपने आप में, सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि ग्लोबल वार्मिंग वास्तव में पूरे ग्रह के जीवन को बनाए रखने की क्षमता के लिए खतरा है, या यदि ओजोन परत को इस प्रकार से विकृत किया जा रहा है जिससे वह जीवन के लिए नुकसानदायक बन रहा है, तो समन्वित सरकारी समाधान सबसे अच्छा, या शायद आपदा से बचने का एकमात्र उपाय हो सकता है। स्वाभाविक रूप से, इसका मतलब यह नहीं है कि बाजार कोई भूमिका नहीं निभाएगा; उदाहरण के लिए, कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के अधिकारों के लिए बाजार, समायोजन को सुचारू बनाने में मदद कर सकते हैं, लेकिन उन बाजारों को पहले सरकारों के बीच समन्वय द्वारा स्थापित करना होगा। हालाँकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि, कोई तरीका सभी समस्याओं के लिए पर्याप्त और कारगर नहीं है इसलिए वह किसी भी समस्या के समाधान में कारगर नहीं होगा, आवश्यक नहीं है। वह तरीका

कुछ या अधिकतर समस्याओं के लिए बहुत अच्छा काम कर सकता है। संपत्ति और बाजार कई समस्याओं का समाधान करते हैं और ऐसा करने के लिए उन पर निर्भर रहना चाहिए; लेकिन यदि वे सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं कि उन्हें उन समस्याओं के लिए भी अस्वीकार कर दें, जिनके लिए वे कुशल और न्यायपूर्ण समाधान प्रदान करते हैं।

मुक्त बाजार मानवता के सामने आने वाली हर कल्पनीय समस्या का समाधान नहीं कर सकते हैं, लेकिन वे स्वतंत्रता और समृद्धि का उत्पादन कर सकते हैं और करते हैं, और यह अपने आप में बड़ी बात है।

एटलस नेटवर्क के बारे में

एटलस नेटवर्क ने मुक्त उद्यम के लिए विश्वव्यापी नैतिक और बौद्धिक अभियान शुरू किया है। हम नैतिकता और पूंजीवाद, स्वतंत्रता और व्यक्तिगत चयन और सौहार्द या युद्ध को प्रेरित करने वाले विषयों पर एक ईमानदार बहस को बढ़ावा देते हैं। एटलस नेटवर्क ने आपके समक्ष एटलस नेटवर्क के कार्यकारी उपाध्यक्ष डॉ टॉम जी पामर द्वारा संपादित स्वतंत्रता का अर्थशास्त्र (द इकोनॉमिक्स ऑफ फ्रीडम), पूंजीवाद की नैतिकता (मोरालिटी ऑफ कैपिटलिज्म), कल्याणकारी राज्य के पश्चात (आफ्टर द वेलफेयर स्टेट), स्वतंत्रता क्यों (वाय लिबर्टी), और सौहार्द, प्रेम और आजादी (पीस, लव एंड लिबर्टी) प्रस्तुत करने के लिए स्टूडेंट्स फॉर लिबर्टी के साथ भागीदारी की है। एटलस नेटवर्क एक दर्जन से अधिक अन्य भाषाओं में पुस्तकों, निबंध प्रतियोगिताओं, वेबिनार, वेब प्लेटफॉर्म और फ्रीडम स्कूलों को भी प्रायोजित करता है।

- एटलस नेटवर्क में 500 से अधिक स्वतंत्र, मुक्त-बाजार थिंक टैंक और संगठन शामिल हैं जो यू.एस. और 100 से अधिक देशों में स्थित हैं।
- एटलस नेटवर्क स्वतंत्रता में विश्वास करने वाले संस्थानों और बौद्धिक उद्यमियों की पहचान करने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, क्षेत्रीय सम्मेलन और कई अन्य कार्यक्रम आयोजित करता है।
- यदि आप इसमें शामिल होना चाहते हैं, तो AtlasNetwork.org पर जाएं और हमारी विश्वव्यापी निर्देशिका, संसाधन पुस्तकालय, और अन्य ऑनलाइन टूल देखें।

स्टूडेंट्स फॉर लिबर्टी के बारे में

दुनिया भर के 1,369 समूहों के छात्र अपनी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए एक साथ आ रहे हैं। आज ही स्वतंत्रता के लिए छात्र आंदोलन में शामिल होकर अपना भविष्य सुधारें! अधिक जानने के लिए www.studentsforliberty.org पर जाएं।

सेंटर फॉर सिविल सोसाइटी के बारे में

सेंटर फॉर सिविल सोसाइटी लोकनीतियों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देता है । शिक्षा , आजीविका व नीति प्रशिक्षण के क्षेत्र में हमारे द्वारा किये जाने वाले कार्य सार्वजनिक व निजी क्षेत्र में विकल्प व जवाबदेही को प्रोत्साहित करते हैं । नीतियों को व्यवहार में लाने हेतु हम शोधकार्यो , पायलट प्रोजेक्ट्स व एडवोकेसी की सहायता से पॉलिसी लीडर्स और ओपिनियन लीडर्स को संबद्ध रखते हैं ।

हमारी परिकल्पना समाज के प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत आर्थिक और राजनैतिक जीवन में विकल्प उपलब्ध कराना व सभी संस्थाओं को जवाबदेह बनाना है ।

शोध । पहुंच । हिमायत

सभी के लिए शिक्षा : शिक्षा सुधार पहल
आजीविका के क्षेत्र की बाधाओं को दूर करनाः जीविका अभियान

नव विचारों से युक्त नए नेतृत्व का विकास करनाः सीसीएस एकेडमी
हिंदीभाषियों के लिए सर्वश्रेष्ठ उदारवादी विचारधारा प्रस्तुत करना : www.azadi.me आजादी.मी
सार्वजनिक शासन में बेगारी , धोखाधड़ी व दुरुपयोग को कम करना : गुड गवर्नेंस

“कठिन समस्याओं के स्पष्ट समाधानों की भारी कमी है। हमारे विश्वविद्यालयों द्वारा भी बहुत कम तादात में इनका उत्पादन किया जाता है, हालांकि इसके बारे में जिन लोगों ने भी लिखा उनमें सबसे स्पष्ट तौर पर लिखने वाले सर्वाधिक विवेकपूर्ण अर्थशास्त्री फ्रेडरिक बास्तियात के लेखों में ये प्रचूर मात्रा में उपलब्ध हैं। बास्तियात के लेखों को समझना जितना किसी नोबेल पुरस्कार विजेता के लिए आसान है उतना ही आसान एक टैक्सी ड्राइवर, छात्र और उद्यमशील व्यक्ति के लिए भी है.. यहां तक कि एक राजनेता के लिए भी इसे समझना आसान है! इस पुस्तक को पढ़ें और जीवन को परिवर्तित करने वाले अनुभवों के लिए तैयार हो जाएं।”

- टॉम जी. पॉमर, **रियलाइज़िंग फ्रीडमः लिबरटेरियन थियरी, हिस्ट्री एंड प्रैक्टिस** के लेखक

ATLAS NETWORK

Centre for CIVIL SOCIETY
SOCIAL CHANGE THROUGH PUBLIC POLICY

STUDENTS FOR LIBERTY
A FREER FUTURE